

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186134

UNIVERSAL
LIBRARY

राष्ट्रीय छात्र सेना शिक्षा

[थल-विभाग]

लेखक

आ० च० वर्मा एम० ए०, पी० जी० डी० पी० ई०,
साहित्यरत्न—सि० शास्त्री

प्रकाशक

मिनोचा ब्रादर्स

३८०, लाजपत मार्केट, दिल्ली ।

प्रकाशक :
मिनोचा ब्राह्मर्,
३८०, लाजपत मार्किट,
दिल्ली ।

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : तीन रुपया पचास पैसे

मुद्रक :
एशियाटिक प्रिन्सर्स,
दिल्ली-६ ।

स्वर्गीय पूज्य माता जी
की
स्मृति में

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार की ओर से भेंट

पूर्व कथन

पिछले पन्द्रह-सोलह वर्षों के अनुभव के आधार पर मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि राष्ट्रीय छात्र सेना (थल विभाग) के छात्र सैनिकों की आवश्यकता पूरी करने वाली कोई अच्छी पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। राष्ट्रीय छात्र सेना के पाठ्य क्रम में जो विषय हैं इनमें से प्रत्येक विषय पर पृथक पृथक हिन्दी व अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं परन्तु सामान्य छात्र इन पुस्तकों का अध्ययन कर अपने लिए उपयोगी सामग्री छांटने में कठिनाई पाता है। इन विषयों पर समय समय पर अनेक पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं, किन्तु वे सरलता से उपलब्ध नहीं होती।

छात्र सैनिकों के आग्रह पर ही मैंने राष्ट्र भाषा हिन्दी में राष्ट्रीय छात्र सेना (थल विभाग) पर यह पुस्तक लिखी है। पुस्तक में इस विषय की सारी सामग्री उपलब्ध है। यह पुस्तक बोलचाल की भाषा में लिखी गई है अतएव छात्र थल विभाग से सम्बन्धित विषयों का बिना कठिनाई के अध्ययन कर सकेंगे।

पुस्तक पांच खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में सेना सम्बन्धी सामान्य ज्ञान-दूसरे खण्ड में भारतीय सेना के छोटे हथियार—तीसरे खण्ड में—क्षेत्र कौशल (फील्ड एण्ड क्राफ्ट) चौथे अध्याय में ड्रिल एवं परेड तथा पाचवें अध्याय में सैनिक मान चित्र का अध्ययन के बारे में जानकारी दी गई है। पुस्तक के स्तर को ध्यान में रखते हुए यथा सम्भव अधिक से अधिक सामग्री उपलब्ध करने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक लिखने में मुझे सर्व श्री एन० एल० जेतली-गंगाचरण शर्मा-दयाचन्द्र-रामबाबू शर्मा, हरस्वरूप शर्मा, एन०एस०वर्मा, सुरेश शर्मा, वेदप्रकाश शर्मा, एस०के० भाटिया, हरिशंकरवत्स-एस०एन० शर्मा आदि एन०सी०सी० आफिसरों से जो अमूल्य परामर्श मिले एवं सामग्री उपलब्ध कराने में जो सहायता दी है मैं उन सबका आभारी हूँ।

अन्त में मैं श्री धीरेन्द्र कुमार अग्रवाल जी का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक लिखने की मुझे प्रेरणा दी है एवं समय समय पर वे अमूल्य परामर्श देते रहे हैं। अन्त में कलाकार श्रीचरनसिंह व श्रीचतरसिंह का भी आभारी हूँ, जिन्होंने चित्रों द्वारा पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाया है।

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड

सामान्य सर्विस ज्ञान

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय—स्थल सेना का इतिहास

१-१०

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी, प्रथम स्वतन्त्रतासंग्राम—ब्रिटिश सम्राट—लार्ड किचनर के सुधार स्टाफ कालिज—प्रथम विश्व युद्ध—प्रथम विश्वयुद्धोपरान्त—भारतीय अधिकारी—आठ यूनिट योजना—नेहरू रिपोर्ट—द्वितीय विश्वयुद्ध—आजाद हिन्द सेना—स्वतन्त्रता, गणतन्त्र भारत—काश्मीर युद्ध १९४७—चीनी आक्रमण १९६२—पाकिस्तानी आक्रमण १९६५

दूसरा अध्याय—राष्ट्रीय छात्र सेना का इतिहास

११-१५

जन्म—डिवीजन—उद्देश्य—जूनियर डिवीजन में छात्र सैनिक की भरती की शर्तें—शारीरिक स्तर-मेडीकल परीक्षा—आँखों का स्तर प्रशिक्षण शिविर—परीक्षा-जूनियर डिवीजन आफिसर—राष्ट्रीय छात्र सेना कमान का गठन—मुख्यालय

तीसरा अध्याय—सेना और उनके कर्तव्य

१६-२२

स्थल सेना—स्थल सेना के कर्तव्य—नौ सेना—नौ सेना का कर्तव्य, वायु सेना, वायु सेना के कर्तव्य—सितम्बर १९६५ में पाक से संघर्ष

चौथा अध्याय—नागरिकता

२३-२६

अच्छे नागरिक के गुण—कर्तव्य—अधिकार

पाँचवाँ अध्याय—पदाधिकारी एवं बँज

२७-३१

स्थल सेना—जूनियर कमीशण्ड आफिसर—कमीशण्ड आफिसर—जल सेना—नान कमीशण्ड आफिसर—कमीशण्ड आफिसर—वायु सेना नानकमीशण्ड आफिसर अच्छे नेता के गुण,

छठा अध्याय—अनुशासन एवं अभिवादन

३२-३४

अनुशासन—अभिवादन (सैल्यूट)—बाजू से सैल्यूट—जलयान द्वारा सैल्यूट हवाई—जहाज द्वारा—सैल्यूट कब करना चाहिए

सातवां अध्याय—भारतीय स्थल सेना का संगठन एवं प्रशासन

३५-३६

स्थैतिक विरचना—फील्ड फोरमेशन—इन्फैन्ट्री बटालियन का गठन

दूसरा खण्ड

भारतीय सेना के छोटे हथियार

३६-५६

पहला अध्याय—छोटे हथियार

पिस्तौल - रिवालवर - रायफल—७.६२ एम० एम० स्वचालित राइफल—३०३ एस० एम० एल० ई० राइफल—शिकारी बन्दूक मस्केट—कारबाइन—मशीन गन—हल्की मशीनगन—हल्की मशीन गन दोष—मध्यम मशीन गन—भारी मशीनगन—मार्टर—मार्टरों की विशेषताएँ पैदल सेना के टैंक मार शस्त्र—रिकायल लेस राइफल... राकेट लांचर (बजूका)—टैंक मार हथ गोले—७३ मी०मी० स्ट्रीम ग्रनेड—३८ इनरजक हथ गोला—विमान भेदी तोप—प्रक्षेपणास्त्र (मिसाइल)

तीसरा खण्ड

पहला अध्याय—

क्षेत्र कौशल (फील्ड क्राफ्ट)

६०-६२

क्षेत्र कौशल—उद्देश्य—क्षेत्र कौशल अधिकारी या सैनिक के गुण—फील्ड क्राफ्ट सर्व व्यापी है—फील्ड क्राफ्ट स्वाभाविक सामूहिक है—मुख्यतया आक्रमणात्मक—प्रयवेक्षण शक्ति तथा तीव्र गति

दूसरा अध्याय—तलस्थल (ग्राउंड)

६३-६६

टूटी भूमि—समतल खुली भूमि—ऊंची भूमि—दबी भूमि—अगली ढलान—उलटी ढलान

तीसरा अध्याय—दूरी आंकना

६७-६९

माप—इकाई प्रणाली—निश्चित परास प्रणाली—आभास प्रणाली बधनी प्रणाली—अर्द्धन प्रणाली—औसत प्रणाली

चौथा अध्याय—छिपाना (कन्सीलमेन्ट)

६९-७१

आवरण—तरंगणतह तल स्थल—गड्ढे ढलान आदि—बाड़ एवं झाड़ियाँ—खड़ी फसलें—वाग और लकड़ियाँ—भौपडी और भवन कच्ची पक्की दिवार—पृष्ठ भूमि—एयर क्राफ्ट दीप्तिमान—क्षितिज रेखा—जल प्रति बिम्ब—जुनुर मुर्ग चाल—अवलोकन मन्द होना—हिमी करण

पांचवा अध्याय—छद्मावरण	७२-७३
छद्मविधि नियम—फायर स्थिति—फायर स्थिति के गुण	
छठा अध्याय—प्रेक्षण (ओब्जरवेशन)	७४-७६
प्रेक्षण चौकी का चुनाव—प्रेक्षण चौकी पर ध्यान रखने योग्य बातें	
—प्रेक्षण टीम द्वारा रात्री अवलोकन	

चौथा खण्ड

पहला अध्याय—डिल	७७-८५
डिल—उद्देश्य—सावधान—आदेश—पालन—त्रुटियां विश्राम— दाहिने मुड़ना—बाएं मुड़ना—पीछे मुड़ना—थमना—स्वस्थान विसर्जन—लाइन बन—दाहिने सजना—खुली लाइन या निकट लाइन चलना—दाहिने बाएं देख—दाहिने बाएं घूम—लाइन तोड़ —सैल्यूट—दाहिने या बाएं सैल्यूट—तेज चाल में मुड़ना—चलते- चलते सामने सैल्यूट—माचिंग में कदम की रफ्तार—कदम की लम्बाई	
दूसरा अध्याय—डिल शिक्षण शब्दावली—माचं पास्ट की रचना	८६-९०

पांचवा खण्ड

पहला अध्याय—सैनिक मान चित्र का अध्ययन	९१-९५
सैनिक मान चित्र क्या है? महत्वपूर्ण सर्वेक्षण चित्र—उपयोगिता —ग्रिड प्रणाली—मान चित्र निर्देशन	
दूसरा अध्याय—परिभाषाएँ	९६-९९
तीसरा अध्याय—सांकेतिक चिन्ह	१००-११४
चौथा अध्याय—धरातल के आकारों का मान चित्र पर प्रदर्शन	११५-११६
समोच्च रेखाएँ—टलाव—नतोदर ढाल—चट्टानी ढाल—मीढ़ीदार ढाल हैशयोरिंग—खंडित रेखा—पर्वतीय छाया चित्रण—रगोद्वारा स्थानीय ऊँचाई	
पाचवाँ अध्याय—दिशाओं का ज्ञान	११७-१२३
दिशा ज्ञान के साधन—कम्पास—घड़ी और सूर्य—तारें—मार्ग शीर्षा—मान चित्र—उत्तर दिशा—वास्तविक उत्तर—ग्रिड उत्तर —चुम्बकीय उत्तर दिक्मान (बियरिंग)—सामने का दिक्मान— सैनिक प्रोट्रेक्टर—पैरिस मैटिक कम्पास—मानचित्र दिशानुकूल करना —मानचित्र पर अपनी स्थिति ज्ञात करना—कम्पास से और कम्पास बिना	

छठा अध्याय—हवाई हमले से रक्षा

१२४-१२८

प्रत्येक नागरिक के ध्यान रखने योग्य बातें—हमले की चेतावनी पर
—इमारत के पास हों—हवाई हमले में बचाव कार्य—जो कार्य
न करें—आग लगने पर क्या किया जाय—आग लगाने वाले बमों
से बचाव—बम से निपटने के उपाय—बिना फटे बम—हमले के
पश्चात् ।

खण्ड १

स्थल सैना का इतिहास

विकास का नियम है कि जीव स्वयं को वाह्य पर्यावरण के अनुकूल ढालने में समर्थ हो जाते हैं, वही जीवित रहते हैं ! यही नियम सैन्य संगठन का भी है। क्योंकि सैन्य संगठन एक जीव समूह है। अतएव सेनाओं को सभ्यता के परिवर्तित रूप के समान ही विकसित होना चाहिए, नहीं तो वे युद्ध के लिए इसी भाँति विफल हो जायगी जैसे हिन्दू राजाओं की सेनाएं मुगलों की तोपों के सामने थी। सेनाएँ एवं उनकी शस्त्र प्रणाली का आधुनिकता के साथ विकास परमावश्यक है। प्राचीनकाल में अशोक महान, चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त आदि के शासन काल में उच्च कोटि का सैन्य संगठन मिलता है।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी :— ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपने व्यापार की रक्षार्थ भारतीय सेना का आधुनिक गठन किया। बंगाल, मद्रास, बम्बई की प्रेसीडेन्सियों की रक्षार्थ तीन क्षेत्रों में सैन्य गठन का कार्य हुआ। समान उद्देश्य के होते हुए भी तीनों क्षेत्रों की सेनाओं में अन्तर था। सन् १७४८ में प्रथम बार तीनों क्षेत्रों की सेनाओं को एक सेनाध्यक्ष मेजर स्टींगर लारेस के नियन्त्रण में किया गया। प्रारम्भ में ईस्ट इंडिया कम्पनी अपनी सेना के निमित्त पोशाक एवं हथियारों आदि का प्रबन्ध नहीं करती थी अतः सैनिकों को स्वयं ही प्रबन्ध करना होता था। एवं इनकी कमान भी भारतीय सैन्य अधिकारियों के हाथ में होती थी। सन् १७५४ में प्रथम बार इंग्लैंड से राजकीय सैनिक बम्बई में आए, तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भारतीय सेना तीन अंगों में विभाजित हो गई :—

- १— राजकीय सैनिक
- २— कम्पनी के यूरोपीय सैनिक
- ३— कम्पनी के भारतीय सैनिक

उपरोक्त व्यवस्था एक शताब्दी तक चलती रही। सन् १७५७ में प्लासी युद्ध से पूर्व क्लाइव ने सेना का पुनर्गठन किया तथा पोशाक आदि यूरोपीय सैनिकों की भाँति कर दी।

अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में रेजीमेन्ट प्रणाली को प्रारम्भ किया गया। प्रत्येक रेजीमेन्ट में दो बटालियन होती थी, किन्तु इस प्रणाली से कार्य सुचारु रूप से न चल सका अतः इसे समाप्त करना पड़ा। सन् १८२४ में पुनः इस प्रणाली

को एक बटालियन रेजीमेन्ट में परिवर्तित किया गया। तब भी एक दुर्गुण स्थायी रहा, जिसमें ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों की ही उच्च पदोन्नति की जाती थी। सन् १८२४ के लगभग स्थानीय शासकों के नियन्त्रण में अनियमित रिसाला अस्तित्व में आया। शनैः शनैः स्थानीय जनता के हेतु कम्पनियाँ स्थापित की गईं जिसके परिणाम स्वरूप हैदराबाद कन्टीजेंट एवं पंजाब फ्रन्टीयर फोर्स अस्तित्व में आईं। स्थानीय सैनिकों ने अपूर्व वीरता दिखाई तथा इनका गठन राजकीय सैनिकों के ढंग पर किया गया ! भारतीय सैनिकों एवं यूरोपीय सैनिकों तथा सैन्य अधिकारियों के वेतन मान में अत्याधिक अन्तर रखा गया। सैनिकों की कुल सख्या ३१५५२० थी एवं व्यय ६८६२२३५ पाँड था जिसमें यूरोपीय सैनिकों की कुल सख्या ५१३१६ पर ही ५६६८११० पौ० व्यय किए जाते थे।

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम :—अंग्रेजों की इस भेद भाव पूर्ण नीति के परिणाम स्वरूप सैनिकों में उत्तेजना, धार्मिक एवं समाजिक नीतियों के प्रति भारतीय जनता में विद्रोह की ज्वाला प्रवृज्जलित हो रही थी ! भारत के स्वतन्त्रता प्रेमियों में राष्ट्र को पराधीनता से मुक्त करने की लालसा थी, जिनमें भाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या-टोपे, नाना साहब आदि प्रमुख थे जिन्होंने सैनिकों से सम्पर्क स्थापित किया। भारत में सन १८५७ में एक भयंकर क्रान्ति आई। जिसमें अंग्रेजों को जान माल की अत्याधिक क्षति पहुँची। किन्तु अंग्रेजों की फूट डालो राज्य करो, की नीति की सफलता के कारण स्वतन्त्रता की प्रथम क्रान्ति असफल हुई एवं अंग्रेजों ने असफलता पर जो दमन चक्र चलाया उसे पढ़कर ही रोगटे खड़े हो जाते हैं। इस क्रान्ति के कारण ही अंग्रेजों की अखि खुल गई एवं सैन्य संगठन आदि में बहुत से परिवर्तन किए गए !

ब्रिटिश सम्राट :—प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कारण भारतीय इतिहास में परिवर्तन आया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त कर भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना दिया। परिवर्तन का तत्काल प्रभाव यह हुआ कि राजकीय सैनिकों एवं कम्पनी के यूरोपीय सैनिकों के मध्य शताब्दी पुराने अन्तर की समाप्ति हुई। सन १८६१ में भारतीय सैनिकों का पुनर्गठन किया गया, जिसमें कुछ यूनिटों को साथ मिलाकर भारतीय तोपखाने को समाप्त कर दिया गया। ब्रिटिश अधिकारियों की संख्या में कमी कर तीन प्रेसीडेन्सी स्टाफ कोरपस अस्तित्व में आई। सन १८८० में प्रेसीडेन्सी सैनिकों की समाप्ति की सिफारिश की गई। सन १८८६ में पैदल बटालियन अस्तित्व में आई एवं इनके स्थायी रेजीमेन्टल केन्द्र स्थापित किए गए। सन १८९५ में प्रेसीडेन्सी सैनिकों की समाप्ति की गई।

लार्ड किचनर के सुधार :—सन १९०२ में लार्ड किचनर सेनाध्यक्ष बने उन्होंने अनुभव किया कि भारतीय सैनिकों को प्रशासन एवं बिना किसी सुरक्षा योजना के

पूरे देश में विभाजित किया हुआ है। सन १९०३ में इण्डियन स्टाफ़ कोरपस को समाप्त किया, इस कोरपस से सम्बन्धित अधिकारियों को भारतीय सैन्य अधिकारी के नाम से पुकारा जाने लगा। इसी वर्ष मद्रास कमान को ब्रह्मा की रक्षा के उत्तरदायित्व से मुक्त किया गया तथा ब्रह्मा कमान, अस्तित्व में आई। हैदरबाद कन्टीजेंट को समाप्त कर उसके रिसालों को बम्बई कमान के साथ मिला दिया गया तथा पैदल यूनिटों को मद्रास कमान के नियन्त्रण में किया गया।

स्टाफ़ कालिज :— भारतीय सेना में अन्य सुधारों के साथ ही लाई किन्चनर ने अधिकारियों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए, सन १९०५ में देवलाली में स्टाफ़ कालिज की स्थापना की तथा सन १९०७ में इस कालिज को क्वेटा में स्थानान्तर कर दिया। उस समय भारतीय सेना के मुख्यतः दो कार्य थे।

१—देश में शान्ति तथा सीमाओं की सुरक्षा करना।

२—आवश्यकतानुसार सीमा के बाह्य क्षेत्रों में जाना।

प्रथम विश्व युद्ध :—प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ होने पर भारतीय सैनिकों को फ्रान्स, बेलजियम, गैलीपोली, सलोनिका, फिलस्तीन, मिश्र, सूडान, मेसोपोटामिया, अदन, सोमालीलैंड आदि अनेकों मोर्चों पर भेजा गया। भारतीय सैनिकों ने प्रत्येक मोर्चे पर अपूर्व वीरता दिखाई, जिसमें विक्टोरिया क्रॉस के अतिरिक्त १२९०० वीरता पदक प्राप्त किए। इस युद्ध ने ब्रिटिश सरकार को भारतीय सैनिकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए विवश कर दिया तथा सन् १९१७ में इण्डियन म्युनिशन-बोर्ड सर थोम्स होलैण्ड की अध्यक्षता में स्थापित किया गया। इस बोर्ड को निम्न उत्तरदायित्व सौंपा गया।

१—अमरीका एवं इंग्लैंड से आवश्यकतानुसार सामान का आयात कर, उसका नियन्त्रण करना।

२—शस्त्रास्त्रों को भारी संख्या में मध्य पूर्व, पूर्वी अफ्रीका, एवं भारत सरकार को भेजना।

३—ओद्योगिक क्षेत्र का विकास करना।

प्रथम विश्व युद्धोपरान्त :—शान्ति स्थापित होने पर सन १९१८ में भारतीय सैनिक कल्याण बोर्ड सर जार्ज लॉड्स की अध्यक्षता में बनाया गया। युद्ध में काम आए सैनिकों की स्मृति में दिल्ली में साम्राज्य स्मारक (इंडिया गेट) बनाया गया जिस पर युद्ध में काम आए सैनिकों के नाम लिखे गए, इसकी आधार शिला ड्यूक आफ कनाट ने रखी थी! सन १९१९ में ईशर की अध्यक्षता में भारतीय सैन्य समिति बनाई गई, जिसका कार्य सेना में सुधार हेतु परामर्श देना था। इस समिति ने निम्न परामर्श दिए।

१—कमान प्रणाली में सुधार एवं ट्रुपो का उचित वितरण !

२—लड़ाकू सैन्य एवं सहायक सैन्य में उचित सन्तुलन ।

३—शान्ति काल में प्रशिक्षण का उचित प्रबन्ध, जिसको युद्धकाल में विकसित किया जा सके !

४—यूरोपीय पद्धति पर सेना का आधुनिक विकास, ईशर समीति की सिफारिशों के कारण ही भारतीय अधिकारियों एवं सैनिकों के वेतन, पेन्शन, वस्त्रादि में सुधार हुआ !

भारतीय अधिकारी—प्रथम विश्वयुद्धोपरान्त भारतीयों को किंग कमीशन सर्विस में भर्ती करने के लिए दबाव डाला गया । ले० ज० सर जार्ज मैचम्यून, माटेग्यू चैम्स-फार्ड, सर के० जी० गुप्ता, सर पी० एस० शिवस्वामी ने अति उत्साहवर्धक कार्य किया, एवं अन्ततः भारतीयों के लिए सैंड हर्स्ट ट्रेनिंग सेन्टर में दस स्थान सुरक्षित किए गए । १३ मार्च सन् १९२२ में देहरादून में प्रिंसआफ वेल्स, रायल इंडियन मिलीटरी कालिज (वर्तमान सैनिक एकाडेमी) का प्रिंस आफ वेल्स ने उद्घाटन किया ! भारतीयों के निमित्त किंग कमीशन एवं वाइसराय कमीशन का प्रबन्ध किया गया !

आठ यूनिट योजना—सेनाध्यक्ष लार्ड रोलिनसन ने फरवरी १९२३ में लेजिस्लेटिव एसम्बली में प्रसिद्ध आठ यूनिट योजना की घोषणा की । इस योजना के अन्तर्गत आठ यूनिटों का पूर्ण नियन्त्रण किंग कमीशन प्राप्त भारतीय सैन्य अधिकारियों को सौंपा जाना था, यह योजना सन् १९४६ तक पूर्ण हुई !

मेजर जनरल सर एनड्रूस्कीन की अध्यक्षता में सन् १९२५ में भारतीय सन्ड-स्टैंड समीति की स्थापना की गई । जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीयों को किंग कमीशन में भर्ती हेतु प्रोत्साहन देना था । इस समीति की सिफारिश पर बूलविच, और कारनैल, प्रशिक्षण केन्द्र में भर्ती की सुविधा भारतीयों को दी गई । यद्यपि सैना में अधिकांश कारियों की भारतीयकरण की योजना मन्द गति से चली, सन् १९२९ तक किंग कमीशन प्राप्त केवल ९२ ही भारतीय अधिकारी थे !

नेहरू रिपोर्ट—सन् १९२८ में सर्वदलीय सम्मेलन में एक समीति बनी जिसने भारत के स्वशासन को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय सेना के सुधार एवं विकास की मांग की किन्तु ब्रिटिश सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया ! सन् १९३१ के गोल मेज सम्मेलन में महात्मा गांधी, सर तेजबहादुर सप्रू, एवं पंडित मदन मोहन मालवीय ने उपरोक्त मांग पर सशक्त तर्क प्रस्तुत किए किन्तु सन् १९३३ तक इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया गया, अन्ततः युद्ध कार्यालय ने भारत की बाह्य आक्रमण से सुरक्षा के निमित्त इसको स्वीकार कर लिया । सन् १९३६ में

मेजर सी० जे० अच्यूनलेक की अध्यक्षता में समीति ने घोषणा की कि शस्त्र सज्जा की आधुनिक दौड़ में भारतीय सेनाएं मिश्र, ईराक, अफगानिस्तान, जैसे छोटे देशों की सेनाओं से काफी पीछे है। सन् १९३६ में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सेनाओं को आधुनिक शस्त्रों से सज्जित करने की तैयारी की एवं तीव्र गति से भारतीय सेनाओं का विकास हुआ। विकास अभियान क्षेत्र में वायु सेना एवं जल सेना भी आई।

द्वितीय विश्व युद्ध:—द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने पर भारतीय सेनाओं को आधुनिक युद्ध कौशल से संघर्ष करना था। इस ओर ब्रिटिश सरकार ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया था। भारतीय सेना की कुल संख्या १७७००० थी, तोपखाना, वरुतर बन्द रेजीमेन्ट नाम मात्र को थी। इन परिस्थितियों में भारतीय सेना का तीव्र गति से विकास हुआ। लाखों की संख्या में सैनिक पश्चिम एवं पूर्व में युद्ध के मोर्चों पर सन् १९३६—४१ में भेजे गए। अब तक सेनाओं में लड़ाकू जातियों से ही जवान भर्ती किए जाते थे, किन्तु युद्ध के परिणाम स्वरूप अन्य जातियों को भी सेना में भर्ती की छूट दे दी गई। युद्ध की आवश्यकता ने भारतीय सैन्य अधिकारियों को शीघ्र पदोन्नति का अवसर प्रदान किया।

इस युद्ध में भारतीय सैनिक अफ्रीका, एबीसीनिया, अराकान-ब्रह्मा, ग्रीस, हाग-कांग, ईराक, इटली, जावा, मलाया, सुमालीलैंड, सीरिया आदि मोर्चों पर भेजे गए। भारतीय सैनिकों ने अपनी वीरता की छाप विश्व के हृदय पर अंकित कर दी।

युद्ध ने भारतीय सेना के विकास में अत्याधिक सहयोग दिया! छाताधारी सैनिक, भारतीय पर्यवेक्षण दल, सेन्य चिकित्सक दल, मिलीटरी नर्सिंग सर्विस, इलेक्ट्रीकल एवं मकैनिकल इंजीनियर आदि नई युनिटें अस्तित्व में आईं। इसीमध्य बहुत से वर्कशाप एवं केन्द्र विकास हेतु स्थापित किए गए !

आजाद हिन्द सेना:—युद्ध के समय जापानियों द्वारा बहुत से भारतीय सैनिक गिरफ्तार कर लिए गए थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में इन सैनिकों की “आजाद हिन्द सेना” गठित की गई। नव गठित सेना ने ब्रह्मा, अराकान, कोहिमा में भारत की स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से डटकर टक्कर ली एवं अराकान में भारतीय तिरंगा ध्वज फहराया। किन्तु अंग्रेजों ने युद्ध समाप्ति से पूर्व भारतीय जनता को आजाद हिंद फौज की जानकारी से अनभिज्ञ रखा। सन् १९४६ में लाल किले में चलाए गए मुकदमे से सारा भेद जनता के सामने आया। श्री भोला भाई देसाई एवं पं० जवाहर लाल नेहरू ने आजाद हिन्द सेना की ओर से पैरवी की तथा आजाद हिन्द सेना के जवान देशभक्त एवं राष्ट्रीयस्वतन्त्रता के सैनिक माने गए। इसी समय जल सेना ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल ने उनका पथप्रदर्शन किया !

स्वतन्त्रता:— १५ अगस्त सन १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। भारत का तिरंगा ध्वज फहराया गया किन्तु साथ-ही-साथ अंग्रेज अपनी कूटनीति में सफल हुए। स्वतन्त्रता के साथ विभाजन, पाकिस्तान निर्माण अभिशाप रूप में मिला। भारतीय सेनाओं का बंटवारा भी किया, अनेक वर्षों से कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ने वाले सैनिक एवं सैन्य अधिकारी अकस्मात् पृथक देश से सम्बन्धित हो गए। विभाजन के समय भारतीय सेनाओं का निम्न प्रकार बंटवारा किया गया।

	भारत	पाकिस्तान
१. इन्फेन्ट्री रेजीमेन्ट	१५	८
२. बख्तर बन्द डिवीजन	१२	६
३. तोपखाना रेजीमेन्ट	१८.५	८.५
४. लड़ाकू स्क्वाड्रन (वायु)	७	२
५. जल सेना		
१. सलूप (एक मस्तूल का जहाज)	४	२
२. माइन स्वीपर	१२	४
३. कारवीटस	१	०

स्वतन्त्रता के साथ ही सेना में आवश्यक परिवर्तन किए गए।

१. भारतीय सेना को सुरक्षा सेना का नाम दिया गया।

२. वाइसराय कमीशन अधिकारियों को जूनियर कमीशन अधिकारी का नाम दिया गया।

३. स्थल सेना, जल सेना, वायुसेना के पृथक-पृथक सेनाध्यक्ष बनाए गए। कमांडर-इन-चीफ के पद में परिवर्तन कर दिया गया और उसके स्थान पर।

(अ) स्थल सेनाध्यक्ष

(ब) जल सेनाध्यक्ष

(स) वायु सेनाध्यक्ष, अस्तित्व में आ गए।

४. भारतीय लड़ाकू सेनाओं में भर्ती का द्वार प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए खोल दिया गया।

५. रियासतों की सेनाओं को समाप्त कर भारतीय सेनाओं में मिला दिया गया।

भारत सरकार सेनाओं को आधुनिक शस्त्रों, ट्रेनिंग आदि स विश्व की सर्वश्रेष्ठ सेना बनाने में प्रयत्नशील है।

गणतन्त्र भारत :—२६ जनवरी १९५० को भारत गणतन्त्र घोषित हुआ। भारत के इतिहास में राजनैतिक परिवर्तन के साथ-साथ सुरक्षा सेनाओं में भी निम्न परिवर्तन आए।

१—यूनिटों से सम्बन्धित “रायल एवं हिज मेजरस्टी” शब्दों को हटा दिया गया।

२— सभी युनिटों के “किंग कलर” को सम्मान के साथ मिलीटरी कालिज देहरादून में जमा कर दिया गया।

३— क्रैट, ध्वज एवं बैजों में आवश्यकीय परिवर्तन किए गए। ब्रिटिश क्राउन के स्थान पर तीन शेर भारतीय चिन्ह प्रतीक रखा गया।

४ - १ फरवरी १९५० से भारतीय सेनाओं का क्रम भारतीय सैन्य प्रादुर्भाव के अनुसार स्थल सेना—जल सेना—वायु सेना रखा गया।

काश्मीर युद्ध १९४७—स्वतन्त्रता के साथ ही भारत की सुरक्षा सेनाओं का उत्तर दायित्व बढ़ गया एवं प्रथम परीक्षा में ही भारतीय सेना ने उत्तर दायित्व को अपनी कीर्ति के अनुसार ही निभाया। पाकिस्तानी सेना कबालियों के भेप में काश्मीर में घुस आई थी। आदेश मिलने पर क्षण भर में भारत की सुरक्षा सेनाओं ने जो कार्य किया उसने असम्भव को सम्भव बना दिया। कबाली एवं पाकिस्तानी सेना को घाटी एवं जंगलों में वह मार लगाई कि इन्होंने भागते हुए पीछे मुंह करके भी नहीं देखा। स्थल सेना एवं वायु सेना का तालमेल अपूर्व था।

चीनी आक्रमण १९६२—सन् १९६२ में चीनियों ने अकस्मात् भारत पर आक्रमण कर दिया। लद्दाख एवं नेफा में जहाँ पर पर्वतों की चोटिया बर्फ से १२ मास ढकी रहती है। यातायात के साधनों का अभाव था वहाँ पर भारत की सुरक्षा सेनाएं शत्रु को रोकने में सफल हुईं। अनेक सैनिकों एवं सैन्य अधिकारियों को पराक्रम स्वरूप पुरस्कार में महावीर चक्र-वीरचक्र प्रदान किए गए। इस आक्रमण ने भारत सरकार एवं जनता की आखे खोल दी और सुरक्षा सेनाओं का योजनावद्ध विकास किया गया।

पाकिस्तानी आक्रमण १९६५—पाकिस्तान को अमरीका ब्रिटेन ने अत्याधिक आधुनिक सैन्य सामग्री दी जिससे पाकिस्तान पर नशा छा गया। चीन के साथ साठ-गांठ कर पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तान का नशा भारतीय सैनिकों की पहली मुठभेड़ में ही उतर गया। भारत का बच्चा बच्चा सेना के साथ उठ खड़ा हुआ। युद्ध के प्रथम सप्ताह में ही भारत की सेनाओं ने कारगिल, हाजीपीर, स्यालकोट बर्की, कसूर क्षेत्र, गदरा आदि महत्वपूर्ण स्थानों पर आधिपत्य जमा लिया।

पाकिस्तान का बख्तरबन्द डिवीजन समाप्त कर दिया गया, पैटनटैकों को तोड़ने का एक दिन का विश्व रिकार्ड स्थापित किया, भारतीय सेनाओं की यह महत्वपूर्ण सफलता वायु सेना के संरक्षण के कारण सम्भव हो सकी। भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान की चुनौती को स्वीकार किया एवं भारत में बने लड़ाकू नैट ने अमरीकी सैबर जैटों को धाराशायी कर दिया। पाकिस्तानी वायु सेना इतनी भयभीत हो गई कि उसमें दिन के समय उड़ान भरने की हिम्मत ही नहीं रही। भारतीय वायु सेना ने निर्भय होकर पाकिस्तान के प्रत्येक हवाई अड्डों पर अचूक आक्रमण किए। भारत का प्रत्येक सैनिक, असैनिक आदमी अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हो गया। जलसेना को इस युद्ध में भी अपना पराक्रम दिखाने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। अनेक सैनिकों सैन्य अधिकारियों को परम वीर चक्र, महावीर चक्र, एवं बीर चक्र प्रदान किए गए। यह शौर्य सैनिकों के अनुशासन एवं ट्रेनिंग पर ही निर्भर करता है।

राष्ट्रीय छात्र सेना का इतिहास

किसी भी देश का भविष्य उसके नवयुवकों व नव-युवतियों पर निर्भर करता है। चरित्रवान, अनुशासन प्रिय और कर्तव्य के प्रति जागरूक युवक देश का बल होते हैं। युवकों में नेतृत्व की क्षमता, अनुशासन तथा देश की रक्षा के कार्यों में, अभिरुचि पैदा करने के लिए राष्ट्रीय छात्र सेना का गठन किया गया।

भारत सरकार ने जुलाई १९४६ में पं० हृदयनाथ कुंजरु की अध्यक्षता में राष्ट्रीय छात्र सेना समिति का निर्माण किया। इस समिति के सदस्यों ने भारतीय विश्वविद्यालयों एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तथा विदेशों का दौरा करके जुलाई १९४७ में भारत सरकार को एक रिपोर्ट दी। सन् १९४८ में लोक सभा ने राष्ट्रीय छात्र सेना विधेयक पारित कर दिया।

इस विधेयक के अनुसार राष्ट्रीय छात्र सेना स्थापित हुई। इसमें निम्नलिखित तीन डिवीजन स्थापित किए गए।

१. सीनियर डिवीजन :— इसमें विश्वविद्यालयों एवं कालिजों के छात्र भर्ती हो सकते हैं !

२. जूनियर डिवीजन :— इसमें स्कूल-छात्र भर्ती किये जाते हैं।

३. बालिका डिवीजन :— इसमें विश्व विद्यालयों, कालिजों एवं स्कूलों की छात्राएं भर्ती की जाती हैं।

आरम्भ में राष्ट्रीय छात्र सेना का स्थल विभाग ही गठित किया गया था। परन्तु १९५० में वायु विभाग भी बना दिया गया। इसमें भी उपरोक्त डिवीजन बनाये गये। इसके पश्चात् नौ सेना विभाग भी गठित कर दिया गया।

राष्ट्रीय छात्र सेना का उद्देश्य :—

१. युवकों व युवतियों के चरित्र का विकास करना तथा उनमें भ्रातृत्व भावना एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना।

२. सेना के तीनों—स्थल, वायु, नौ,—अंगों के लिए युवकों युवतियों में अभिरुचि पैदा करना तथा प्रशिक्षित करना।

३. राष्ट्रीय सकट के समय उपयोग के लिए सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों का रक्षित दल (रिजर्व्ड फोर्स) तैयार करना।

राष्ट्रीय छात्र सेना के जूनियर तथा सीनियर दोनों ही डिविजनों में तीनों शाखाओं में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है।

स्थल सेना :— शाखा में—

१. आर्मर्ड
२. सिगनल
३. बैटरी
४. इंजीनियरिंग
५. मेडीकल इत्यादि उपशाखाये हैं।

वायु सेना :— शाखा में

१. एयरोमाइंडिंग
२. एयरो ई जन
३. उड़ान के सिद्धान्त
४. वायुयान की पहचान
५. ग्लाइडिंग
६. सेना विषयक सामान्य ज्ञान की शिक्षा दी जाती है।

नौ सेना :— शाखा में नौका माडल, इंजन आदि के बारे में शिक्षा दी जाती है।

जूनियर डिविजन में छात्र सैनिक की भरती की शर्तें .—

१. छात्र चरित्रवान व सदाचारी होना चाहिए।
२. उसे भारतीय नागरिक होना चाहिए।
३. उसकी आयु १३ वर्ष से कम और १८ १/२ वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।
४. विद्यालय के उपस्थिति रजिस्टर पर उसका नाम होना चाहिए।
५. किसी अपराध के दण्ड स्वरूप उसने कैद न भुगती हो।
६. भारत सरकार के रक्षा विभाग द्वारा निर्धारित शारीरिक स्तर पूरा करना चाहिए।

जूनियर डिविजन छात्र सैनिकों के लिए निर्धारित शारीरिक स्तर :—

१. ऊँचाई कम से कम ५१ इंच एवं सीनियर डिविजन में ६० इंच होनी आवश्यक है।

२. छाती २७ इंच व फुलाने पर २६ इंच सीनियर डिबिजन में २६ इंच व फुलाने पर ३१ इंच होनी चाहिए।

मेडीकल परीक्षा में निम्नलिखित बातों की जांच की जाती है :—

१. सुनाई ठीक प्रकार से देता हो।
२. बोलने में किसी प्रकार की रुकावट अथवा तोतलापन न हो।
३. दांत ठीक प्रकार से क्रम में हों।
७. छाती की बनावट ठीक हो तथा फेफड़े एव हृदय मजबूत हो।
५. शरीर के अंग सुडौल तथा विकास शील हों।
६. शरीर के जोड़ ठीक प्रकार हरकत करते हों।
७. पैरों की बनावट ठीक प्रकार की हो।
८. किसी प्रकार का चर्म रोग न हो।
९. शरीर की बनावट कुरूप न हो।
१०. शरीर सभी प्रकार के आन्तरिक व बाह्य रोगों से मुक्त हो।
११. शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ हो।

आंखों का स्तर :—

१. चश्मे की सहायता के बिना प्रत्येक आंख की देखने की शक्ति ६/६ से कम न हो, एवं चश्मे की सहायता से ६/९ एवं दूसरी आंख ६/१८ से कम न हो।

२. प्रत्येक आंख की परीक्षा होगी एवं साधारणतया दिन के प्रकाश में आवश्यकीय स्तर परीक्षा को पढ़ना आवश्यक है।

३. मुख्य रंगों के अन्तर पहचानने में अग्रमर्थ होने पर उमे निकाला नहीं जायगा अपितु उसके आवेदन-पत्र में लिख दिया जायगा।

४ आंखों की वास्तविक देखने की शक्ति को आवेदन-पत्र में लिख दिया जायगा।

प्रशिक्षण :— सीनियर डिबिजन में कालेज के चुनीदा छात्र भर्ती किए जाते हैं उसमें तीन वर्ष का कोर्स होता है। दूसरे वर्ष के बाद परीक्षा पास करने पर “बी” सर्टीफिकेट दिया जाता है। तीसरे वर्ष की परीक्षा पास करने पर “सी” सर्टीफिकेट दिया जाता है। प्रति वर्ष दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण शिविर लगता है।

जूनियर डिवीजन में स्कूल छात्र भर्ती किए जाते हैं। इन छात्र सैनिकों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम दो वर्ष का होता है। प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर छात्र सैनिक को प्रमाण-पत्र “अ” भाग १ दिया जाता है। दूसरे वर्ष की परीक्षा पास करने पर प्रमाण-पत्र “अ” भाग २ दिया जाता है। इस प्रकार छात्र जूनियर डिवीजन में “अ” प्रमाण प्राप्त करता है। कालिज में आकर छात्र सैनिक को “बी”, “सी” प्रमाण पत्र प्राप्त होते हैं।

प्रशिक्षण शिविर :—जूनियर डिवीजन के छात्र सैनिकों को वर्ष में एक बार दस दिन के शिविर में भाग लेना होता है। इन शिविरों की व्यवस्था सश्रद्धत राज्यों के राष्ट्रीय छात्र सेना यूनिटों करती है। शिविर के प्रबन्ध के लिए एन० सी० सी० आफिसरों की विभिन्न समितियां बना दी जाती हैं। खाद्य समिति में छात्र सैनिक भी रखे जाते हैं।

शिविर में छात्र सैनिकों को पी० टी० एवं परेड के अतिरिक्त सम्बन्धित विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है। सायंकाल छात्र सैनिक सांस्कृतिक कार्य क्रमों में भाग लेते हैं। पहले छात्र सैनिकों की प्रतियोगिताएं करायी जाती थीं, किन्तु अब इन प्रतियोगिताओं को समाप्त कर प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया जाने लगा है।

परीक्षा :—एन० सी० सी० की परीक्षा पास करने वाले छात्र सैनिकों को प्राप्तांक के आधार पर निम्न वर्गों में बांटा जाता है।

‘ए ग्रेड’ :—८० प्रतिशत अथवा इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर।

‘ब ग्रेड’ :—६५ से ८० प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर।

‘सी ग्रेड’ :—५० से ६५ प्रतिशत के मध्य अंक प्राप्त करने पर।

‘डी ग्रेड’ :—३० से ५० प्रतिशत के मध्य अंक प्राप्त करने पर।

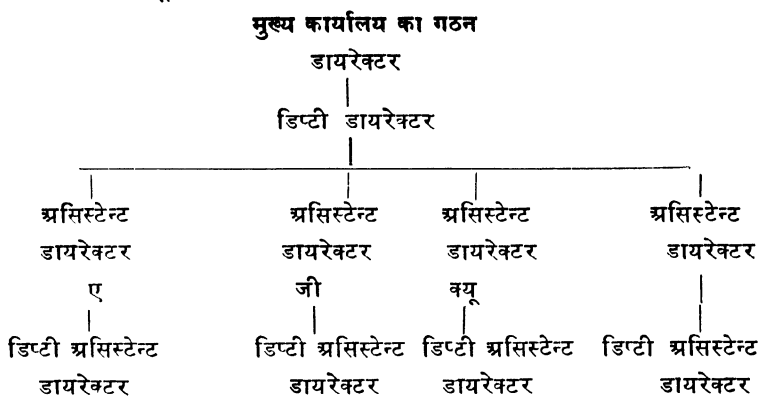
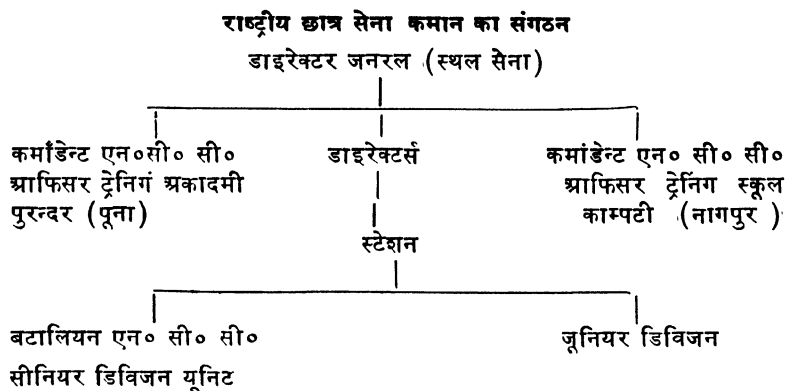
जूनियर डिवीजन के आफिसर :—

१—थर्ड आफिसर:—प्रथम कमीशन मिलने पर।

२—सेकंड आफिसर:—राष्ट्रीय छात्र सेना में कमीशन प्राप्त करने के तीन वर्ष की सेवा के पश्चात्।

३—फर्स्ट आफिसर:—कमीशन प्राप्त करने के आठ वर्ष की सेवा के पश्चात्।

४—चीफ आफिसर :—कमीशन प्राप्त करने के १५ वर्ष की सेवा के उपरान्त।



राज्यों के अनुसार इस समय १७ डायरेक्टोरेट हैं ये सीधे डायरेक्टर जनरल के नियन्त्रण में है। डायरेक्टर जनरल का मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में स्थित है। विभिन्न डायरेक्टर्स के नियन्त्रण में डायरेक्टोरेट हैं परन्तु बटालियन एवं यूनिट प्रशासनिक सुविधा के लिए स्टेशन इन्चार्ज के नियन्त्रण में रहती है।

पुरन्दर (पूना) ट्रेनिंग अकादमी तथा काम्पटी (नागपुर) के ट्रेनिंग स्कूल पर सीधे डायरेक्टर जनरल का नियन्त्रण है। इन स्थानों पर एन० सी० सी० आफिसरों को प्रशिक्षण दिया जाता है। नौसेना के एन० सी० सी० आफिसरों को कोचीन तथा राष्ट्रीय छात्र सेना (वायु विभाग) के आफिसरों की ट्रेनिंग के लिए अभी तक कोई स्थायी स्थान निश्चित नहीं हुआ है।

सन १९६३ से कालिज के प्रत्येक छात्र के लिए एन० सी० सी० आर० में भर्ती होना अनिवार्य हो गया था। किन्तु जौलाई १९६८ से एन० सी० सी० नेशनल सर्विस कोर एवं खेलों में से एक में भाग लेना अनिवार्य हो गया है !

: ३ :

सेना और उनके कर्तव्य

देश की प्रगति के लिए आवश्यक है कि हमें किसी विदेशी शत्रु के आक्रमण का भय न रहे। यह तभी सम्भव है यदि हमारी सुरक्षा सेनाएं भली प्रकार प्रशिक्षित और आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित हो। सेना सुदृढ़ होने पर किसी भी शत्रु देश की यह हिम्मत न होगी कि वह हमारे देश और बुरी नजर डाले। देश की रक्षा का भार जिस सेना पर है उसके तीन मुख्य अंग हैं —

१ :— स्थल सेना

२ :— नौ सेना

३ :— वायु सेना

स्थल सेना

सेना का यह अंग स्थल पर रहकर देश की रक्षा करता है।

संक्शन:— इस सेना की सबसे छोटी इकाई संक्शन कहलाती है एक संक्शन में पांच या छः सैनिक होते हैं।

प्लाटून :— तीन संक्शन मिलकर एक प्लाटून बनती है।

कम्पनी:— तीन प्लाटूनों से एक कम्पनी बनती है।

बटालियन:— पांच कम्पनियों को मिलाकर एक बटालियन का निर्माण होता है। बटालियन में लड़ने वाली तथा सहायक कम्पनियाँ भी होती हैं।

ब्रिगेड:— तीन बटालियनों से एक ब्रिगेड बनता है।

डिवीजन:— तीन ब्रिगेड मिलकर एक डिवीजन बनता है।

कोर— तीन डिवीजनों का एक कोर होता है। स्थल सेना में आवश्यकता अनुसार चाहे जितने कोर रह सकते हैं।

इन्फैंट्री — (पैदल सेना) में लड़ने वाले सैनिक होते हैं। इनकी युद्ध में आर्टिलरी तोपखाना तथा आर्मर्ड कोर (बख्तरबन्द कोर) सहायता करते हैं। आर्मर्ड कोर में टैंक तथा लड़ाकू वाहन होते हैं। बढ़ती हुई सेना की आवश्यकतानुसार रास्ते व पुल बनाना, सुरंगें लगाना तथा शत्रु द्वारा बिछायी गई सुरंगों की खोजकर उन्हें हटाने का काम इंजीनियरिंग कोर करता है।

लड़ रही सेना को रेडियो टेलीफोन, वायर लैस द्वारा सूचना या संदेश पहुँचाने का काम सिगनल डिविजन करता है। **ग्रार्मीसप्लाई कोर** का काम लड़ती सेना तक जीवनोपयोगी एवं युद्धोपयोगी सामग्री पहुँचाना है। **मेडीकल कोर** सेना की स्वास्थ्य व्यवस्था के अतिरिक्त युद्ध में घायल एवं बीमार सैनिकों की चिकित्सा करता है ! **आर्डनेस विभाग** का कार्य सैनिकों के लिए जीवनोपयोगी एवं युद्धोपयोगी सामग्री एकत्रित कर सप्लाई विभाग तक है पहुँचाना है ई०एम०ई० विभाग सेना के लिए आवास व्यवस्था तथा अन्य निर्माण कार्य करता है। स्थल सेना का शिक्षा विभाग सैनिकों के उपयोगी शिक्षा देता है।

स्थल सेना के कर्त्तव्य—१—बाहरी आक्रमण से देश की रक्षा करना !

२—सरकार द्वारा आदेश दिए जाने पर कानून व्यवस्था स्थापित करने में मदद देना।

३—उपरोक्त दो कार्यों के लिए सेना को सदैव सहयोग पूर्वक, राजभक्ति, ईमानदारी एवं उच्च कोटि के अनुशासन से काम करना होता है।

४—स्थल सेना का कर्त्तव्य है कि सेना के अन्य दो अंगों नौ सेना और वायु सेना— सहयोग करे।

नौ सेना

नौ सेना:—नौ सेना में नाविक (सीमैन ब्रांच) विभाग मुख्य होता है। लड़ने का भार इसी पर होता है। नाविक विभाग को सहायता करने वाला तोप खाना विभाग होता है। उसको तकनीकी एवं इंजीनियरिंग विभाग सदैव सहायता करता है। उसके पश्चात स्प्लार्ट मैक्रेटेरियट विभाग की व्यवस्था होती है। शासन तथा आवश्यक सामग्री की स्पलाई करने का प्रबन्ध यही करता है। अन्त में शिक्षा विभाग होता है जो विविध नाविकों को जल युद्ध के लिए तैयार करता है। नाविक विभाग में नाविक वैमानिक विभाग (नेवल एविएशन) भी होता है, जिसमें आई० एम० एस० विक्रान्त जैसे विमान वाहक जहाज होते हैं। इन जहाजों पर विमानों का अड्डा होता है। इन विमानों का कार्य शत्रु के जहाजों की खोज कर उन्हें नष्ट करना एवं शत्रु के विमानों तथा जहाजों से अपने जहाजों की रक्षा करना होता है।

नौसेना का कर्त्तव्य:—शत्रु की नौ सेना को नष्ट एवं निष्प्रभाव करना।

२. देश के तटीय एवं समुद्री व्यापार की रक्षा करना।

३. स्थल एवं वायु सेना तथा उनकी सप्लाई की समुद्र द्वारा आवागमन के समय रक्षा करना।

४. शत्रु के समुद्री व्यापार को नष्ट करना।

५. शत्रु की स्थल और वायु सेना को समुद्री मार्ग से आने जाने से रोकना।

६. अपनी स्थल और वायु सेना को कार्यवाही करने में सहायता करना ।
 ७. जल मार्ग से शत्रु को अपनी सीमा में उतरने से रोकना ।

वायु सेना

वायु सेना स्थल सेना की मदद ही नहीं अपितु रक्षा भी करती है । युद्ध में उसे संरक्षण देती है । टेक्नीकल शाखा में इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल आदि इंजीनियरिंग का काम होता है । यह शाखा विमानों की मरम्मत आदि कर उसे कार्य के लिए सदैव तैयार रखती है । इसकी सहायता करने वाला उपकरण (एक्विपमेंट) विभाग होता है, जो स्थल सेना के आर्डेनेन्स एवं सप्लाय विभाग दोनों का कार्य करता है । इसी विभाग का उत्तरदायित्व है कि युद्धोपयोगी व जीवनोपयोगी सामग्री को एकत्रित कर सप्लाय की व्यवस्था करे । प्रशासन तथा स्पेशल ड्यूटी विभाग हवाई अड्डे एवं शिक्षा कार्य को सम्भालता है ।

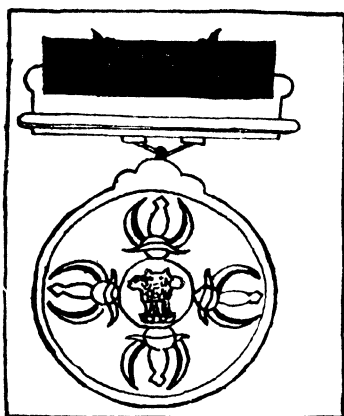
वायु सेना के कर्तव्य—१. वायु सेना का मुख्य कर्तव्य किसी भी सम्भावित आक्रमण से देश की रक्षा करना है ।

२. संकट कालीन स्थिति में स्थल तथा नौ सेना को विमानों द्वारा सुरक्ष प्रदान करना ।

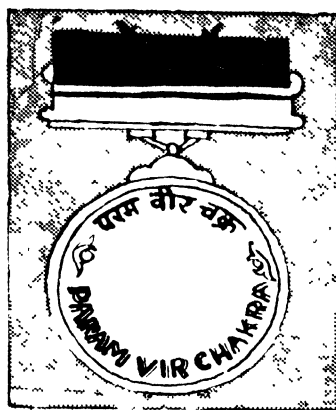
३. शान्ति काल में विविध प्रकार से राष्ट्र की सेवा करना ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की सुरक्षा सेनाओं को तीन अवसर प्राप्त हुए, एवं देश सुरक्षा, उत्तरदायित्व को भली प्रकार निभाने में सफल रही । १९४७-४८ में वायु सेना को अपना कौशल दिखाने का थोड़ा अवसर प्राप्त हुआ था उसके पश्चात वायु सेना की परीक्षा का अवसर नहीं आया था । १९६२ में भी सीमित कार्य का ही अवसर मिला, नौ सेना को आज तक अपना कौशल दिखाने का अवसर नहीं मिला है । अतः परीक्षा का अवसर न मिलने के अभाव में भारत में ही बहुत से लोग यहाँ शंका करने लगे थे कि पाकिस्तान को अमरीका द्वारा भेंट स्वरूप दिए गए स्टार फाइटर्स एवं सैंबर जेटों का अवसर पड़ने पर क्या भारतीय वायु सेना मुकाबला कर सकेगी ? परन्तु सितम्बर १९६५ में पाकिस्तानी आक्रमण के अवसर पर वायु सेना ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में निर्मित जेट विमान एवं कुशल चालक किसी भी प्रकार कम नहीं अपितु श्रेष्ठ है ।

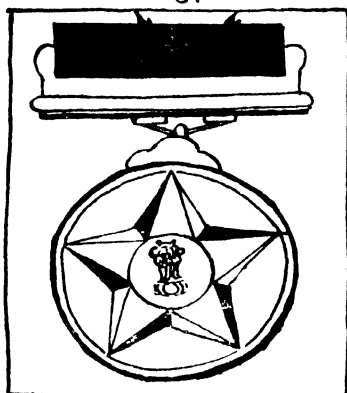
इस युद्ध में हमारी स्थल सेना को जो सफलता मिली है उसका बहुत कुछ श्रेय भारतीय वायु सेना को है, जिसने उसे हवाई संरक्षण प्रदान किया । विमान चालकों के शौर्य को देश ने पूरी शान के साथ आकाश में चमकते हुए देखा । इसी चमत्कार एवं कौशल युक्त शूरवीरता पूर्ण कार्य के परिणाम स्वरूप स्थल सेना, वायु सेना के निम्न बहादुरों ने वीरता चक्र प्राप्त किए ।



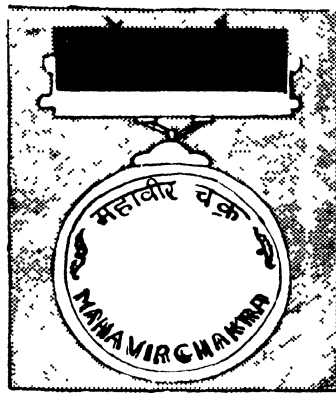
अ.



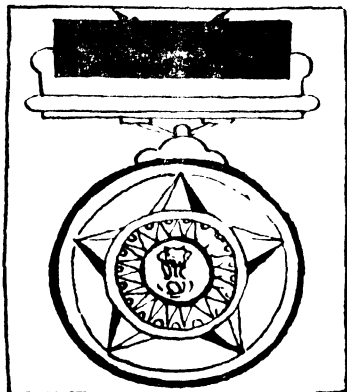
प.



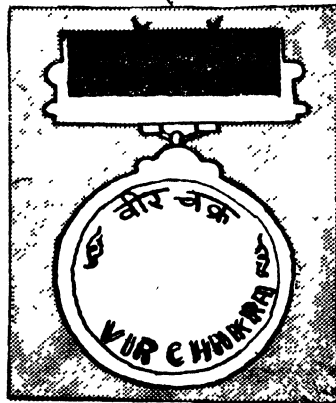
रा.



र.



व.



सव.

स्थल सेना

परम वीर चक्र

लेफ्टिनेन्ट कर्नल, ए० बी० तारा पोer (मरणोपरान्त)
कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार, अब्दुल हमीद (मरणोपरान्त) ।

महावीर चक्र

लेफ्टिनेन्ट कर्नल, गुरबंशसिंह संघा ।
लेफ्टिनेन्ट कर्नल, सलीम कलेब ।
लेफ्टिनेन्ट कर्नल, एच० एल० मेहता (मरणोपरान्त)
लेफ्टिनेन्ट कर्नल, डी० हाइड
लेफ्टिनेन्ट कर्नल, एन० एन० खन्ना (मरणोपरान्त)
मेजर, भास्कर राय
मेजर, रणजीत सिंह दयाल
मेजर, भूपिन्दर सिंह (मरणोपरान्त)
मेजर आशाराम त्यागी (मरणोपरान्त)
कैप्टन चन्द्र नारायण सिंह (मरणोपरान्त)
सूवेदार, अजीतसिंह (मरणोपरान्त)

वीर चक्र

लेफ्टिनेन्ट कर्नल, सम्पूरन सिंह
लेफ्टिनेन्ट कर्नल, छज्जूराम
मेजर, एम० ए० आर० शेख
मेजर, मेघसिंह
मेजर, जतीन्द्र कुमार
मेजर, एस० सी० वडैरा
मेजर, मुख्तार सिंह खैरा
मेजर, एस० एम० शर्मा (मरणोपरान्त)
मेजर, एस० ए० जकी
मेजर, एस० एस० रतरा
मेजर, सोमेश कुमार
कैप्टन, आर० सी० बक्शी
लेफ्टिनेन्ट, सुरेन्द्र पाल सेखों
लेफ्टिनेन्ट, तेजा सिंघ

लेफ्टिनेन्ट, भीखमसिंह
 सेकेण्ड ले०, आई० एस० ढालीबाल
 सेकेण्ड ले०, वी० के० वैद
 सेकेण्ड ले०, आर० एस० वैद
 सूबेदार, मान बहादुर गुरुग
 नायब सूबे०, जगदीशसिंह
 नायब सूबे०, मोहम्मद अयूब खाँ
 हवलदार, सी० पेरुमल
 हवलदार, पोथ राज
 हवलदार, अजमेर सिंह
 हवलदार, जेसूदास
 रिसालदार, अच्छर सिंह
 नायक, चाँदसिंह
 नायक, गणेशी दत्त
 नायक, प्रेमसिंह
 नायक, देवी बहादुर गुरुग (मरणोपरान्त)
 लान्स नायक, राज बहादुर गुरुग
 लान्स नायक, प्रीतम सिंह
 लान्स हवलदार, गुरुदेव सिंह
 लान्स हवलदार, सिधुराम
 लान्स हवलदार, के० मी० जाज
 लान्स हवलदार, उमरावसिंह (मरणोपरान्त),
 राइफलमैन, मत्तन सिंह
 राइफलमैन, महिलालसिंह
 राइफलमैन, धन बहादुर गुरुग
 सिपाही, बालम राम

वायु सेना

महावीर चक्र

विंग कमांडर, डब्ल्यू० एम० गुडमैन
 विंग कमांडर, पी० पी० सिंह
 स्ववाइन लीडर, पी० गौतम

वीर चक्र

विंग कमांडर, भरतसिंह
 स्ववाङ्मन लीडर, ट्रेवर कीलर
 स्ववा० लीडर, एम० एस जटार
 स्ववा० लीडर, एस० हाँडा
 स्ववा० लीडर, ए० जे० एस० सन्धु
 स्ववा० लीडर, डेंजिल कीलर
 फ्लाइट लेफिट०, वी० एस० पठानिया
 फ्लाइट लेफिट०, तिरलोचन सिंह
 फ्लाइट लेफिट०, डी० एन० राठौर
 फ्लाइट लेफिट०, ए० टी० कुक
 फ्लाइट लेफिट०, ए० के० मजूमदार
 फ्लाइट लेफिट०, वी० कपिल
 फ्लाइट लेफिट०, एच० एस० मंगत
 फ्लाईंग आफिसर, एस० सी० मेमगेन
 फ्लाईंग आफिसर, ए० आर० गाँधी
 फ्लाईंग आफिसर, वी० के० नेव
 फ्लाईंग आफिसर, पी० पिंगले

संपूर्ण देश ने अपने प्रादेशिक भाषाई, वर्गीय तथा राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर, एकता बद्ध मंकल्प का हृदय स्पर्शी प्रदर्शन किया, उससे फूट डालने वालों को बड़ी निराशा हुई। हमारी सेना स्वयंमेव भारत के उस राष्ट्रीय जीवन पंच मेल अस्तित्व का दर्पण है, जो इसलिए बरकरार है कि लोगों में निरपेक्ष आधुनिक लोकतन्त्र के प्रति एक ऐसी अत्याधिक निष्ठा और वफादारी है, जो मध्य युगीनता, कठमुल्ला पन और युद्ध लोलुपता सेना सिर्फ अपने लिए, बल्कि विश्वभर के लिए लोहा ले रही है।

अपनी इस अग्नि परीक्षा में से हमारा प्राचीन राष्ट्र अब तक एक नई ज्योति के साथ प्रकट हुआ है।

नागरिकता

नागरिक से आशय उन व्यक्तियों से है जिन्हें सामाजिक और राजनैतिक दोनों ही प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। नागरिक शब्द का अर्थ समय-समय पर बदलता रहता है। अरस्तू के समय दासता प्रचलित थी। उसके अनुसार जो व्यक्ति शासन कर सके और शासित हो सके, वह नागरिक कहलाने का अधिकारी था। मध्य युग में यूरोप में नागरिकता का अधिकार केवल धनी और कुछ थोड़े से व्यक्तियों को था। इसके बाद राजाओं ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जनता को नागरिकता के अधिकार प्रदान किए।

आधुनिक युग में किसी राज्य के नागरिक से आशय उस व्यक्ति से है जो राज्य में निवास करता हो और जिस व्यक्ति के समाज के प्रति अधिकार और कर्तव्य हों। दूसरे शब्दों में प्रत्येक राज्य में पुरुष और स्त्री, जो उस राज्य की सीमा में निवास करते हों, और उस राज्य के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हों, नागरिक कहलाते हैं।

प्रत्येक राज्य नागरिक को हम दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं। पहली श्रेणी में वे नागरिक आते हैं जिनका जन्म उस राज्य में हुआ हो। दूसरी श्रेणी में वे नागरिक आते हैं, जो किसी और राज्य के नागरिक होते हैं परन्तु सरकार उन्हें नागरिकता प्रदान कर देती है। वे राज्य-दत्त नागरिक कहलाते हैं।

शताब्दियों की पराधीनता के पश्चात् हम स्वतन्त्र हुए किन्तु इस स्वतन्त्रता की रक्षा राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिकों द्वारा ही सम्भव है। श्रेष्ठ नागरिक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

श्रेष्ठ नागरिक के गुण

सामाजिक भावना—सच्चा नागरिक वही है जो केवल अपनी भलाई की ही बात न सोचता हो परन्तु समाज और देश की भलाई का भी ध्यान सदैव रखता हो।

अच्छा स्वास्थ्य—आदर्श नागरिक का सदैव ही स्वस्थ रहना अति आवश्यक है। रोगी व्यक्ति समाज के लिए भार बन जाता है और समाज की प्रगति में बाधा बनता है।

कर्त्तव्य पालन—एक आदर्श नागरिक सदा अपने कर्त्तव्य का पालन करता है वह आपत्तियों की परवाह नहीं करता। कर्त्तव्य का मूल्य वह सबसे अधिक मानता

है। उसके पालन में अपने को बलिदान करने में भी वह हिचकता नहीं।

शिक्षा—आदर्श नागरिक का शिक्षित होना बड़ा जरूरी होता है। जो व्यक्ति शिक्षित नहीं और जिसके विचार उदार नहीं, वह समाज में रहने योग्य नहीं।

सहानुभूति—सहानुभूति आदर्श नागरिक का बड़ा ही आवश्यक गुण है। इस गुण के होने पर ही कोई व्यक्ति दूसरों के काम आता है।

आत्म सयम—आदर्श नागरिक आत्म संयमी बनने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति अपने को नियन्त्रण में नहीं रख सकता, वह किसी भी कार्य को अच्छी तरह नहीं कर सकता। महान पुरुष सदा ही आत्म सयमी होते हैं। अतएव आदर्श नागरिक नहीं कहता है जो आत्म संयमी हो।

लगन—आदर्श नागरिक में अनोखी लगन होती है। वह जिस भी कार्य को करता है, उसी में लगा रहता है। सांसारिक बाधाएँ उसे अपने मार्ग से नहीं हटा सकतीं।

राष्ट्रीय छात्र सेना ने राष्ट्र के किशोरों में उपरोक्त गुणों के विकास में बड़ा कार्य किया है। इन गुणों को अपना लेने के बाद वे बड़े होकर अच्छे नागरिक बनेंगे और हर प्रकार से देश की उन्नति करने में समर्थ होंगे।

राज्य की ओर से नागरिकों को कुछ अधिकार मिले होते हैं। इन सबकी सूची बनाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। सभ्यता की उन्नति के साथ-साथ नागरिकों के अधिकारों में परिवर्तन होता गया है। परन्तु मुख्यतया इन अधिकारों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया गया है।

१. प्राकृतिक अथवा नैसर्गिक अधिकार

२. नैतिक अधिकार

३. सामाजिक अधिकार

४. राजनीतिक अधिकार

५. मौलिक अधिकार। इन अधिकारों का संक्षेप में विवेचन नीचे किया गया है।

प्राकृतिक अथवा नैसर्गिक अधिकार—इन अधिकारों से अभिप्राय उन जन्म सिद्ध अथवा अत्यन्त आवश्यक अधिकारों से है जो राज्य द्वारा प्रत्येक नागरिक को अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए, चाहे उसकी विचार धारा कैसी ही क्यों न हो स्वतन्त्रता समानता, धार्मिक स्वतन्त्रता, शारीरिक सुरक्षा तथा सम्पत्ति आदि के अधिकार ऐसे ही अधिकार हैं।

नैतिक अधिकार—ये अधिकार कानूनों पर नहीं बरत मनुष्य की निजी भावना, नैतिक चेतना तथा रीति रिवाज पर आधारित है। इन अधिकारों के पालन के लिए कानून का सहारा नहीं लिया जा सकता। उदाहरणार्थ माता-पिता का यह नैतिक अधिकार है कि वृद्धावस्था में उनकी सन्तान उन्हें सब प्रकार से सुखी रखे

और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करें।

सामाजिक अधिकार— इनमें वे अधिकार आते हैं जो किसी व्यक्ति के राज्य का सदस्य होने के नाते उसे स्वतः प्राप्त हो जाते हैं। इस वर्ग में निम्न लिखित अधिकार आते हैं जीवित रहने का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, सन्तानोत्पत्ति तथा कौटुम्बिक जीवन बिताने का अधिकार, स्वतन्त्रता का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार जीविकोपार्जन का अधिकार, धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, समुदाय बनाने का अधिकार।

राजनीतिक अधिकार— राजनीतिक अधिकारों का यह अर्थ है कि नागरिक को अपने देश की सरकार में भाग लेने की सुविधा हो। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली में राजनीतिक अधिकारों का बड़ा महत्त्व है, इस वर्ग में निम्नलिखित अधिकारों की गणना की जाती है। मत प्रदान करने का अधिकार, ससद और विधान मंडलों आदि में निर्वाचित होने का अधिकार, प्रार्थना पत्र देने का अधिकार, पद-प्राप्ति का अधिकार।

मौलिक अधिकार— जिन अधिकारों का संविधान में वर्णन किया गया है। उनको मौलिक अधिकार कहा जाता है। भारतीय संविधान में निम्न लिखित मौलिक अधिकार दिए गए हैं।

- १—समानता का अधिकार
- २—स्वतन्त्रता का अधिकार
- ३—धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार
- ४—सम्पत्ति का अधिकार
- ५—शिक्षा और संस्कृति का अधिकार
- ६—शोषण के विरुद्ध अधिकार
- ७—संवैधानिक उपचार

इन अधिकारों के साथ-साथ नागरिकों के कुछ कर्तव्य भी होते हैं। ये कर्तव्य मुख्य रूप से दो वर्गों में बांटे जा सकते हैं।

१. नैतिक कर्तव्य
२. कानूनी कर्तव्य

नैतिक कर्तव्यों का सम्बन्ध मनुष्य के चरित्र से है। इनका पालन करना उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। इसके पालन के लिए न तो किसी व्यक्ति को बाधित किया जा सकता है और न ही कर्तव्यों के उल्लंघन पर उसे दण्ड ही दिया जा सकता है। दीनों की सहायता करना, अनाथों की रक्षा करना और नंगे-भूखों आदि को वस्त्र भोजन आदि देना सब नैतिक कर्तव्यों में आता है।

कानूनी कर्तव्य—प्रत्येक नागरिक को कुछ ऐसे कर्तव्य करने पड़ते हैं जिनके

लिए कानून उसको बाध्य करता है। यदि नागरिक उसकी अवहेलना करता है तो राज्य उसे दंड देता है। ये कर्तव्य निम्नलिखित हैं।

१. कानूनों का पालन करना।
२. कर देना।
३. सेना में भारती होना।
४. राज्य के प्रति भक्ति और मताधिकार का उचित प्रयोग।

अधिकार और कर्तव्य देखने में तो भिन्न प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में बात ऐसी नहीं है, वे एक सिक्के के दो पहलू हैं। बिना कर्तव्य, पालन किये अधिकार की इच्छा केवल मृग तृष्णा है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करता है, उसे अधिकार स्वयं ही प्राप्त हो जाते हैं।

: ५ :

पदाधिकारी एवं बैज

सुरक्षा सेनाओं की विभिन्न शाखाओं (स्थल, वायु, नौ) के सैनिकों एवं आफिसरों के बैज होते हैं। इन बैजों से उन्हें पूरी तरह पहचाना जा सकता है। बैजों की भाँति उनकी वर्दियाँ भी भिन्न-भिन्न रंगों की होती हैं।

सुरक्षा सेनाओं के आफिसरों के दो वर्ग होते हैं—कमीशण्ड तथा नान-कमी-शण्ड, परन्तु स्थल सेना में आफिसरों का एक वर्ग और भी है जूनियर कमीशण्ड आफिसर, जूनियर कमीशण्ड आफिसर नान-कमीशण्ड आफिसर से सीनियर होता है, किन्तु कमीशण्ड आफिसर से जूनियर होता है।

स्थल सेना में सैनिक को “जवान” कहकर पुकारा जाता है जवान अपनी वर्दी पर अपनी रेजीमेंट का कपड़े का बैज पहनते हैं। जवानों के बाद विभिन्न वर्गों में निम्नलिखित नान-कमीशण्ड आफिसर होते हैं।

१. लेंस नायक ।
२. नायक ।
३. लेंस हवलदार (प्रशिक्षण के समय) ।
४. हवलदार ।
५. कम्पनी क्वाटर मास्टर हवलदार ।
६. कम्पनी हवलदार मेजर ।
७. बटालियन क्वाटर मास्टर हवलदार ।
८. बटालियन हवलदार मेजर ।

कम्पनी क्वाटर मास्टर हवलदार तक के पदाधिकारी अपने बैजों को दाहिने हाथ में पहनते हैं। इससे ऊपर के पदाधिकारी बैज दाँयी कलाई पर बाँधते हैं। हवलदार के पद तक के बैज कपड़े के होते हैं। कम्पनी क्वाटर मास्टर हवलदार के बैज कपड़े एवं पीतल के तथा इससे ऊपर के पदाधिकारियों के बैज पीतल के होते हैं।

जूनियर कमीशण्ड आफिसर

१. जमादार ।
२. सूबेदार ।
३. सूबेदार मेजर ।

इन पदाधिकारियों के बैज कपड़े के बने होते हैं और कन्धों पर पहने जाते हैं।

कमीशण्ड आफिसर

१. सेकिड लेफ्टीनेण्ट ।
२. लेफ्टीनेण्ट ।
३. कैप्टन ।
४. मेजर ।
५. लेफ्टीनेण्ट कर्नल ।
६. कर्नल ।
७. ब्रिगेडियर ।
८. मेजर जनरल ।
९. लेफ्टीनेण्ट जनरल ।
१०. जनरल ।

नौ सेना

नौ सेना के सैनिक को रेट या रेटिंग के नाम से पुकारा जाता है। 'रेट' किसी प्रकार के बैज आदि नहीं लगाते हैं, केवल अपने जलयान का चिन्ह लगाते हैं।

नान-कमीशण्ड आफिसर

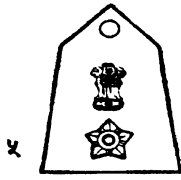
१. एबल रेट ।
२. लीडिंगरेट ।
३. पेटी आफिसर ।
४. चीफ पेटी आफिसर ।
५. ब्रांच आफिसर ।

कमीशण्ड आफिसर

१. एक्टिंग सब लेफ्टीनेण्ट ।
२. सब लेफ्टीनेण्ट ।
३. लेफ्टीनेण्ट ।
४. लेफ्टीनेण्ट कमाण्डर ।
५. कमाण्डर ।
६. कैप्टन ।
७. कोमोडोर-द्वितीय ।
८. कोमोडोर-प्रथम और रियर एडमिरल ।
९. वाइस एडमिरल ।
१०. एडमिरल ।

वायु सेना

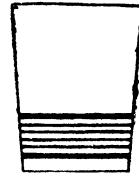
वायु सेना में जवान एवं रेटिंग के स्तर पर भरती होने वाले सैनिक को



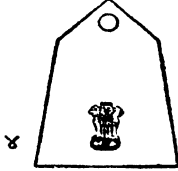
A



B



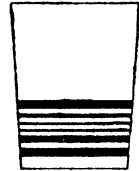
C



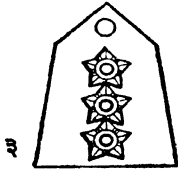
A



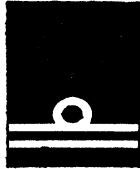
B



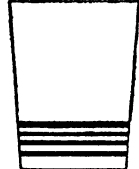
C



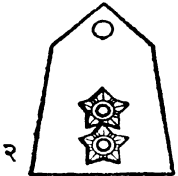
A



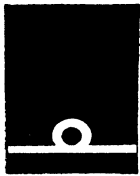
B



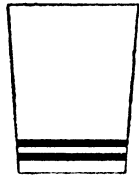
C



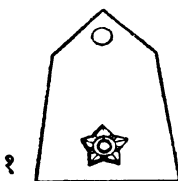
A



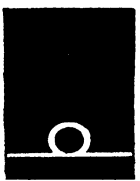
B



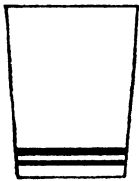
C



A



B



C

भारतीय सुरक्षा सेनाओं के समान कमीशन्ड पदाधिकारी

(अ) स्थल सेना

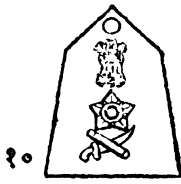
- १ सेकिंड लेफ्टीनेण्ट
 २ लेफ्टीनेण्ट
 ३ कैप्टन
 ४ मेजर
 ५ लेफ्टीनेण्ट कर्नल

(ब) जल सेना

- कमीशन्ड ग्राफिसर
 सब लेफ्टीनेण्ट
 लेफ्टीनेण्ट
 लेफ्टीनेण्ट कमाण्डर
 कमाण्डर

(स) वायु सेना

- पायलट ग्राफिसर
 फ्लाइट ग्राफिसर
 फ्लाइट लेफ्टीनेण्ट
 स्क्वाड्रन लीडर
 विंग कमाण्डर



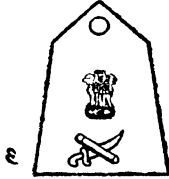
A



B



C



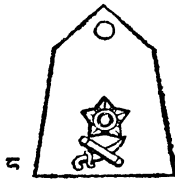
A



B



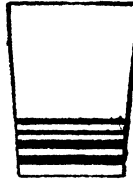
C



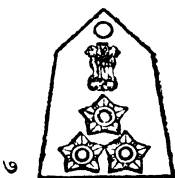
A



B



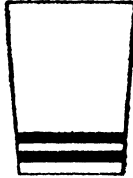
C



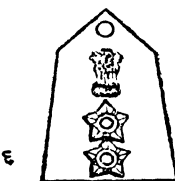
A



B



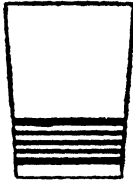
C



A



B



C

६ कर्नल

७ ब्रिगेडियर

८ मेजर जनरल

९ लेफ्टीनेण्ट जनरल

१० जनरल

कैप्टन

कोमोडोर (द्वितीय श्रेणी)

रियर एडमिरल और
कोमोडोर (प्रथम श्रेणी)

वाइस एडमिरल

एडमिरल

ग्रुप कैप्टन

एयर कोमोडोर

एयर वाइस मार्शल

एयर मार्शल

एयर चीफ मार्शल

एयरमैन कहा जाता है। किन्तु शिक्षा स्तर में एयरमैन जवान व रेटिंग से ऊँचा होता है। एयरमैन के पद की दृष्टि से दो वर्ग होते हैं।

१. ए० सी०—१
२. ए० सी०—२

नान कमीशण्ड आफिसर (एन० सी० ओ०)

१. लीडिंग एयर क्राफ्टमैन।
२. कारपोरल।
३. सार्जेंट।
४. फ्लाइट सार्जेंट।
५. वारंट आफिसर।
६. मास्टर वारंट आफिसर।

कमीशण्ड आफिसर

१. पाइलट आफिसर।
२. फ्लाइट आफिसर।
३. फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट।
४. स्ववाइन लीडर।
५. विंग कमाण्डर।
६. ग्रुप कैप्टन।
७. एयर कोमोडोर।
८. एयर वाइस मार्शल।
९. एयर मार्शल।
१०. एयर चीफ मार्शल।

कार्य की दृष्टि से वायु सेना को मुख्यतः दो शाखाओं में विभाजित किया गया है :—

१. जनरल ड्यूटी ब्रांच :—इस शाखा में पाइलट एवं नेवीगेटर आते हैं।
 २. ग्राउंड ड्यूटी ब्रांच :—इस शाखा में स्थल पर कार्य करने वाले सदस्य आते हैं। उन्हें भी कार्य की दृष्टि से निम्न वर्गों में बांटा गया है :—
- (अ) इंजीनियर—सिगनल्स, हथियार, इलेक्ट्रिकल।
- (ब) एडमिनिस्ट्रेटिव तथा स्पेशल ड्यूटी शाखा :—सामान, शिक्षा, लेखा।

तीनों सुरक्षा सेनाओं में आफिसरों का वर्गीकरण जूनियर आफिसर, सीनियर आफिसर एवं जनरल आफिसर के अनुसार किया जाता है।

वायु सेना की टुकड़ियां स्ववाइन्स कहलाती है। एक अच्छी 'स्ववाइन्स' में कुल मिलाकर १६ से २४ तक विमान होते हैं। इससे छोटी संख्या वाले स्ववाइन्स, भी होते हैं। किन्तु इस विषय के विवरण और देश की वायु सेना के विमानों की सम्पूर्ण शक्ति अन्ततः "गोपनीय" होती है एवं ऐसा होना उचित ही है।

अच्छे नेता के गुण

किसी भी संगठन की सफलता काफी सीमा तक अच्छे नेतृत्व पर निर्भर करती है। सुरक्षा सेनाओं के प्रत्येक अंगों के लिए यही बात सही है। यदि नेता अच्छा हुआ तो युद्ध में विजय और शान्ति में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। कुछ मनुष्यों में जन्म से ही नेता के गुण होते हैं एवं कुछेक औसतन चतुर मनुष्य वातावरण एवं प्रशिक्षण में अपने चरित्र को नेता स्तर पर लाने में सफल होते हैं।

उद्देश्य :—नेता का उद्देश्य अपने सहयोगियों एवं दूसरों का पूर्ण विश्वास प्राप्त करना होता है।

अच्छे नेता के गुण

१. नेता का व्यक्तित्व प्रभाव शाली एवं सम्बन्धित विषय का पूर्ण ज्ञान हो।
२. नेता को न्याय प्रिय तथा चापलूसी अथवा भ्रम से प्रभावित न होने वाला होना चाहिए।
३. नेता का चरित्र अनुकरणीय होना चाहिए।
४. उसमें मानव प्रकृति को समझने की क्षमता होनी चाहिए।
५. उसे अपने नियन्त्रण के कर्मचारियों की आवश्यकताओं और सुविधा का ध्यान रखना चाहिए।
६. उसे शीघ्रता में किसी प्रकार का अनुचित आदेश न देना चाहिए।
७. उसे दयालु होना चाहिए, दयालु होना किसी प्रकार की निर्बलता का चिन्ह नहीं है।

नेता को अपने अधीन कर्मचारियों से काम लेते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

- १—कर्मचारियों से न तो अधिक और न ही कम काम कराना चाहिए।
- २—उन्हें आराम के समय आराम देना चाहिए।
- ३—कर्मचारियों के खान-पान एवं स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- ४—उनके वस्त्रादि का भी ध्यान रखना चाहिए।
- ५—कार्य के पश्चात् अतिरिक्त समय में कर्मचारियों के आमोद-प्रमोद का प्रबन्ध करना भी नेता का ही कर्तव्य है। नेता को चाहिए कि अपने अधीन कर्मचारियों की घरेलू कठिनाइयों को भी यथा सम्भव दूर करने में सहयोग दें।

उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त अच्छे नेता में और बातों का समावेश भी अति आवश्यक है आत्मविश्वास एवं स्वः नियन्त्रण से अपने अधीनस्थ साथियों में उत्साह एवं धैर्य का प्रादुर्भाव होता है। नेता के अनुकरणीय व्यवहार एवं प्रसन्नचित्त स्वभाव से दूसरों को प्रेरणा मिलती है। नेतृत्व के लिए विषय का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है यदि नेता अपने सहयोगियों को उचित योजनानुसार लेकर आगे बढ़ता है तो वे बाधाओंपर विजय प्राप्त करने में सफल होंगे।

निर्णय लेने की क्षमता का होना भी आवश्यक है। उत्तर दायित्व को निभाने के लिए उच्च स्तर से आदेश की प्रतीक्षा में हानि की अधिक आशंका रहती है आपात काल में निर्णय लेने की क्षमता आत्म विश्वास के साथ आवश्यक है।

अतः नेता आदर्शों का मिश्रण होता है एवं आधुनिक युद्ध नेतृत्व पर ही जीते जाते हैं।

— — —

: ६ :

अनुशासन एवं अभिवादन

अनुशासन जहाँ साधारण व्यक्ति के लिए महत्व पूर्ण है, वहाँ सैनिकों के लिए आवश्यक विशेषता है। सैनिक दृष्टि से हम अनुशासन की निम्न रूप में परिभाषा कर सकते हैं।

“अनुशासन वह शक्ति है जो एक असंगठित सेना को सबल एवं सशक्त सेना में बदल देती है। सेना की शक्ति उनके अनुशासन एवं उत्साह में आंकी जाती है।”

वैसे तो अनुशासन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। यदि वर्तमान भारत का प्रत्येक नवयुवक अनुशासन बद्ध होकर कार्य करने की क्षमता का विकास करे तो भविष्य का भारत अति सुदृढ़ होगा। हम यहाँ पर अन्य पहलुओं पर विस्तार से चर्चा न कर केवल सैनिक दृष्टि से अनुशासन पर विचार करेंगे।

सुरक्षा सेनाओं में सबसे प्रथम कर्तव्य अनुशासन की दृष्टि से आज्ञा का पालन करना है। आज्ञा प्राप्त होने पर उसका निषेध नहीं किया जा सकता। आदेश के उल्लंघन का तात्पर्य विद्रोह है। इस पर कठोर दण्ड दिया जा सकता है। सैनिक ड्यूटी पर हो या न हो, यह आवश्यक है कि वह आफिसरों के सामने अनुशासन पूर्वक व्यवहार करे।

सैनिक की प्रत्येक गलती को अनुशासन भंग माना जाता है। गलती के अनुसार दंड का विधान होता है। एक ऐसी सूची होती है, जिसमें बताया गया होता है कि कौन-सी गलती पर कौनसा दंड मिलेगा। सेना की प्रत्येक शाखा के सैनिकों के लिए निम्नलिखित बातें प्रत्येक दशा में ध्यान में रखनी आवश्यक हैं:--

१—दंड की सूची का ज्ञान

२—एक गलती करने के पश्चात् दुबारा उस गलती से बचना जिसके कारण पहले दंड मिल चुका है।

३—अन्य साथियों को वैसे गलत काम करने से रोकना।

४. आराम करने की आज्ञा मिलने पर भी अनुशासन को ध्यान में रखना।

५. अपने आफिसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का सदैव ध्यान रखना।

राष्ट्रीय छात्र सेना के द्वारा नवयुवकों में सैनिक अनुशासन में रहने की भावना का विकास होता है।

परिणाम स्वरूप छात्र सैनिकों द्वारा देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। अनुशासनबद्ध होने के कारण छात्र सैनिकों का सर्वांगीण विकास होता है। उनमें आत्म-

सम्मान, आज्ञा-पालन, अपने कर्तव्य के प्रति सचेत एवं देश प्रेम की भावना का प्रादुर्भाव होता है।

अभिवादन (सैल्यूट)

अभिवादन का प्रचलन प्राचीन काल से ही है; भले ही उसके ढंग में भिन्नता रही हो। प्राचीन काल में मनुष्य अभिवादन करने के निमित्त अपना सीधा हाथ, खुली हथेली सीधा ऊपर उठाता था। इसका अभिप्राय था कि मेरे हाथ में किसी प्रकार की ऐसी वस्तु नहीं है जो कि आपको हानि पहुंचाए। मैं आपका मित्र हूँ एवं स्वागत करता हूँ।

आज का अभिवादन प्राचीन काल के अभिवादन का ही बदला रूप है। आजकल इतके द्वारा छोटे एवं बड़े के अन्तर का बोध होता है। इसका तात्पर्य होता है अपने से उच्च पदाधिकारी के प्रति सम्मान व्यक्त करना। विश्व सभ्यता में एक ऐसा समय भी आया जबकि मनुष्य, मनुष्य को शक्ति द्वारा अपना गुलाम बना लेता था। गुलामों के लिए यह अनिवार्य था कि वे झुककर अपने मालिक को अभिवादन करें। ऐसा न करने पर कठोर दण्ड का भी विधान था।

बाजू से सैल्यूट—सैल्यूट करते समय हम साधारण आदमी से भिन्न हो जाते हैं जिससे कि हम सैल्यूट कर रहे हैं, वह हमारी ओर केन्द्रित हो जाये। इससे मित्रता की भावना पैदा होती है क्योंकि हाथ माथे के सामने होता है एवं खुली हथेली सामने होती है।

जलयान द्वारा सैल्यूट—इसमें पाल को झुकाकर यह संकेत दिया जाता है कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ, शत्रु नहीं। यदि रण क्षेत्र में कोई मर जाता है। तो उसके शव को राष्ट्रीय झण्डों में लपेटा जाता है तथा उसे पूर्ण सैनिक सम्मान दिया जाता है। उसके पश्चात् दाह संस्कार आदि किया जाता है।

हवाई जहाज द्वारा सैल्यूट—जब हवाई जहाज सैल्यूट देता है, वह पहले नीचे आता है एवं फिर ऊपर इस प्रकार जाता है जैसे उसे पृथ्वी से फेंका गया हो।

वर्तमान काल में सैल्यूट आदर का सूचक है। प्राचीन काल की भाँति गुलाम एवं मालिक का सूचक नहीं है। मुख्य अफसर तलवार से सैल्यूट देते हैं एवं दूसरे पदाधिकारी राइफल से सैल्यूट करते हैं। हवाई जहाज डुबकी लगाकर सलामी मंच तक पहुँच जाते हैं जिसका अर्थ है कि वह भी सैल्यूट करते हैं। बड़े लोगों को तोप दागकर सलामी दी जाती है।

सैनिक सम्मान के साथ शव को सलामी

१. शव को राष्ट्रीय ध्वज में लपेटना।
२. हथियारों को उल्टा करके पकड़ना।
३. तीन बार पिस्टल से हवाई फायर करना।

अभिवादन कब करना चाहिए

१. कमीशण्ड आफीसर को अभिवादन किया जाता है ।
२. जूनियर आफीसर अपने से सीनियर आफीसर को अभिवादन करता है ।
३. जिसको वीरता का पदक परम वीर चक्र, महावीर चक्र, वीर चक्र आदि

मिला हो, उसका सब अभिवादन करते है ।

४. शव यात्रा के समय ।

५. राष्ट्रीय ध्वजारोहण एवं राष्ट्रीय गान के समय ।

६. ड्यूटी पर एवं उसके पश्चात् सीनियर आफीसर को ।

७. दो या अधिक आफीसर एक स्थान पर हों ।

८. गार्ड सैल्यूट ।

९. किसी नेता के हवाई जहाज से उतरने पर ।

१०. मार्च पास्ट के समय ।

११. परेड पर ।

१२. आज्ञा प्राप्त करते समय ।

१३. नागरिक वेशभूषा में हाथ जोड़कर या हैट उतारकर सैल्यूट किया जाता है ।

भारतीय स्थल सेना का संगठन एवं प्रशासन

स्थल सेना, नौ सेना, वायु सेना का ध्येय अपने देश की सुरक्षा करना तथा शत्रु पर आक्रमण कर खतरे को समाप्त करना है। किन्तु साथ-साथ प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिए प्रशासनिक दृष्टि से संगठन की आवश्यकता होती है। इसी दृष्टि कोण से हम स्थल सेना के प्रशासन एवं संगठन पर विचार करेंगे।

युद्ध का स्पष्ट अर्थ है—शक्ति के द्वारा दूसरे देश का मुकाबला करना। वर्तमान काल में युद्ध में सफलता के लिए आर्थिक, औद्योगिक एवं प्रशासनिक, क्षेत्रों में ताल मेल आवश्यक है। भारतीय स्थल सेना का गौरवमय इतिहास है विश्व की उच्च कोटि की स्थल सेनाओं की ही भाँति भारतीय स्थल सेना का संगठन भी काफी पेचीदा है। अतः विस्तार पूर्वक उसका वर्णन करना यहां सम्भव नहीं है केवल आवश्यकीय अंगों का ही आगे विवेचन करेंगे।

ब्रिटिश काल में कमांडर-इन-चीफ केवल तीनों सेनाओं का मुख्य अधिकारी ही नहीं अपितु गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी समिति का “युद्ध सदस्य, भी होता था। इस प्रकार सेनाध्यक्ष का एक विशेष स्थान होता था। किन्तु भारत के गणतन्त्र होने पर स्थिति में परिवर्तन हो गया। अब राष्ट्रपति तीनों सेनाओं के सुप्रीमकमांडर हैं एव रक्षा मन्त्रालय उन्हें आवश्यक परामर्श देता है।

अब रक्षा मन्त्रालय ही सुरक्षा सम्बन्धी नीतियाँ निर्धारित करता है। एवं सुरक्षा सेनाओं का मुख्यालय (स्थल सेना मुख्यालय—नौ सेना मुख्यालय—वायु सेना मुख्यालय) भारत सरकार की स्वीकृति मिलने पर कार्य रूप में परिणित करते हैं। प्रत्येक सुरक्षा सेना के पृथक सेनाध्यक्ष (स्थल सेनाध्यक्ष—नौ सेनाध्यक्ष—वायु सेनाध्यक्ष) है जो कि स्वतन्त्र रूप में कार्य करते हैं किन्तु तालमेल हेतु विभिन्न स्तरों पर समितियाँ स्थापित की गई है जिन में मुख्य केबिनेट की सुरक्षा समिति है जिसकी अध्यक्षता प्रधान मन्त्री करते हैं।

भारतीय स्थल सेना

स्थल सेनाध्यक्ष जो कि जनरल पद का होता है कि सर्वोच्च कार्य कारिणी के नियन्त्रण में कार्य करती है। स्थल सेना मुख्यालय सीधे उसके नियन्त्रण में होता है। कार्य की सुविधा के लिए स्थल सेना मुख्यालय बहुत सी शाखाओं में विभाजित किया गया जिसमें मुख्य निम्न हैं :—

१. एडजुटेन्ट जनरल ब्रांच।
२. क्वार्टर मास्टर जनरल ब्रांच।

३. मास्टर जनरल आफ़् थ्रोरडिनेन्स ब्रांच ।
४. इंजिनियर-इन-चीफ़ ब्रांच ।
५. मिलिट्री सक्लेट्टी ब्रांच ।

उपरोक्त प्रत्येक ब्रांच मेजर जनरल के नियन्त्रण में होती हैं। कार्य की सुविधा के लिए प्रत्येक ब्रांच विभिन्न डाइरेक्टोरेटों में विभाजित की गई है।

स्थैतिक विरचना

(स्टैटिक फोरमेशन)

शान्ति काल में प्रशासन एवं संगठन की दृष्टि से भारत को तीन क्षेत्रीय कमानों में विभाजित किया गया है।

१. दक्षिणी कमान ।
२. पूर्वी कमान ।
३. पश्चिमी कमान ।

प्रत्येक कमान जनरल आफ़िसर कमांडिंग-इन-चीफ़ (जी० थ्रो० सी०-इन-सी०) जो कि लेफ्टिनेन्ट जनरल के पद का होता है के सीधे नियन्त्रण में होती हैं। प्रत्येक कमान विभिन्न एरियों में विभाजित की गई है आमतौर से एक एरिया एक प्रान्त को माना गया है प्रत्येक एरिया मेजर जनरल के नियन्त्रण में होता हैं। एक एरिया आमतौर से तीन सब एरियों में बांटा गया है। प्रत्येक सब एरिया ब्रिगेडियर के नियन्त्रण में होता है। प्रत्येक सब एरिया में कुछ स्टेशन होते हैं जो कि शहर, छावनी या अन्य भाग में स्थित होते हैं प्रथा के अनुसार स्टेशन कर्नल के नियन्त्रण में होता है। स्टेशन कमांडर से एरिया कमांडर तक उनके क्षेत्रों में षो ट्रुप है उनका पूर्ण उत्तर दायित्व है। इस विरचना को लोजर फोरमेशन कहते हैं।

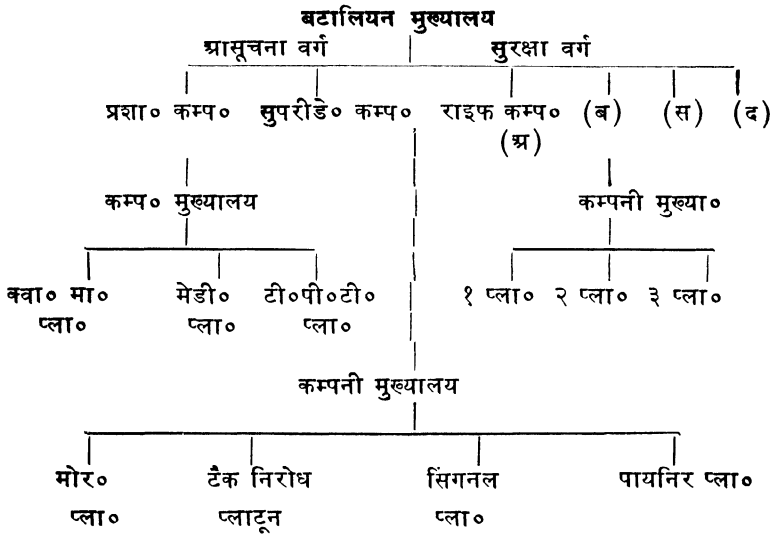
फील्ड फोरमेशन :—जिस विरचना (फोरमेशन) में सेना युद्ध स्थल पर कारवाई के लिए जाती है उसे फील्ड फोरमेशन कहते हैं।

युद्ध स्थल में सेनाएं जनरल आफ़िसर कमांडिंग-इन-चीफ़ के नियन्त्रण में होती है उसे सर्वोच्च अधिकार युद्ध स्थल में प्राप्त होते हैं। सेना की उच्चस्तर की फील्ड फोरमेशन लेफ्टिनेन्ट जनरल या जनरल के नियन्त्रण में होती है सेना में मुख्य तथा तीन या अधिक कोर होती हैं तथा बख्तर बन्द डिविजन एवं वायु सेना साथ में सहयोगहेतु होती है। आमतौर से एक कोर लेफ्टिनेन्ट जनरल के नियन्त्रण में होती है।

प्रशासन—संगठन एवं प्रशिक्षण आदि में कोर का उल्लेख होता है। किन्तु सामरिक संगठन में इसका तात्पर्य आमतौर से तीन डिविजन से होता है। डिविजन स्थायी सामरिक विरचना (फोरमेशन) है। जो कि युद्ध स्थल में स्वतन्त्र कारवाई करने का अधिकार रखता है मुख्यतया डिविजन मेजर जनरल के नियन्त्रण में होती है।

डिविजन में इन्फेन्ट्री—बस्तर बन्द आदि की सेनाएं होती हैं। एक इन्फेन्ट्री डिवीजन में तीन ब्रिगेड होते हैं जो कि ब्रिगेडियर के नियन्त्रण में होते हैं। ब्रिगेड में तीन इन्फेन्ट्री बटालियन होती हैं। तथा लैफ्टनेन्ट कर्नल के नियन्त्रण में होती हैं।

इन्फेन्ट्री बटालियन का गठन



खण्ड २

छोटे हथियार

आधुनिकता की दौड़ में मानव वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान में निरन्तर प्रगति कर रहा है प्राचीन ग्रन्थों में लिखित चन्द्रलोक की यात्रा आदि को कपोल कल्पित मानते थे, किन्तु वह अब साकार हो गई है। प्रत्येक राष्ट्र वैज्ञानिक अनुसंधानों के परिणामों की उपलब्धि में सैन्य शक्ति बढ़ाने में प्रयत्नशील है, जिससे भविष्य में शत्रु आक्रमण को विफल किया जा सके। किसी देश की शक्ति का आधार अब जनसंख्या नहीं रह गया है बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि उसके पास किस श्रेणी के हथियार हैं।

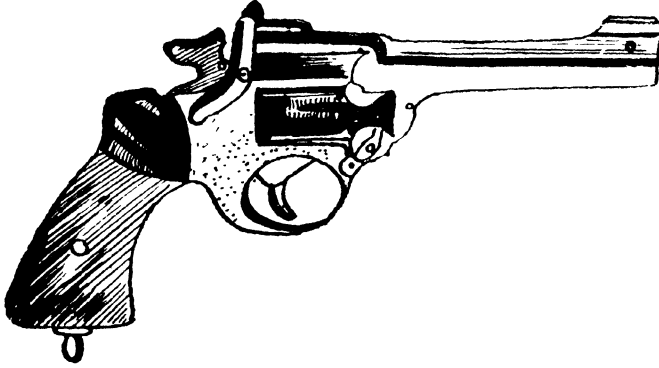
पूर्व दशाब्दियों में नवीन शस्त्रों के विकास एवं सुधार की ओर क्रान्तिकारी कार्य हुए हैं। प्रत्येक देश के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि वह छोटे एवं प्रचलित हथियारों के क्षेत्र में हुए विकास से अवगत रहे भले ही उसके पास उच्च कोटि के घोर संहारक आधुनिक हथियार क्यों न हो। छोटे हथियार का अर्थ है, ऐसे हथियार जिन्हें सैनिक अकष्टमय वहन कर सके। इतिहास के पन्ने पर पता चलता है कि सदैव ही छोटे हथियारों की माँग रही है।

स्थल, नौ एवं वायु सेनाओं के निमित्त छोटे हथियार परमावश्यक है। थल पर होने वाले आधुनिक युद्ध में टैंक गाड़ियों और उन पर लगे हथियारों का विशेष योग्य रहता है बखतरबन्द गाड़ियों पर मशीनगन व भारी अस्त्र शस्त्रों की व्यवस्था होती है पैदल सेना के हेतु छोटे हथियार ही आत्मरक्षा व आक्रमण के एक मात्र साधन है। आवश्यकता पड़ने पर जल सेना व वायु सेना भी थल सेना को संरक्षण प्रदान करती है आधुनिक युद्धों में तो विजय पराजय थल, जल व वायु सेना के ताल मेल पर निर्भर करती है।

बीहड़ निर्जन जंगलों में भली प्रकार से निरीक्षण का अभाव अल्पदृश्यता, रेडियो व दूर संचार व्यवस्था के ठीक काम न करने, भारी अस्त्र शस्त्रों के यातायात के साधनों के अभाव में युद्ध काल में सैनिकों को बहुत कठिनाई होती है। बीहड़ जंगलों में युद्ध के लिए छोटे हथियार ही आदर्श हथियार है। पहाड़ों, प्रतिकूल मौसम, ऊँचे नीचे स्थानों, छाता सैनिकों एवं छापा मार युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों के लिए तथा रात्रि में शत्रु पर आक्रमण करने के लिए छोटे हथियार ही सर्वोत्तम हैं।

प्रचलित विधि के आधारपर छोटे हथियारों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है।

१. हाथ में लेकर चलाए जाने वाले हथियार (पिस्तौल रिवालवर व स्व-चालित पिस्तौल)
२. कंधे के सहारे चलाए जाने वाले हथियार (रायफल व कारबाइन)
३. मशीन गन



पिस्तौल-रिवालवर

आत्म रक्षा एवं समीप से शत्रु को रोकने का पिस्तौल सर्वोत्तम हथियार है इसकी निम्न विशेषताएं हैं ।

१. यह मूल रूप से अंधकार एवं समीपवर्ती युद्ध का हथियार है ।
२. इसकी संहारक शक्ति बीस गज से अधिक नहीं होती अतः इसका प्रयोग १० गज से अधिक लक्ष्यों पर नहीं करना चाहिए ।
३. छोटी नाल तथा भार कम होने के कारण इसे तीव्र गति से किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता है ।
४. इसमें शत्रु को रोकने की शक्ति अधिक होती है । ६ सेकण्ड में ६ गोलियां भली प्रकार चलायी जा सकती है ।
५. ३.८ इंच पिस्तौल एनफिल्ड नं २ एम० के० १ का विवरण निम्न है :

व्यास—३.८ इंच

भार—१ पौंड ११ औंस

लम्बाई—६-१/२ इंच

बैरल की लम्बाई—६ इंच

प्रयोगिक परास—१५ गज

गोली का वजन —६५ ग्रेन

नाख मुखवेग—६०० फीट/सेकण्ड

इसमें एक धूमने वाला सिलिन्डर होता है, जिसमें ६ कारतूस भरी जा सकती है।

६. ६ एम० एम० ब्राउनिंग ओटोमेटिक पिस्तौल भारतीय सेना द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली नवीनतम पिस्तौल है। इसका—

व्यास—६ एम० एम०

भार—२ पौंड १ औंस

मैगजीन की क्षमता १४ कारतूस (१३ भरते हैं)

प्रभावशाली परास—१५ गज

लम्बाई—७-१/२ इंच

नाल मुख वेग—१००० फीट प्रति सैकिण्ड

७. पिस्तौल चलाने का प्रशिक्षण दोनों हाथों से दिया जाना चाहिए क्योंकि यदि एक हाथ घायल हो जाय तो दूसरे हाथ का उपयोग किया जा सके। इसके अतिरिक्त कोनों का भी लाभ उठाया जा सकता है।

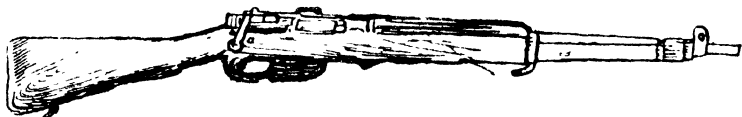
पिस्तौल का प्रयोग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१. कारतूसों से भरी पिस्तौल को इधर उधर नहीं रखना चाहिए अन्यथा कोई लापरवाई से उठाकर अनायास ही फायर करने का डर रहता है। रखते समय तोड़ देना चाहिए (यदि वह रिवालवर है तो तोड़ने का अर्थ है उसे खोल देना और यदि स्वचालित पिस्तौल है तो तोड़ने का अर्थ मैगजीन को निकाल देना है)

२. किसी की पिस्तौल लेते समय यह देखलेना चाहिए कि उसे तोड़ दिया गया है यदि 'तोड़ा' नहीं गया है तो उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए।

३. स्वचालित पिस्तौल के कोष्ठ को खाली करने से पूर्व मैगजीन निकाल देनी चाहिए।

४. पिस्तौल भरी हो अथवा खाली, उसकी नली कभी किसी व्यक्ति की ओर नहीं करनी चाहिए (जब तक कि उसे मारने का इरादा न हो)



राइफल

राइफल पैदल सैनिकों का हथियार है। बहुधा इसे सैनिक का सर्वोत्तम मित्र कहकर भी पुकारा जाता है। यदि इसका प्रयोग उचित प्रकार किया जाय तो यह ३०० गज तक आक्रमण एवं बचाव दोनों के लिए प्रभावशाली हथियार है। राइफल

को सभी छोटे हथियारों का जनक कहा जा सकता है। आधुनिक सैनिक रायफलें कई प्रकार की होती हैं।

१—राइफल

२—अर्ध-स्वचालित राइफल

३—स्वचालित राइफल

राइफल का भार लगभग १० पौंड होता है, इसकी मैगजीन में १० कारतूस भरे जा सकते हैं। एक कुशल सैनिक राइफल से एक मिनट में १५-२० फायर लक्ष्य पर कर सकता है अर्ध-स्वचालित राइफल में घोड़ा दबाने से एक फायर होता है। इसकी मैगजीन में अधिक से अधिक २० कारतूस भरे जा सकते हैं। इससे एक मिनट में अधिक से अधिक ६० फायर किये जा सकते हैं।

७'६२ एम० एम० स्वचालित राइफल

विशेषताएं १. अन्य राइफलों के समान यह राइफल भी चपटे प्रक्षेप वाला शस्त्र है। प्रक्षेप चपटा होने के कारण इससे सीधा लक्ष्य लगाया जा सकता है।

२. राइफल का भार—(बिना संगीन तथा मैगजीन भरे हुए) ६ पौण्ड
६ औंस

—(बिना संगीन के परन्तु भरी मैगजीन के साथ)
११ पौण्ड ३ औंस

—(संगीन तथा भरी मैगजीन सहित) ११ पौण्ड
१४ औंस

३. गोली का भार —१४४ ग्रेन

४. भरी मैगजीन का भार—एक पौण्ड १० औंस

५. मैगजीन की क्षमता —२१ कारतूस

६. प्रभावशाली मारक क्षमता—३०० गज, टेलीस्कोप साइट लगाकर १००० गज तक प्रभावशाली मार की जाती है। इसकी अधिक मार क्षमता २००० गज है।

७. राइफल की लम्बाई—४५ इंच

८. बैरेल की लम्बाई—२१ इंच

९. फायर गति सामान्य --२० कारतूस प्रति मिनट, तेज—७ मैगजीन (१४० कारतूस) प्रतिमिनट

१०. गोली का व्यास—७'६२ मिली मीटर

११. इसकी नली के अग्रभाग में संगीन लगाई जा सकती है जिसके कारण फायर के साथ प्रधान का प्रभाव भी उत्पन्न किया जा सकता है इस प्रकार यह राइफल निकटवर्ती मार के लिए अत्यन्त उपयोगी हथियार है ।

१२. इस रायफल पर प्रक्षेपक लगाकर तथा विशेष फायर करके टैंक मार गोले भी छोड़े जा सकते हैं ।

१३. इस रायफल पर डिस्चार्जर कप लगाकर विस्फोटक हथ गोलों को लगभग २०० गज तक फायर किया जा सकता है ।

१४. इस राइफल की बैरेल के अन्दर ६ ग्रुव होते हैं जो गोली को घुमाव प्रदान करते हैं । बैरेल से निकलने के पश्चात् गोली का घूमना उसको निश्चित दिशा में स्थित रखता है ।

१५. फायर चक्र—यह रायफल एक अर्ध स्वचालित शस्त्र है । एक बार घोड़ा दबाने पर एक गोली फायर होती है खाली खोका स्वयं बाहर आ जाता है ।

बोध—१. यह पुरानी राइफल (३०३" एस० एम० एल० ई०) की तुलना में भार अधिक होने के कारण पैदल सैनिक की गति पर प्रभाव डालती है ।

२. बैनेट लगाने पर लक्ष्य लेने में असुविधा होती है ।



.३०३" एस० एम० एल० ई० राइफल

इस राइफल में एक-एक गोली छोड़ी जाती है । प्रत्येक गोली छोड़ने के पूर्व बोल्ट को हाथ से पीछे खींचना पड़ता है । जिससे खोल कोष्ठ से पीछे आता है और बाहर निकल जाता है । बोल्ट को आगे भी हाथ से ही ले जाना पड़ता है । बोल्ट आगे जाते समय मैगजीन से नयी कारतूस लेकर कोष्ठ में पहुँचा देता है और बोल्ट को दाईं ओर घुमाने से ब्रीच बन्द हो जाता है इस प्रकार राइफल से फायर करते समय प्रत्येक बार बोल्ट को हाथ द्वारा आगे पीछे ले जाना पड़ता है इस कारण एक के पश्चात् दूसरी गोली चलाने में कुछ समय लगता है ।

नं० एम० के० III

नं० एम० के० I

१. राइफल का भार (बिना बैनेट के)	८ पौंड १०-१/२ औंस	६ पौंड
२. राइफल का भार (बैनेट सहित)	६ पौंड ११-१/२ औंस	६ पौंड ६ औंस
३. राइफल की लम्बाई (बिना बैनेट)	४४-१/२ इंच	४४-१/२ इंच

४. राइफल की लम्बाई

(बैनेट सहित)

५६-५ इंच

५३ इंच

५. बैरल की लम्बाई

२५-९ इंच

२५-२ इंच

६. गोली का भार

१७४ ग्रैन

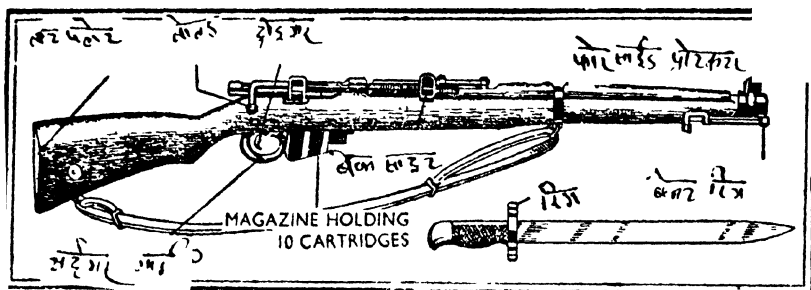
१७४ ग्रैन

उपरोक्त तुलना के अतिरिक्त मैगजीन की क्षमता १० कारतूस एवं फायर की गति सामान्य में ५ कारतूस प्रति मिनट तथा तीव्र १५ कारतूस प्रति मिनट तक चले सकती है निपुण सैनिक २५ कारतूस प्रति मिनट तक फायर कर सकते हैं। इस राइफल की प्रभावकारी मारक दूरी ३०० गज एवं अधिकतम मारक दूरी २००० गज तक है। ७-६२ मिली मीटर राइफल के समान इस राइफल से भी टैंकमार तथा विस्फोटक हथगोले छोड़े जा सकते हैं। इसकी बैरल में पांच अंग होते हैं।

दोष :— १. प्रत्येक गोली छोड़ने के पश्चात पुनः लक्ष्य लेना पड़ता है क्योंकि हाथ से लोड करने में लक्ष्य हिल जाता है।

२.—फायर की गति बहुत कम है

३.—अन्य दोष ७-६२ मिलीमिटर राइफल के समान ही है।



राइफल के प्रमुख अंग

- १—बटप्लेट
- २—लीफ साइट
- ३—बट स्टोक
- ४—ब्रीच बोल्ट
- ५—फोर एण्ड स्टोक
- ६—आउटर बंड
- ७—फोर साइट
- ८—बोल्ट लीवर
- ९—बोल्ट हेड
- १०—कुकिंग पीस

- ११—बेनैट
 १२—अग्रिम लिप्स
 १३—पिछला लिप्स
 १४—प्लेटफोरम
 १५—स्प्रिंग
 १६—बोडीब्रिज
 १७—ट्राइगर
 १८—ट्राइगर गार्ड
 १९—सेफटी कैंच
 २०—स्ट्राइकर
 २१—लीफ साइट

राइफल नं० १ एम० के० ३, नं० ४ एम० के० १ का व्यास ३०३ इंच होता है इसलिए उन्हें ३०३ राइफल कहते हैं। राइफल नं० २ मार्क ४ को २२ राइफल कहते हैं। इसकी नली का व्यास २२" होता है। प्रशिक्षण देते समय यह काम आती है। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

१—यह पीछे की ओर भटका नहीं देती।

२—यह कम दूरी तक मार कर सकती है। इससे सीखने वाला आराम से निशाना लगा सकता है।

मुख्य दोष

१—प्रशिक्षण लेने वाले को बाद में इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

२—दृष्टि स्थिर रखने का अभ्यास इस राइफल से नहीं होता।

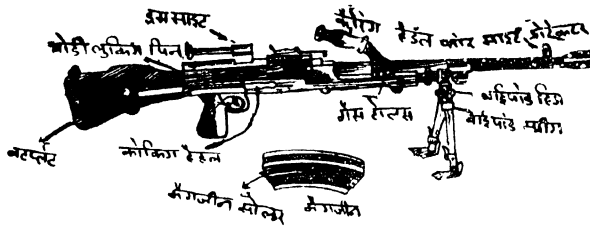
३—दुबारा राइफल भरने का अभ्यास नहीं किया जा सकता।

४—३०३ राइफल की भांति पीछे भटका नहीं मारती इसलिए भटका सहने का अभ्यास नहीं होता।

शिकारी बन्दूक— इसकी नली कटान रहित होती है और थोड़े वेग से छर्रें फायर किए जाते हैं। इनमें दो नली भी होती है। इसकी प्रभाव शाली मारक दूरी ५० मीटर के लगभग होती है। यह युद्धास्त्र नहीं है, यद्यपि बारूद युग में इसका प्रयोग किया जाता था।

मस्केट— यह भी पुराना युद्धास्त्र था जिससे आधुनिक राइफल मस्केट बनी। इसकी नली भी बिना कटान की होती थी, इसे मुख की ओर से भरा जाता था। इसकी मारक दूरी १०० मीटर से अधिक नहीं थी। इसमें सुधार होते होते नली में कटान होने लगी तथा उसकी गोली पीछे से भरी जाने लगी, जिससे इसका नाम राइफल मस्केट अथवा राइफल ही हो गया।

कारबाइन:—कारबाइन एक छोटी राइफल होती है इसकी नली की लम्बाई २२ इंच से कम होती है। अर्धस्वचालित पिस्तौल से इसका विकास किया गया है इसे सवार सैनिक तथा प्राचीन काल में अश्वारोही सैनिक सुविधा से प्रयोग कर सकते थे। इसका भार ५ पाँड से १० तक होता है एवं प्रभावकारी मारक दूरी २०० गज के लगभग होती है इसमें अर्धस्वचालित व स्वचालित दोनों प्रकार की क्रियाएँ होती हैं। इसको कन्धे पर या कटि पर सहारा देकर निरन्तर फायर किया जा सकता है जंगली में समीपवर्ती लड़ाई, रात्री में पहरा देने वाले सैनिकों को एवं रात्री में शत्रु पर आक्रमण तथा छापामार युद्ध के लिए यह एक आदर्श हथियार है। टामीगन, स्टेनगन भी कारबाइन के ही आधुनिक रूप हैं जो आमतौर से स्वचालित होती है और निजी शस्त्रों में इसका मुख्य स्थान हो गया है।



मशीन गन

मशीन गन की क्रिया स्वचालित होती है पैदल सेना की सहायता के लिए साथ साथ मशीन गन रखी जाती है। मशीन गन से फायर करने के लिए कई सैनिकों की आवश्यकता होती है अकेला सैनिक इसका प्रचालन नहीं कर सकता। मशीन गनों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है।

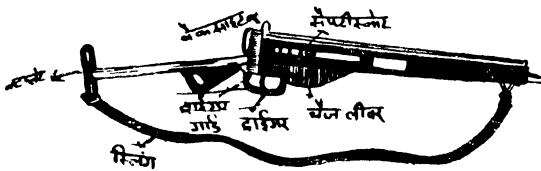
१. हल्की मशीन गन
२. मध्य मशीन गन
३. भारी मशीन गन

हल्की मशीन गन—भारतीय पैदल सेना द्वारा प्रयोग की जाने वाली मशीन गनों में ब्रेनगन प्रमुख है यह सर्व प्रथम जैकोस्लेविया के ब्रूनो नामक स्थान पर बनाई गई थी, पश्चात् एनफील्ड (इंग्लैंड) में आवश्यक सुधार किए गए इससे पूर्ण स्वचालित फायर किया जा सकता है कुछ में ऐसी युक्ति भी होती है कि इसे अर्ध स्वचालित राइफल की भाँति प्रयोग किया जा सके इसकी निम्न विशेषताएँ हैं।

१—यह स्वचालित एवं अर्धस्वचालित राइफल के रूप में प्रयोग की जा सकती है।

२—इसकी बनावट इस प्रकार की है कि इसे सरलता से छुपाया तथा चलाया जा सकता है। इसका विवरण निम्न है।

३—	३०३" ब्रेन	७.६२ मिलीमीटर
ब्रेन गन का भार	२३ पौण्ड	१६.५ पौण्ड
बैरेल का भार	६-१/२ पौण्ड	—
तिपाही का भार	३० पौण्ड	—
खाली मैगजीन का भार	१ पौण्ड १ औंस	१४ औंस
भरी मैगजीन का भार	२ पौण्ड १२ औंस	२ पौण्ड ७ औंस
गोली का भार	१७४ ग्रोन	१४४ ग्रोन
ब्रेन गन की लम्बाई	४५-१/२ इंच	४४-१/२ इंच
बैरेल लम्बाई	२५ इंच	—
नाल-मुख-वेग	२४४०' प्रति सै०	२७००' प्रति सै०
त्रिपद पर गन का घुमाव	३८°	
गन का अधिकतर ऊपर उठाव	१६°	
फायर की गति	सामान्य	१ मैगजीन प्रति मिनट १
	तीव्र	३ मैगजीन प्रति मिनट ३
	चक्रीय	५०० गोली प्रति मिनट ५००
मैगजीन की क्षमता		३० कारतूस ३०
ग्रूव की संख्या		६ ६
प्रभावशाली भार	५०० गज (द्विपद पर)	५०० गज
	१००० गज (त्रिपद पर)	१००० गज



स्टेन गन

आवश्यकता पड़ने पर एक सैनिक भी फायर कर सकता है आमतौर से दो सैनिक कार्य करते हैं यह हवा में ठण्डा होने वाला शस्त्र है १० मैगजीन फायर करने पर बैरेल गर्म हो जाती है अतः प्रत्येक गन के निमित्त पृथक बैरेल की आवश्यकता होती है उसे बदल दिया जाता है एवं पहली बैरेल ठंडी हो जाती है इससे फायर की गति में बाधा उत्पन्न नहीं होती। फायर के समय कोई धक्का भी नहीं लगता त्रिपद पर गन को विमान भेदक कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है जिससे नीची उड़ान पर वायुयान को नष्ट किया जा सकता है।

टिप्पणी:—१, पैदल सैनिकों हेतु थोड़ा भार अधिक है।

१. बैरल को हवा द्वारा ठण्डा करने की व्यवस्था है अतः फायर करते समय शीघ्र ही गरम हो जाती है।

३. यह अधिक कीचड़, धूल, रेत इत्यादि को सहन नहीं कर सकता।

मध्यम मशीन गन

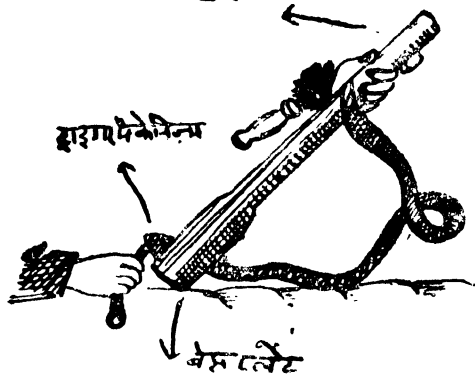
आधुनिक मध्यम मशीन गन का भार २५ से ६० पाउंड तक होता है। यह स्वचालित शस्त्र है जो क्रम बद्ध तीव्र गति से गोली छोड़ता है। एक पेटी में २५० कारतूस होते हैं एवं कारतूसों की भरवाई एक पेटी द्वारा की जाती है। इसकी फायरिंग क्षमता ५०० गोली प्रति मिनट होती है किन्तु साधारणतया इससे २५० फायर प्रति मिनट से अधिक नहीं किए जाते। निरन्तर फायरिंग से उत्पन्न ऊष्मा के कारण गर्म बैरलों को ठण्डा करने के लिए शीतल व्यवस्था भी होती है। त्रिपद पर लगाकर ये २८०० गज तक फायर कर सकती है वैसे सामान्यतः ये १६०० गज तक ही विशेष प्रभावशाली है।

भारी मशीन गन

भारी मशीन गन का उपयोग वायु सेना तथा नौ सेना अधिकतर करती है नीची उड़ान भरने वाले शत्रु वायुयानों को नष्ट करने में स्थल सेना भी प्रयोग में लाती है। इसका व्यास २० मिली मीटर या कुछ अधिक होता है द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व इसका प्रयोग टैंक-भेदी हथियार के रूप में किया जाता है। प्रत्येक मशीन गन को फायर करने के लिए तीन व्यक्तियों का एक डिटेन्चमेन्ट होता है जिसमें कमान्डर, गनर तथा लोडर होता है। पक्षों की ओर से यह आवरक शलक देकर आक्रमणकारी टुकड़ियों को सहयोग प्रदान करने के साथ साथ शत्रु आक्रमण को विफल करने में अति उत्तम शस्त्र है।

मार्टर

प्रज्वल



मारटरों की विशेषताएं—ये सरल शस्त्र होते हैं इनके आधार भूत तीन भाग होते हैं:—

१. नली
२. बेसप्लेट
३. द्विपद

इस कारण इनमें कोई विशेष देख-भाल की आवश्यकता नहीं होती। इसमें बारीकी पुर्जे बहुत कम होते हैं इस निमित्त ये हथियार दृढ़ होते हैं और बाधा बहुत कम पड़ती है। प्रतिक्षेप (रिकायल सिस्टम) एवं बैलेंसिंग गियर के न होने के कारण भार की मात्रा कम होती है अतः यह शास्त्र अति सुवाह्य (पोर्टेबल) होता है। बराबर की शक्तिवाली गन की तुलना में लागत व्यय कम आता है और फायर की गति गन से अधिक होती है मारटर का गोला बराबर व्यास वाली गन से अधिक विनाशक होता है क्योंकि इसका खोल पतला होता है अतः बारूद की मात्रा बढ़ाई जा सकती है।

पैदल सेना के टैंक मार शस्त्र

जब से युद्ध में बख्तर बन्द हथियारों, वाहनो आदि का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। तभी से बख्तर को भेदने और तोड़ने वाले हथियारों की ओर भी मनुष्य सचेत हुआ। प्राचीन काल में युद्ध में प्रयोग होने वाले पशुओं एवं रथों पर मढ़े हुए बतखर को भेदने के उपाय किए, आधुनिक काल में युद्ध क्षेत्र में टैंकों, बख्तबंद मोटर गाड़ियों, व हवाई जहाजों के निर्माण एवं विकास से उनके बख्तर को भेदने के उपाय किए गए। वास्तव में बख्तर निर्माताओं और भेदने वालों में सदैव होड़ लगी रहती है। जैसे बख्तर निर्माता अपनी इस्पाती चादर की परत को मोटा करता गया या ताप उपचार द्वारा अधिक मजबूत करता गया वैसे ही बन्दूक एवं गोली निर्माता उसे भेदने के लिए ऊंचे नालमुख वेग की बन्दूकें बनाता गया। गोली को, उच्च स्तरीय ताप उपचार द्वारा मजबूत बनाता या फिर व गोलियों, गोलों या कारतूसों का आकार, ऐसा बनाता कि वे उच्च कोटि की इस्पाती चादरों को भली प्रकार भेदने में सफल होती। सर्व प्रथम ब्रिटेन ने प्रथम विश्व युद्ध में फ्रान्स में स्लॉम की लड़ाई में टैंकों का प्रयोग किया। तब से बख्तर भेदने की समस्या ने उग्र रूप एवं नया नामधारण कर लिया।

आधुनिक भारतीय स्थल सेना की बटालियनों में निम्न प्रकार के टैंक मार शस्त्र प्रयोग किए जाते हैं।

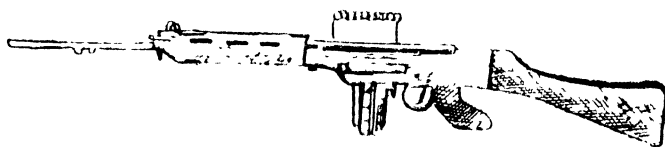
१. धक्का रहित गन (रिकायलैस गन)
२. राकेट लांचर
३. टैंक निरोधक हथ गोले

सन् १९६५ में पाकिस्तान के आधुनिकतम पैटन टैंकों को नष्ट कर भारतीय सैनिकों ने सिद्ध कर दिया कि टैंकों से भय खाने की कोई बात नहीं। टैंक तोड़क शस्त्रों द्वारा नष्ट किया जा सकता है टैंक तोड़क दो प्रकार के होते हैं।

१. टैंक तोड़कों में गोले की गतिज ऊर्जा का प्रयोग होता है।

२. टैंक तोड़कों में रसायनिक ऊर्जा का प्रयोग होता है

आधुनिक टैंक मारक हथियार ४५०० फीट प्रति सैकिण्ड की गति से टैंक के बख्तर पर प्रहार करते हैं इस प्रकार सुदृढ़ बख्तर के टैंक को नष्ट किया जा सकता है।



रिकायल लेस रायफल

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के अन्तिम दिनों में स्थल सैनिकों के हेतु यह नवीन हथियार प्रकट हुआ। किन्तु इसका अधिक प्रयोग कोरिया युद्ध में हुआ तोपखाने के लक्षण पर भी, भार कम होने के कारण इसका वर्गीकरण अक्सर छोटे हथियारों में किया जाता है। स्थल सेना की बटालियनों की सहायक कम्पनी में रिकायल लेस रायफल (धक्का रहित गन) की एक प्लाटून होती है १०६ मी० मीटर की धक्का रहित गनों का प्रयोग मैदानी क्षेत्रों में किया जाता है और ५७ मिली मीटर की धक्का रहित गनों पर्वतीय क्षेत्रों में इस्तेमाल की जाती है ५७ मिली मीटर की गन अपेक्षाकृत हल्की होती है जिससे पर्वतीय क्षेत्रों में सुविधा पूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जायी जा सकती है इनकी विशेषताएँ निम्न हैं।

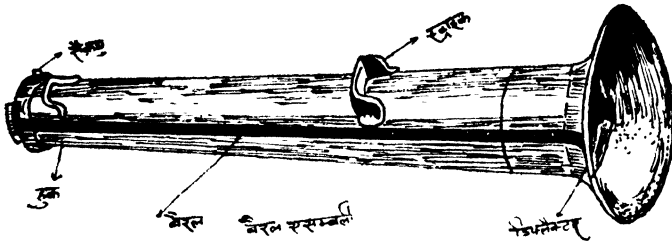
१०६ मि० मी० धक्का रहित गन ५७ मि० मी० धक्का रहित गन

भार	२५१ पौण्ड	४४ पौण्ड
नाल मुख वेग	१६५० फीट प्रति सै०	१२०० फीट प्रति सै०
प्रभावशाली मारक दूरी		
प्रत्यक्ष फायर	२२०० गज	१६०० गज
गतिशील टैंकों		
पर	१२०० गज	६०० गज
स्थिर टैंकों		
पर	१५०० गज	१००० गज

फायर गति सामान्य	१ राउंड प्रति मिनट	१ राउंड प्रति मिनट
	अधिक तम १ राउंड प्रति ६ सै०	
गन की लम्बाई	१३४ इंच	६१/१-२ इंच
गोले का भार	३७ पौण्ड	५/१-२ पौण्ड
व्यास	१०६ मि० मी०	५७ मि० मी०

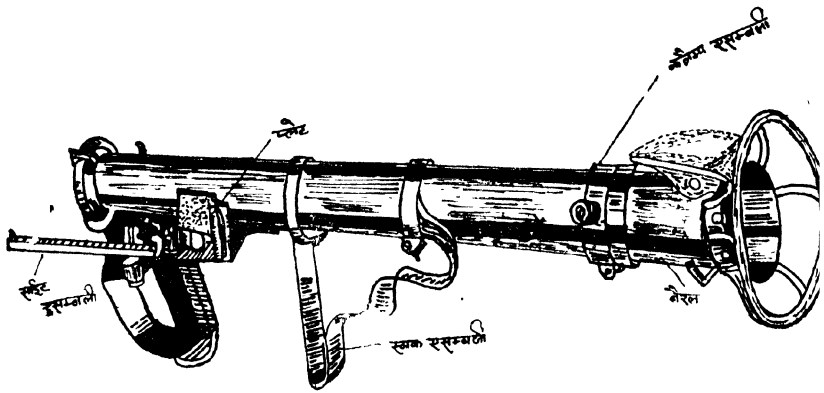
इसके कर्मीदल में चार व्यक्ति होते हैं कमाण्डर-गनर-लोडर तथा जीप ड्राइवर, इस प्रकार धक्का रहित गने अपनी सेनाओं की शत्रु के टैंकों से रक्षा तथा शत्रु फायरों को प्रभावहीन करती हैं तथा अपनी स्थितियों पर शत्रु के आक्रमण को विफल करती है। शत्रु बक्स एवं पिल बक्सों को नष्ट करने के साथ-साथ अपनी सेनाओं के आक्रमण के समय राउण्ड फायर करके निकटवर्ती सहायता प्रदान करती है।

रिकायल लेस हथियारों की विशेषता यह है कि यह हल्के होते हैं और इनकी बनावट सरल होती है। इनके यध्य ब्लाकों में छेद रखे जाते हैं इस विशेष आकार से उच्च विस्फोटक और टैंक भेदी गोले छोड़े जा सकते हैं। गोले रखने के कक्षों में छेदों की व्यवस्था होती है जिनमें से गोली को आगे फँकने वाली बारूद अन्य गैसों का कुछ अंश राइफल के पीछे की ओर से निकल जाता है।



राकेट लाँचर (बजूका)

हल्के टैंक तोड़ हथियारों में द्वितीय विश्व युद्ध के आरम्भ में बजूका नामक राकेट छोड़ने वाले चरम क्रान्तिकारी हथियार का विकास अमेरिका में हुआ। इसकी बनावट बहुत सरल है। भारतीय स्थल सेना की प्रत्येक कम्पनी के मुख्यालय पर बजूका उपलब्ध रहता है इसे दो सैनिकों का डिटेचमेंट प्रयोग करता है (कमाण्डर तथा फायर करने वाला) आधुनिक ३.५" बजूका ने अपनी कार्य क्षमता का प्रमाण सर्व प्रथम कोरिया युद्ध में दिया था। १९६५ के भारत पाक युद्ध में पाकिस्तान के पैंटन टैंकों को नष्ट करने में भी अधिक कार्य शील सिद्ध हुए। ३.५" बजूका का विवरण निम्न है।



बजूका

१ इसमें एक-एक कर राकेट फायर किए जाते हैं। राकेट हाथ से भरे जाते हैं तथा विद्युतीय विधि से फायर किए जाते हैं।

२. प्रक्षेपक का भार १३/१-२ पौण्ड राकेट भार ६ पौण्ड

३. प्रक्षेपक का व्यास ३.५ इंच

४. इस्पात की चादर में प्रवेश करने की शक्ति ११ इंच तक

५. प्रभावशाली मार

गतिशील टैकों पर—	१५० गज
स्थिर टैकों पर —	३०० गज
क्षेत्रीय लक्ष्यों पर —	८६० गज

६. फटने का क्षेत्र — २० गज × १० गज

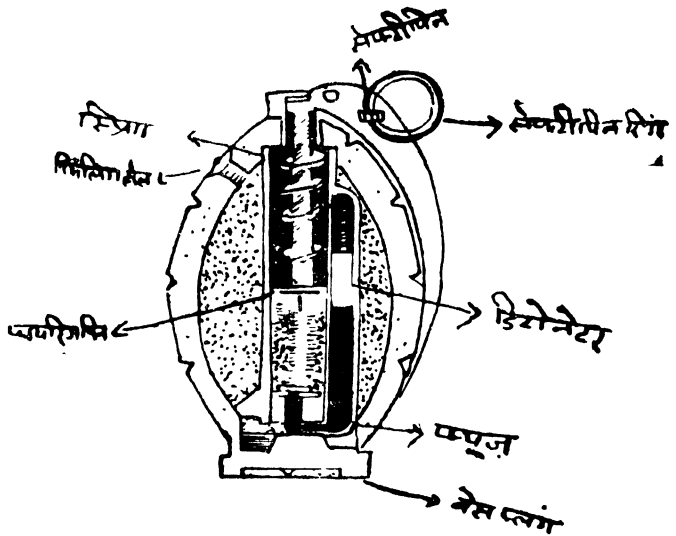
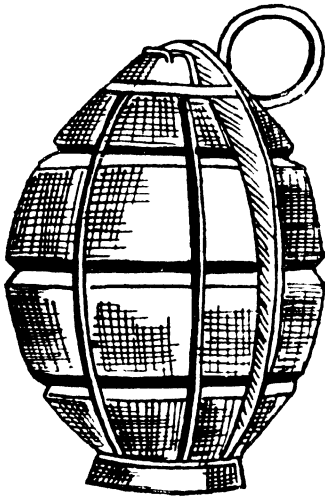
७. फायर गति अधिकतम— १८ राउण्ड प्रति मिनट
क्रमबद्ध — ४ राउण्ड प्रति मिनट

८. राकेट की लम्बाई — २३ इंच

९. राकेट का भार — ६ पौंड

१०. राकेट फायर करते समय करने वाले को कोई धक्का नहीं लगता।

बजूका में मुख्य कमी यह है, कि इसकी मार थोड़ी दूर तक है एवं निशाना सदैव अचूक नहीं है। क्योंकि बजूका-राकेट की गति ३०० फीट प्रति सै० ही होती है। दूसरे छोड़े जाने पर इसका जलता हुआ धुंआ नाल के पीछे की ओर से निकलता है।



टैंक मार हथगोले

ये स्थल (पैदल) सेना के सेक्शन के टैंक मार हथियार हैं। जिन मार्गों से शत्रु टैंको के आगे बढ़ने का भय हो उन पर गोलें फायर करने वाले सैनिक लगा

दिए जाते हैं और मार्ग को अवरुद्ध कर शत्रु टैंकों को नष्ट कर देते हैं। भारत पाक युद्ध में भारतीय सैनिकों ने आगे घड़कर अचूक निशाने बाजी से पैटन टैंकों को नष्ट कर अम्बार लगा दिए जिससे विश्व चकित रह गया। आगे कुछ हथ गोलों का विवरण निम्न है।

७३ मी०मी० स्टीम ग्रनेड

- | | |
|----------------------------------|-----------------------------|
| १. लम्बाई | — १६ इंच |
| २. भार | — १ पौंड ११-१/४ औंस |
| ३. मारक दूरी गतिशील लक्ष्यों पर— | ८० गज |
| स्थिर लक्ष्यों पर— | १५० गज |
| ४. लोहे में प्रवेश करने की शक्ति | |
| | ६०° पर टकराने पर १२ इंच तक |
| | ६५° पर टकराने पर ३.५ इंच तक |
| ५. व्यास | — ७३ मी० मीटर |

३७ इनरजक हथगोला

- | | |
|-----------------|----------------------|
| भार | — १ पौ० ६ औंस |
| लम्बाई | — १४-३/४ इंच |
| अधिकतम मार | — २४५ गज से २६५ गज |
| प्रभाव शाली मार | — ५० गज |
| भेदन शक्ति | — ११ इंच मोटी इस्पात |

इसे नम्बर ४ एम० के०। राइफल पर प्रक्षेपक लगाकर विशेष गोली द्वारा फायर किया जाता है।

हथगोले विभिन्न प्रकार के होते हैं जैसे विस्फोटक धुआँ छोड़ने वाले तथा टैंक मार। इनके अतिरिक्त प्रशिक्षण कार्यों के लिए डमी हथगोले भी होते हैं।

पूर्व जिन हथियारों का वर्णन किया गया है। उन्हें मुख्यतः पैदल सेना प्रयोग करती हैं। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से बड़े बड़े आग्नेयास्त्र हैं जो पैदल सेना को सहारा देते हैं।

विमान भेदी तोप:—सेना को शत्रु विमानों की बमबारी का अत्याधिक भय रहता है। इनका सामना करने के लिए विमान भेदी तोपें बनाई गईं। आधुनिक विमान भेदी तोप में एक रडार भी लगा होता है, जिससे शत्रु विमान की स्थिति का ज्ञान तथा लक्ष्य-संधान स्वचालित यंत्रों द्वारा स्वयंमेव होता है। भारत पाक संघर्ष

१९६५ अमृतसर में १६ विमानों को विमान भेदी तोप द्वारा गिराकर राजू ने अचूक निशाने बाजी का रिकार्ड स्थापित किया !

प्रक्षेपणास्त्र (मिसाइल) :—यह ऐसा आग्नेयास्त्र है जिसे छोड़ने के पश्चात् भी स्वयं अपनी शक्ति से लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए इसके मार्ग में परिवर्तन किया जा सकता है। जिससे इसका निशाना अचूक रहता है। ऐसे अस्त्रों को नियंत्रित प्रक्षेपणास्त्र कहते हैं।

वर्तमान नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्रों का विकास यद्यपि अभी कुछ वर्षों पूर्व हुआ है। किन्तु विनाशकारी कार्य हेतु किसी चीज को धक्के के साथ आकाश में छोड़ने का विचार मानव मस्तिष्क में सैकड़ों वर्ष पूर्व जन्म ले चुका था। आस्ट्रेलिया के आदिवासियों द्वारा प्रयोग में किये जाने वाला “बूमरैंग” सबसे प्रथम नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्र कहा जा सकता है। भारत में भी महाभारत एवं रामायण काल में नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्रों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। इसके बनाने का ढंग ऐसा है कि उपयुक्त विधि से फेंकने के पश्चात् यह लक्ष्य को मारकर पुनः फेंकने वाले के पास वापिस आ जाता है।

नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्र क्या है ?

मामान्य रूप से किसी भी प्रक्षिप्त (प्रोजेक्टाइल) को, जैसे आकाश में फेंका गया पत्थर, बन्दूक की गोली या बारूद के गोले को, प्रक्षेपणास्त्र कह सकते हैं। दिवाली के अवसर पर बच्चों द्वारा चलाई जाने वाली आतिशबाजी भी प्रक्षेपणास्त्र का ही एक रूप है नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्र की यह विशेषता है कि यह बिना चालक के चलता है और अपनी उड़ान को स्वयं नियन्त्रित करता है। प्रक्षेपणास्त्र नियन्त्रित और अनियन्त्रित दोनों प्रकार के होते हैं। अनियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्र को छोड़ने के पश्चात् नियन्त्रित नहीं किया जा सकता, परन्तु नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्र में इस प्रकार की व्यवस्था होती है।

प्रक्षेपणास्त्र हल्के व भारी दोनों प्रकार के होते हैं। टैंक तोड़ प्रक्षेपणास्त्र लगभग २३ पौंड के होते हैं, जबकि टाइटन नामक अन्तर्महाद्वीपीय बैलिस्टिक प्रक्षेपणास्त्र का भार ११० पौंड है। साधारणतया नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्रों को दो भागों में बाँट सकते हैं।

१. **बैलिस्टिक प्रक्षेपणास्त्र**—इसकी तुलना तोप से निकले गोले से की जा सकती है जिसमें सीमित दूरी तक जाने की शक्ति होती है और निश्चित दूरी तक नियन्त्रित रहता है।

२. **सम्पूर्ण नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्र**—इसके द्वारा अस्थिर चीजों को लक्ष्य बनाया जाता है जैसे उड़ता हुआ वायुयान, इसमें छूटने से लेकर लक्ष्य से टकराने समय तक प्रक्षेपणास्त्र को पूर्व निश्चिन निर्देशन के आधार पर चलाया जाता है।

नियन्त्रित प्रक्षेपणास्त्रों को, छोड़ने के स्थानानुसार निम्न भागों में बाँट सकते हैं ।

१. जमीन से जमीन पर वार करने वाले प्रक्षेपणास्त्र (सरफेस-टु-सरफेस मिसाइल)
२. जमीन से आकाश की ओर मार करने वाले प्रक्षेपणास्त्र (सरफेस-टु-एयर मिसाइल)
३. आकाश से आकाश में मार करने वाले प्रक्षेपणास्त्र (एयर-टु-एयर मिसाइल)
४. आकाश से जमीन की ओर मार करने वाले प्रक्षेपणास्त्र (एयर-टु-सरफेस मिसाइल)

खण्ड ३

क्षेत्र कौशल [फील्ड क्राफ्ट]

क्षेत्र कौशल का ज्ञान सैनिकों के हेतु अति आवश्यक है। स्थल सेना के राष्ट्रीय छात्र सैनिकों को इसका अध्ययन कराया जाता है। क्षेत्र कौशल वह कला है जिसके द्वारा प्राकृतिक एवं बनावटी तल स्थलों का भलि प्रकार प्रयोग किया जाय एवं प्रत्येक परिस्थितियों में इस कला का सर्वोत्तम लाभ उठाकर हथियारों का उचित उपयोग कर शत्रु को नष्ट किया जाता है। फील्ड क्राफ्ट का ज्ञान जंगली जानवरों एवं जंगल के आदिवासियों को प्राकृतिक देन है लेकिन सभ्य नागरिकों के लिए भी इसका ज्ञान परमावश्यक है।

उद्देश्य

१. शत्रु के आभास बिना उसके समीप पहुँच जाना।

२. शत्रु के आभास बिना सुरक्षित क्षेत्र में पहुँच जाना।

क्षेत्र कौशल अधिकारी एवं सैनिक में निम्न गुणों का होना अति आवश्यक है।

१. किसी भी प्रकार के तल स्थल अध्ययन की क्षमता, जिससे कि तल स्थल का सम्भावित लाभ उठाया जा सके !

२. अपने सैनिकों को सुरक्षात्मक संरक्षण प्रदान कर शत्रु मार्ग में अधिक से अधिक बाधाएँ उत्पन्न करने की योग्यता हो।

३. आसूचना (इन्टेलीजेन्स)

४. शारीरिक क्षमता का ध्यान, क्योंकि इसके द्वाराही शान्त एवं तीव्र गति से कारवाई की जा सकती है।

५. मानसिक क्षमता के द्वारा आमने सामने के युद्ध में शत्रु को नष्ट किया जा सकता है।

६. शस्त्रों का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है जिससे कि परिस्थिति अनुसार उनका प्रयोग किया जा सके।

७. अनुशासन द्वारा युद्ध जीते जाते हैं एवं अभाव में पराजय का मुँह देखना होता है अतः आदेशों का पालन उत्साह पूर्वक आवश्यक है।

क्षेत्र कौशल के निमित्त निम्न बातों का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

फील्ड क्राफ्ट सर्वव्यापी है :—युद्ध के लिए क्षेत्र सीमित नहीं होता वह मैदानी क्षेत्र, नगर, गांव, जंगल, मरुस्थल, पर्वतीय क्षेत्र एवं हिम क्षेत्र आदि में भी लड़ा जाता

है। अतः क्षेत्र कौशल प्रशिक्षण में उपरोक्त स्थलों के अध्ययन का ध्यान रखा जाता है। जिसमें कि ज्ञान क्षमता का लाभ उठाकर सब को पता चले बिना उसके समीप पढ़ना

है। अतः क्षेत्र कौशल प्रशिक्षण में उपरोक्त स्थलों के अध्ययन का ध्यान रखा जाता है। जिसमें कि ज्ञान क्षमता का लाभ उठाकर सब को पता चले बिना उसके समीप पढ़ना

तल स्थल [ग्राउंड]

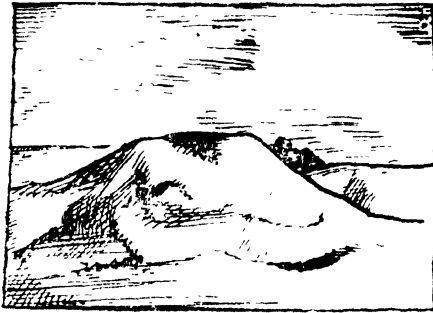
पृथ्वी पर भाँति-भाँति के तल स्थल है प्रत्येक प्रकार के तल स्थल की स्थल सेना के लिए अपनी विशेषता है। इन्हीं तल स्थलों का सुरक्षात्मक एवं आक्रामणात्मक हेतु अध्ययन अति आवश्यक है इन तल स्थलों का निम्न प्रकार वर्गीकरण किया जा सकता है।



१. ढूटी भूमि—इस प्रकार के तलस्थल समतल नहीं होते अपितु प्रकृति ने ही उन्हें ऊँचा नीचा बनाया है। शत्रु से सुरक्षा के लिए यह लाभप्रद है किन्तु पर्यवेक्षण के लिए यह बाधा उत्पन्न करती है और तीव्र गति से कारवाई में बाधक है।



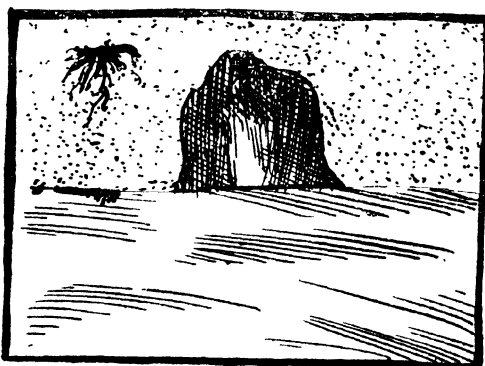
२. समतल खुली भूमि—समतल खुली भूमि में किसी प्रकार की बाधा मार्ग में नहीं आती। पर्यवेक्षण एवं तीव्र गति से कारवाई करने में सहायक होती है किन्तु साथ-साथ पूर्णतया अरक्षित होती है।



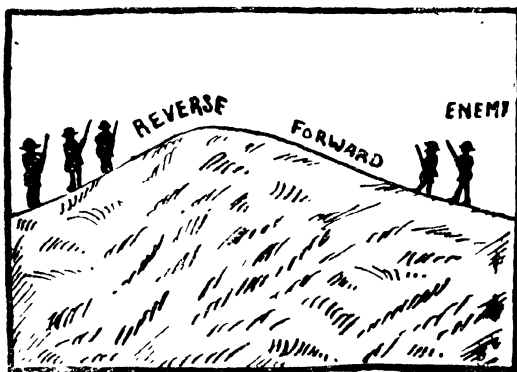
३. ऊँची भूमि—इस प्रकार की भूमि तुलना में समीपवर्ती स्थान से ऊँची होती है। यह पर्यवेक्षण एवं शत्रु पर गोला बारी करने के लिए अति उत्तम होती है। लेकिन शत्रु को आसानी से इसका पता चल जाता है। इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। जब तक कि समीपवर्ती ऊँचे तल स्थल भी अपनी सेना के नियन्त्रण में न हो।



४. नीची भूमि—इस प्रकार की भूमि समीपवर्ती तल स्थल की होती है किन्तु गहरी नहीं। यह शत्रु की दृष्टि से ओझल होने तथा गोलाबारी के लिए अति उत्तम है। किन्तु उच्च स्तरीय पर्यवेक्षण अच्छा नहीं होता यहां तक कि स्वयं के हथियारों द्वारा की गई कारवाई का अवलोकन करने में सैनिक असमर्थ होता है।



५. दबी भूमि—इस प्रकार के क्षेत्र को गोली चलाने वाला नहीं देख सकता। यह तल स्थल अच्छी सुरक्षा प्रदान करते हैं। शत्रु से ओझल रहने में सहायक है, किन्तु शत्रु की गोलाबारी से सदैव सुरक्षित नहीं रह सकता। क्योंकि अपने ही अवलोकन में यह बाधक है। अतः जहाँ तक सम्भव हो दबी भूमि के प्रयोग से कारवाई में बचना चाहिए।



६. अगली ढलान—पहाड़ी का वह ढलान जो शत्रु की ओर होता है। यह शत्रु के अवलोकन तथा गोलाबारी में हथियारों का भली प्रकार प्रयोग करने के लिए उत्तम रहता है। किन्तु शत्रु की गोलीबारी से स्वयं को ओझल रखने में कठिनाई रहती है।

७. उलटी ढलान—पहाड़ी का वह ढलान जो अपने सैनिकों की ओर होता है। शत्रु देखने में असमर्थ होता है, तथा उसकी सीधी गोलाबारी से सुरक्षा प्राप्त होती

है। यदि आसूचना विभाग भली प्रकार सक्रिय रहे तो सुरक्षा के साथ-साथ आश्चर्य-जनक परिणाम प्राप्त करने में सफलता मिलती है।

तल स्थल के अध्ययन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आक्रमण के समय मार्ग में नदी नाले पुल, सड़कें, गड्ढे, पेड़, झाड़ियां, संकरे मार्ग आदि आते हैं अतः चित्र ज्ञान (मैपरीडिंग) में दक्षता प्राप्त करनी अनिवार्य है। तल स्थल व चित्रज्ञान में दक्षता के कारण ही अधिकारी छोटी टुकड़ियों से ही शत्रु की विजय को पराजय में बदलने में सफल होते हैं।

अधिकारी एवं सैनिकों के लिए अग्रिम पंक्ति में यह आवश्यक है कि सीमा का एक छोर से दूसरे छोर तक भली प्रकार निरीक्षण करें। शत्रु की खोज कर स्थान को उनसे रिक्त करें। अपने सैनिकों से शत्रु अन्तर का निर्णय करने के साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि शत्रु तल स्थल को किस प्रकार सुरक्षात्मक व आक्रामात्मक रूप में प्रयोग करने की क्षमता रखता है। उसी के अनुसार अपने सैनिकों को तल स्थल के प्रयोग का आदेश देना श्रेयकर होता है। शत्रु को कभी भी अज्ञान, शक्तिहीन नहीं समझना चाहिए। अतः तल स्थल का अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

दूरी आँकना

प्रत्येक सैनिक को बिना मापक यन्त्र के सम्भावित उचित अन्तर का निर्णय लेने में प्रशिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शत्रु का पता लगाने एवं अधिकतम प्रभाव शाली गोलाबारी के लिए इसका ज्ञान परमावश्यक है। मुख्यतया हल्की मशीन गन की गोलाबारी में इसकी बड़ी जरूरत है, आमतौर से पैदल सैनिक ३०० गज से ऊपर की रेंज में गोलाबारी नहीं करते हैं, किन्तु १००० गज तक की दूरी को आँकने की क्षमता होती है जिससे कि—

१. सहायक हथियार यूनिट को अचूक लक्ष्य का संकेत देते हैं।
२. अवलोकन का कार्य करते समय शत्रु का विस्तार पूर्वक सही विवरण भेजते हैं।

अन्तर आँकने में आमतौर से दो विधियों को प्रयोग में लाते हैं

१. फायर अवलोकन द्वारा
२. अन्तर को आँकने द्वारा

फायर अवलोकन द्वारा सदैव दूरी आँकना सम्भव नहीं है। दूरी आँकने के निमित्त गोलाबारी से अम्युनिशन की बरबादी ही होती है। मुख्यतया निम्नप्रणालियों को दूरी आँकने में प्रयोग करते हैं।

१. **माप-इकाई प्रणाली**—(यूनिट मेजर) इस विधि में अपनी यूनिटों के अन्तर द्वारा दूरी आँकी जाती है। आमतौर से एक यूनिट का दूसरी यूनिट से १०० गज का अन्तर होता है। यह विधि कम दूरी को आँकने में अच्छी है, जबकि तल स्थल पर देखने में कोई बाधा न हो। राष्ट्रीय छात्र सैनिकों के अभ्यास के लिए १०० गज ३०० गज ४०० गज के अन्तर से झंडे गाड़ देने चाहिए एवं छात्र सैनिकों को खड़े, झुके हुए, बैठे हुए और लेटे हुए की स्थिति से दिखलाना चाहिए।

२. **निश्चित परास प्रणाली**—(कीरेंज) इस विधि में रेंज की मार के संदर्भ में निश्चित अन्तर की दूरी का आभास किया जाता है। आमतौर से तार के खम्भों की दूरी एवं मील के अन्तर पर लगे झण्डों से जानकारी प्राप्त की जाती है, इस प्रकार इन लक्षणों से उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।

३. **आभास प्रणाली**—(अप्पीरियन्स) इस विधि में दृष्टिगोचर हुए अन्तर का आभास कर निर्णय लिया जाता है। दूरी पर खड़ा मनुष्य विभिन्न दूरियों पर निम्न प्रकार दृष्टि गोचर होता है।

१. २०० गज—शरीर के सब अंग भली प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं ।

२. ३०० गज—चेहरे की स्पष्ट रूप रेखा अदृश्य होती है ।

३. ४०० गज—मनुष्य एक बोतल की भांति दीखता है क्योंकि सैनिक राइफल के फोर साइट में छुप जाता है शरीर के दृष्टि गोचर होने के साथ चेहरे को पहचानना कठिन होता है ।

४. ५०० गज—शरीर सिर की ओर गावदुमाकार दिखाई देता है, गति से ही अन्य अवयवों के अन्तर का आभास होता है ।

५. ६०० गज—शरीर गावाडुमाकार दिखाई देता है, एवं अंगों को देखा नहीं जा सकता मनुष्य एक बिन्दु की भांति दृष्टिगोचर होता है ।

४. बंधनी प्रणाली—(ब्रोकटिंग) इस विधि में अवलोकनकर्ता सम्भावित, अधिकतम एवं न्यूनतम दूरी का अनुमान लगाता है । तब या तो अधिकतम और न्यूनतम दूरी पर दो गोलियाँ छोड़कर अन्तर का अनुमान लगाता है या अन्य साधनों द्वारा अवलोकन कर्ता सम्भावित दूरी का अनुमान करता है । तोपखाना आमतौर से इस विधि को प्रयोग में लाता है ।

५. अर्द्धान प्रणाली—(हार्विग मेथड) इस विधि में दूर की वस्तु के आधे अन्तर को लिया जाता है । एवं इस अन्तर का पहले अनुमान किया जाता है । तब रेंज को दुगना कर वास्तविक अन्तर को प्राप्त किया जाता है ।

६. औसत प्रणाली—इस विधि में सेक्शन कमान्डर अपने सेक्शन के सैनिकों से अन्तर का अनुमान लगाने के लिए कहता है । तब सैनिकों के अनुमानित अन्तर से सेक्शन कमान्डर औसत निकालता है और यह औसत ही वास्तविक दूरी मानी जाती है ।

उपरोक्त किसी भी विधि का सैनिक या अधिकारी प्रयोग करे, किन्तु प्रत्येक को यह ध्यान रखना चाहिए, कि यह वास्तविक दूरी नहीं है, अपितु अनुमानित दूरी है । इस अनुमानित दूरी को ऋतु, प्रकाश स्थिति तथा प्राकृतिक तल स्थल, प्रभावित करते हैं ।

छिपाना [कनसीलमेन्ट]

स्वयं को शत्रु से छिपाना और छुपे हुए शत्रु की गोलाबारी पर दृष्टि रखते हुए अपने हथियारों का प्रभावशाली प्रयोग करते रहना भी एक कला है। शत्रु गोलाबारी का परिहरण स्वयं को छिपाने में सहायक होता है। यह सुरक्षात्मक एवं आक्रामणात्मक हेतु अति आवश्यक है। आधुनिक युग का सैनिक अपने शरीर पर किसी प्रकार का कवच आदि नहीं पहनता है। अतः सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक प्राप्त तल स्थल का प्रयोग करता है। एक बात और ध्यान में रखनी आवश्यक है, आधुनिक युग में तल स्थल पर स्वयं को छिपाने के अतिरिक्त आकाश अवलोकन से भी छिपाना परमावश्यक है।

आवरण—शत्रु अवलोकन एवं गोलाबारी से बचने के लिए तल स्थलों के लक्षणों से जो सुरक्षा प्राप्त होती है उसे आवरण कहते हैं। शत्रु अवलोकन से सुरक्षात्मक आवरण को 'नजरी आड़' कहते हैं। नजरी आड़ में सदैव गोलाबारी से बचना मुश्किल होता है इसलिए शत्रु अवलोकन एवं गोलाबारी से सुरक्षा के लिए जो आवरण होता है उसे "फायर से आड़" कहते हैं। प्रशिक्षण काल में इसकी ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। जिससे कि युद्ध काल में समय अभाव के होते हुए उचित आवरण का चुनाव कर सके। नजरी आड़ में हानि की सदैव आशंका, किन्तु 'फायर आड़' में कभी कभी रहती है। तल स्थल से आमतौर पर निम्न प्रकार के आवरण प्राप्त होते हैं।

१. तरंगण तह तल स्थल—(अनडूलेशन एण्ड फोल्ड) तरंगण तह स्थल आसानी से प्रत्येक प्रकार के तल स्थल में प्राप्त हो जाते हैं। यह शत्रु अवलोकन से अच्छी सुरक्षा प्रदान करते हैं। यदि होशियारी से इनका लाभ उठाया जाय तो शत्रु गोलाबारी से भी रक्षा की जा सकती है।

२. गढ़डे, सूखी नालियां, सड़क ढलान—इसकी उपलब्धि सदैव सम्भव नहीं है। ये शत्रु अवलोकन एवं गोलाबारी से अच्छी आड़ देते हैं।

३. बाड़ एवं भाड़ियां—छोट-छोटी भाड़ियां आमतौर से प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध हो जाती हैं, जबकि "बाड़" नहीं यह केवल शत्रु दृष्टि से ओझल होने में सहायक होती है, गोलाबारी में नहीं। यदि तल स्थल पर थोड़ी ही भाड़ियां हैं, तब शत्रु आसानी से पता लगा सकता है।

४. **खड़ी फसले**—गाँवों में खड़ी फसलों का आड़ हेतु प्रयोग उसकी ऊंचाई पर निर्भर करता है जो कि विभिन्न ऋतुओं में उपलब्ध होती है। शत्रु दृष्टि से छुपाव के लिए अति उत्तम है किन्तु गोलाबारी से नहीं। वैसे फसलों में छिपने से तनिक हथियार एवं स्वयं की गति से ही शत्रु को आभास हो जाता है।

५. **बाग और लकड़ियाँ**—इनकी उपलब्धि सदैव कठिन है। शत्रु अवलोकन एवं गोलाबारी से अच्छी सुरक्षा प्राप्त होती है। यदि उपलब्धि पर होशियारी से इसका लाभ उठाया जाय तो शत्रु को आसानी से तंग करने में सहायक होता है।

६. **भोंपड़ी और भवन**—यदि पूर्ण भोंपड़ी और मकान उपलब्ध न हों तो उनके टूटे भाग आमतौर से उपलब्ध हो जाते हैं। गोलाबारी एवं छुपाव के हेतु अच्छी आड़ प्रदान करते हैं। किन्तु शत्रु को पता लगाने में आसानी होती है और कारवाई की गति में शिथिलता आ जाती है।

७. **कच्ची पक्की दीवार**—आमतौर से टूटी फूटी दीवारें उपलब्ध हो जाती हैं जो कि कारवाई की गति, तथा शत्रु से सुरक्षात्मक सहायता प्रदान करती है। किन्तु शत्रु आसानी से पता लगा सकता है।

आवरण के कुछ स्थायी सिद्धान्त हैं, यदि समझदारी से उनका प्रयोग किया जाय तो, छिपने में सहायक होते हैं। अँग्रेजी का बासवूफ (BASSWOOFF) शब्द का प्रत्येक अक्षर छुपाव के सिद्धान्तों का द्योतक है।

१. **'ब' पृष्ठ-भूमि**—(बैंक-ग्राउंड)—पृष्ठ-भूमि के चुनाव में सतर्कता बरतनी चाहिए। सैनिक पोशाक से मिलती जुलती पृष्ठ-भूमि श्रेष्ठ होती है। टूँचों का निर्माण भी पृष्ठ-भूमि को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। पृष्ठ-भूमि के सन्दर्भ में यह ध्यान रखना जरूरी है, कि आकाश से देखने पर खड़ा सैनिक पृष्ठ-भूमि में तल स्थल दृष्टिगोचर हो।

२. **'ए' एयर क्राफ्ट**—छुपाव की योजना में वायुयान को सदैव मस्तिष्क में रखना चाहिए। क्यों कि खुले स्थान एवं प्रतिछाया को पता लगाने में वायुयान को आसानी रहती है। अतः जहाँ तक सम्भव को वायुयान की ओर ऊपर नहीं देखना चाहिए।

३. **'एस' दीप्तिमान (शाइन)**—चमक दूर से आँखों को अपनी ओर खींच लेती है, अतः हर प्रकार की चमक अग्रोह्य है। इसलिए अपने साथ कोई चमकीली धातु का टुकड़ा भी नहीं रखना चाहिए। हथियारों व पौशाक के चमकीले भागों को काला कर देना चाहिए।

४. **'एस' क्षितिज रेखा (स्काई लाइन)**—क्षितिज रेखा एक छोटी वस्तु को भी बनाती है। तनिक गति से पता लगाने में सहायता प्राप्त होती है। इसलिए क्षितिज रेखा का दिन एवं रात्री में भी ध्यान रखना चाहिए।

५. 'डब्ल्यू' जल प्रतिबिम्ब (वाटर शैंडो) — शान्त जल विपर्ययस्थ क्षितिज रेखा का कार्य करता है। यदि कोई स्वयं को पानी के समीप स्थान में छुपाना चाहता है। तो उसके जल प्रतिबिम्ब द्वारा स्थल तथा वायुयान से उसका पता लगाने में आसानी रहती है। अतः जल प्रतिबिम्ब के अभिशाप से दूर रहना चाहिए।

६. 'ओ' शूतुर मुर्ग चाल (आट्रिच वाफ) — नीची दीवार के पास चलने और दौड़ने में यह आम प्रवृत्ति है। कि जिस विधि से वह चलता और दौड़ता है, शूतुरमुर्ग की भांति प्रतीत होता है। यदि कोई सैनिक इस विधि से थोड़े ही अन्तर तक चलता है तब आभास हुए बिना ही उसका सिर ऊपर जाता है नीची दीवार से ऊपर चला गया तो यह भेद्य होगा। इसलिए शूतुरमुर्ग चाल से दूर रहना चाहिए।

७. 'ओ' अवलोकन (ओबजरवेशन) — अवलोकन एवं गोलाबारी सदैव पार्श्व से घुमावदार या आवरण में करनी चाहिए ऊपर से नहीं।

८. 'एफ' मन्द होना (फॉइंग) — जब कोई एक स्थान से दूसरे स्थान को मन्द गति से चलता है तो तीव्र गति से चलने की तुलना में अदृश्य रहता है।

९. 'एफ' हिमीकरण (फीजिंग) — रुकने या दीप्ति अवस्था में हिमीकरण प्रतीत होना चाहिए क्योंकि तनिक गति से ही आँखें आकर्षित हो सकती है। शान्त मुद्रा में खड़े रहने पर कोई भी दूसरी वस्तु समझने की स्वाभाविक गलती कर सकता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है, कि छिपाव क्रिया में सैनिक का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व है। आवरण का चुनाव होशियारी एवं तीव्र गति से करना चाहिए। तथा अपनी स्थिति को दृढ़ बनाना चाहिए सैनिक के लिए यह आवश्यक है, कि वह ध्यान रखे कि छिपाव से ही वह सुरक्षित नहीं है। एक आवरण से अधिक समय तक गोलाबारी नहीं करनी चाहिए, बाधाओं पर धैर्य, उत्साह से विजय प्राप्त होती है।

छद्मावरण

शत्रु से स्वयं को बनावटी विधि में अपनी पृष्ठभूमि के अनुसार छुपा लेना छद्मावरण कहलाता है। युद्ध क्षेत्र में छद्मावरण अति आवश्यक है। तल स्थल से ही सदैव आवरण प्राप्त होना कठिन है। शत्रु अवलोकन से अपने सैनिकों, हथियारों आदि को छिपाना जरूरी होता है। अतः छिपने के लिए छद्मविधि ग्रहण की जाती है जिसके नियम निम्न हैं।

१. अपने चेहरे और लोहे के टोप को स्थानीय बनस्पति से छिपाना चाहिए।

२. ताजी बनस्पति का प्रयोग करना चाहिए।

३. हथियारों एवं पोशाक के चमकदार अवयवों को काला कर देना चाहिए।

४. रंग परिवर्तन समीपवर्ती तल स्थल के अनुसार करना चाहिए।

५. आवश्यकतानुसार स्थान परिवर्तन सामान की चिन्ता किए बिना करना चाहिए और नए स्थान पर नए सामान का प्रयोग करना चाहिए।

६. स्थान परिवर्तन में अपने पीछे किसी प्रकार का चिह्न नहीं छाड़ना चाहिए।

७. छद्मावरण असीमित नहीं करना चाहिए।

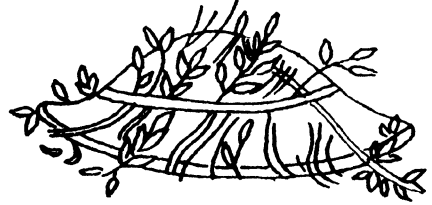
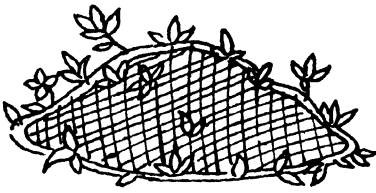
८. किसी भी गति शील लक्ष्य पर छद्मावरण नहीं करना चाहिए।

सैनिक को यह ध्यान रखना चाहिए कि छद्मावरण से लाभ के साथ साथ हानियाँ भी हैं।

१. जब कोई लक्ष्य स्थिर है और छद्मावरण पृष्ठभूमि के अनुपात से बनाया गया है यह छिपने के उद्देश्य से सर्वोत्तम होता है।

२. विधि अनुसार छद्मावरण से आश्चर्य का प्रादुर्भाव होता है।

३. छद्मावरण की गति पर आकर्षित होना स्वाभाविक है, तनिक भूल से हानि को निमन्त्रण देना होता है। अतः सैनिक को विधि अनुसार धारण किए छद्मावरण से गति शील इस प्रकार होना चाहिए, कि उसकी तुलना फोटोग्राफी के धुंधले-पन से की जा सके।



लोहे के टोप आदि को होशियारी से बनस्पति द्वारा छिपाना चाहिए, क्योंकि लापरवाही का छद्मावरण प्रभावशाली नहीं हो सकता। राष्ट्रीय छात्र सैनिकों को इन कलाओं के आधारभूत सिद्धान्तों की जानकारी देना परमावश्यक है।

फायर स्थिति—प्रशिक्षण काल में ही सैनिक को इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए, कि हर प्रकार के तलस्थल पर फायर स्थिति को भली प्रकार ग्रहण कर सके। यह सम्भव नहीं है कि प्रत्येक भाँति के तलस्थल पर हथियारों का सुरक्षित रूप में प्रयोग किया जा सके। निश्चित कोण की स्थिति से ही स्वयं, अवलोकन तथा गोलाबारी सुरक्षित की जा सकती है। अतः तनिक संकेत पर ही उचित फायर स्थिति ग्रहण करनी चाहिए।

फायर स्थिति के गुण—आदर्श फायर स्थिति में—

१. लक्ष्य एवं तलस्थल को सुविधानुसार देखा जा सके।
२. शत्रु अवलोकन, तलस्थल और आकाश की गोलाबारी से भली प्रकार साँड़ हो।
३. आने जाने के मार्ग की सुरक्षित साँड़ हो।
४. प्रत्येक दिशा में हथियारों को भली प्रकार प्रयोग करने की सुविधा हो।
५. सैनिक उस स्थिति में अधिक समय तक रह सके।
६. समीपवर्ती क्षेत्र में उत्तम फायर स्थिति प्राप्त हो सके।
७. कोई महत्वपूर्ण लक्षण समीप नहीं होना चाहिए।

सैनिक को यह स्मरण रखना चाहिए कि आदर्श फायर स्थिति कठिनता से प्राप्त होती है। अतः हथियार का जिस तल से प्रयोग करना है, वहाँ पर हथियार की थिति होशियारी से लेनी चाहिए।

: ६ :

प्रेक्षण

प्रत्येक स्थिति में प्रेक्षण (ओबजरवेशन) महत्वपूर्ण है। “पहले देखो पहले गोली मारो” के सन्दर्भ में ही प्रेक्षण का महत्व प्रकट होता है। प्रेक्षण व्यवितगत एवं सहयोगियों के साथ किया जा सकता है। लेकिन अवलोकन से पूर्व प्रेक्षण कर्ता को यह जानना आवश्यक है, कि उसे क्या और किस लिए देखना है ? क्योंकि इसके बिना वह भली प्रकार प्रेक्षण का कार्य नहीं कर सकता। प्रत्येक सैनिक अच्छा प्रेक्षक नहीं हो सकता, अतः प्रशिक्षण काल में ही खोजकर उनको इस कला में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है।

दिन और रात्री की प्रेक्षण विधि में अन्तर होता है। लेकिन प्रेक्षण विधि के कुछ आधारभूत सिद्धान्त हैं। जोकि निम्न हैं—

१. प्रेक्षण चौकी का चुनाव (ओ० पी०)

प्रेक्षण कर्ता सर्वप्रथम प्रेक्षण चौकी (ओबजरवेशन पोस्ट) का चुनाव करता है और चुनाव करते समय निम्न बातों का ध्यान आवश्यक है।

(अ) ओ० पी० अपने क्षेत्र से आगे होनी चाहिए।

(ब) जिस स्थान से प्रेक्षण का कार्य किया जाय, ओ० पी० उससे ऊंचाई पर होनी चाहिए।

(स) ओ० पी० का खुला स्थान नहीं होना चाहिए।

(द) ओ० पी० आड़ में हो, तथा उस तक पहुँचने और आने में आड़ प्राप्त करने की सुविधा हो। यदि आड़ प्राप्त न हो तो ऐसे स्थान का चुनाव करना चाहिए, जिसकी पृष्ठभूमि में प्रेक्षण कर्ता घुल मिल जाय।

(ल) क्षितिज रेखा में ओ० पी० नहीं होनी चाहिए।

(य) पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए ओ० पी० होनी चाहिए।

(र) ओ० पी० स्थापित करने में छाया को महत्व देना चाहिए।

२. प्रेक्षण चौकी पर ध्यान रखने योग्य बातें

(अ) ओ० पी० पर संचलन जहाँ तक सम्भव हो नहीं होना चाहिए यदि संचलन आवश्यक हो जाय तो उसकी गति अति धीमी हो।

(ब) प्रेक्षण कार्य आवरण सहित वृत्ताकार होना चाहिए, ऊपर नहीं।

(स) प्रेक्षण कर्ता को छद्मावरण में होना चाहिए।

(द) धूमपान नहीं होना चाहिए, क्योंकि धुंए और प्रकाश किरण को दूर के अन्तर से देखा जा सकता है।

(ल) प्रेक्षण कर्त्ता को पैर खोलकर या कुल्हे पर हाथ रखकर खड़ा नहीं होना चाहिए।

(य) अवलोकन क्षेत्र को दाएं, बाएं व मध्यादि भागों में विभक्त कर लेना चाहिए। लक्षणों को नोट करते रहना चाहिए जिससे गलती को भली प्रकार सुधारा जा सके।

(र) प्रेक्षण कर्त्ता को शत्रु संकेतों और संचलन की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

(व) यदि किसी कमरे का अवलोकन करना है, तब प्रेक्षण कर्त्ता को खिड़की या दरवाजे से काफी पीछे रहकर करना चाहिए। जहाँ तक भी सम्भव हो सके परस्पर वार्तालाप या किसी भी प्रकार की ध्वनि नहीं होनी चाहिए।

३. प्रेक्षण टीम द्वारा

यदि कोई टीम प्रेक्षण हेतु नियुक्त होती है तो उसके लिए हर प्रकार का अवलोकन जरूरी है। टीम अधिकारी का उत्तरदायित्व है कि वह भली प्रकार योजना बद्ध कार्य का संचालन करे, इसके लिये कोई निश्चित विधि नहीं है। सेक्शन कमान्डर को निरन्तर हर प्रकार की देख भाल करनी चाहिए, तथा हर प्रकार के अवलोकन की सूचना अधिकारी को तुरन्त भेजनी चाहिए एवं अधिकारी को अपने उच्चाधिकारी को यह सूचना लाग बुक में नोट कर तुरन्त भेजनी चाहिए।

४. रात्री अवलोकन

(अ) रात्री तथा कुहरे के प्रेक्षण कार्य में बहुत परिश्रम करना पड़ता है। अतः कम समय निमित्त दो-दो की टोली में अवलोकन कार्य सौंपना चाहिए।

(ब) प्रेक्षण कर्त्ता को दिन या मध्यम प्रकाश में तल स्थल का निरीक्षण करके, तल स्थल के लक्षणों को नोट कर याद रखना चाहिए, जिससे कि पहचानने में अनियमितता का पता चल सके।

(स) प्रेक्षण कर्त्ता को एक लक्ष्य पर अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। क्योंकि इससे लक्ष्य गतिमान सा प्रतीत होता है।

(द) प्रेक्षण कर्त्ता को नीचे स्थल तथा रात्री में तल स्थल से अवलोकन करना चाहिए।

(ल) प्रेक्षण कर्त्ता को शान्त रहना चाहिए।

(य) प्रेक्षण कर्त्ता को कानों तथा आंखों का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि ध्वनि से महत्व पूर्ण सूचना प्राप्त की जा सकती है !

(र) प्रेक्षण कर्ता को सचेत रहना चाहिए अगर उसके समीप से हल्का फायर किया जाता है तो उसे शान्त रहना चाहिये !

(व) रात्रि के अंधेरे में मनुष्य आम तौर से भय का अधिक अनुमान लगाते हैं। क्योंकि वास्तविक अन्तर की अपेक्षा कम फासला तथा शत्रु की वास्तविक शक्ति की अपेक्षा अधिक शक्ति प्रतीत होती है। इसलिए दो उत्तरदायी अभिकारियों के विचार विमर्श को ध्यान में रखना चाहिए।

अवलोकन क्षमता को प्रशिक्षण काल में काफी बढ़ाया जा सकता है। प्रशिक्षण सम्बन्धी कुछ सुभाव निम्न हैं :—

१. चित्राध्यन से स्थिति तथा मार्गों को स्मरण रखना चाहिए तथा उनका विवरण प्रस्तुत करना चाहिए।

२. किसी वस्तु का समीप से अवलोकन करना चाहिए तथा उसे याद रखना चाहिए।

३. रूट मार्च एवं रात्री मार्च आदि का अवलोकन काफ़ी सहायक होता है।

खण्ड ४

• १ •
ड्रिल

ड्रिल के द्वारा सैनिकों में टीम भावना को प्रोत्साहन मिलता है। क्योंकि इसमें व्यक्तिगत का कोई महत्व नहीं है। ड्रिल में भाग लेने वाला प्रत्येक महत्वपूर्ण होता है।

उद्देश्य

१. ड्रिल का उद्देश्य छात्र सैनिकों को आज्ञा-पालन एवं अनुशासन सिखलाना है।
२. छात्र सैनिकों द्वारा सदैव वेशभूषा के साथ की जाने वाली ड्रिल अनुशासन की आधार शिला बन जाती है।
३. नेता की आज्ञा को तद्वत् पालन करने के लिए सजग रहने की वृत्ति सम्पादन द्वारा अनुशासन प्रशिक्षण में सहायक सिद्ध होती है।

सावधान

सावधान की स्थिति में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

१. दोनों पैरों की एड़ियाँ एक लाईन में मिली हो।
 २. पजे 30° का कोण बनाएँ।
 ३. घुटने एवं हिप सख्त हों।
 ४. हाथों के दोनों अंगूठे, अंगुलियों को मोड़कर, जाँघों से सटाकर निकर की सिलाई के साथ रखे हों।
 ५. हाथों को नीचे की तरफ खींचकर रखना चाहिए, जिससे हाथों एवं शरीर के मध्यम किसी प्रकार का फासला न रहे।
 ६. सीना स्वाभाविक रूप से उठा हुआ हो।
 ७. कन्धे समतल पीछे की ओर तनिक दबे हुए हों।
 ८. गर्दन सीधी।
 ९. ठोड़ी दबी हुई हो।
 १०. दृष्टि कदानुसार सामने हो। पदाधिकारी छात्र सैनिक एवं आफिसर से बात करते समय सावधान अवस्था में होना चाहिए।
- आदेश**—उपरोक्त आदेश को देने के पूर्व शब्द को दो भागों में बांटना चाहिए—

पालन—जैसे हा बाद का शब्द “धान” मुंह से निकलता है वैसे ही बायें पैर के घुटने को मोड़ते हुए तल स्थल से ६” से १२” तक उठाकर दाहिने पैर से उपरोक्त क्रान्तों को ध्यान में रखते हुए मिला देना चाहिए ।

त्रुटियाँ—

१. पलकों को बार-बार भ्रपकना ।
२. हाथों को पूर्णतया नीचे की ओर न खींचना ।
३. शरीर का कोई अंग अस्वाभाविक रूप से बाहर निकलना या अन्दर को दबा होना ।
४. मुट्ठियों का रुख अन्दर की ओर न होना ।

विश्राम

बाएँ पैर के घुटने को मोड़ते हुए जमीन से ६ से १२ इंच तक पैर को उठाकर बायीं ओर लगभग १२ इंच के अन्तर पर घुटने को खींच कर सीधा करते हुए थोड़ा जोर से जमीन पर रखना चाहिए । बाएँ हाथ की हथेली में दाहिना हाथ होगा । एड़ी से एड़ी का फासला १२ इंच और पंजों से पंजों का फासला १५ इंच होगा ।

आदेश—आदेश को देने के पूर्व शब्द को दो भागों में बाँटना चाहिए ।

विश्राम.....राम

आराम से

खड़े होने की इस अवस्था में सावधान तथा विश्राम की अपेक्षा अधिक आराम मिलता है ।

आदेश—आराम..... में

पालन—इसमें छात्र सैनिकों को या सैनिकों को शरीर को हिलाने तथा हाथों को गति का अवसर मिल जाता है इसमें सैनिक अपनी वेश भूषा ठीक कर सकता है । रूमाल से पसीना पोंछ सकता है, बटन बन्द कर सकता है, किन्तु इस अवस्था में पैर हिलाना भुक्ताना, वार्तालाप करना नियम विरुद्ध है । जैसे ही कमाण्डर स्क्वाड या परेड कहता है, तुरन्त प्रत्येक को विश्राम की हालत में आ जाना चाहिए ।

दाहिने मुड़ना

१. प्रत्येक छात्र सैनिक को दाहिने पैर की एड़ी तथा बाएँ पैर के पंजे पर शरीर को दाहिनी ओर ९०° पर टर्न करना ।

२. टर्न करते समय दोनों घुटने सरल तथा कमर में लचक हो । बायाँ पैर पीछे की ओर पंजा जमीन से लगा तथा एड़ी उठी हुई होगी । नजर सी गज सामने तथा हाथ बदन के साथ सटे हुए होंगे ।

३. बाँए पैर को जमीन से ऊपर ६ इंच लेते हुए, दाहिने पैर की एड़ी से बाँए पैर की एड़ी, पंजों में 30° का कोण बनाते हुए मिला देंगे।

बाँए मुड़ना

इसमें बाँए पैर की एड़ी और दाहिने पैर का पजा, शेष क्रिया दाहिने मुड़ की ही होगी।

पीछे मुड़ना

पीछे मुड़ने में सदैव दाहिनी ओर से ही मुड़ेंगे।

१. दाहिने पैर की एड़ी तथा बाँए पैर के पजे पर पीछे की ओर पूरा 180° मुड़ना।

२. दाहिने पैर की एड़ी और बाँए पैर का पंजा प्रयोग करना। दाहिना पैर जमीन पर पूरा जमा होगा, बाँया पैर पीछे और एड़ी उठी होगी। दोनों घुटने सीधे कँची की शकल में होंगे, शरीर सख्त तथा भार दाहिने पैर पर, कमर से ऊपर शरीर की स्थिति सावधान की होगी।

३. बाँए पैर को जमीन से ६ इंच ऊपर उठाकर, दाहिने पैर की एड़ी से बाँए पैर की एड़ी, पंजों में 30° का कोण बनाते हुए मिला देंगे।

दाहिने सजना

स्क्वाड को ठीक एक गति में तथा सैनिक को एक दूसरे से बराबर और आगे पीछे ठीक दूरी पर करने के हेतु दाहिने सजाया जाना है।

आदेश—स्क्वाड.....दाहिने.....सज।

सज का उच्चारण होने पर स्क्वाड के दाहिने सैनिक (दाहिने दर्शक) को छोड़कर शेष सैनिक बाएँ पैर को १५ इंच आगे रख कर फुर्ती के साथ दाहिने पैर के घुटने को मोड़ते हुए बाएँ पैर की एड़ी के साथ पंजों में 30° का अन्तर रखते हुए जमीन पर खींच कर लगा देंगे, और भटके के साथ गर्दन को दाहिनी ओर ले जाते हुए, दाहिने देखेंगे। अगली लाइन के सैनिक दाहिने दर्शक को छोड़कर, दाहिना हाथ भी अगुलियों को मोड़ते हुए दाहिने ओर को उठाएंगे। हाथ उठाने एवं गर्दन मोड़ने की गति एक होनी चाहिए, पीछे के दोनों गाड़ड सामने हाथ से अन्तर लेगे, सारे सैनिक चुस्ती से हिलते हुए एक लाइन में जाएंगे। लाइन को ठीक करने के लिए सब सैनिकों को दाहिनी ओर इस प्रकार देखना चाहिए, कि अपनी लाइन के तीसरे बालक की टुहड़ी न दिखाई दे। बराबर में तथा आगे पीछे एक दूसरे के पीछे छिप जायगे।

इसके पश्चात् “सामने.....देख” के आदेश पर सैनिक गर्दन को फुर्ती के साथ सामने लाते हुए सामने देखेंगे।

खुली लाईन या निकट लाईन चलना

छात्र सैनिक सावधान की स्थिति से शरीर का सन्तुलन रखते हुए पहला कदम बाएँ पैर से ३०" का लेंगे। आगे वाली लाईन बायाँ पैर आगे लेते समय जमीन पर पहले एड़ी रखेगी एवं पीछे वाली लाईन भी पहले बायाँ पैर ही पीछे को ३०" का लेगी मगर पहले जमीन पर पंजा रखेगी। दूसरा कदम दाहिने पैर से १५" का आगे वाली लाईन आगे को तथा पीछे वाली लाईन पीछे को लेगी। तीसरी बार बाएँ पैर को दाहिने से मिला देंगे। यह कार्य फुर्ती से होगा एवं मध्य लाइन सावधान का हालत में खड़ी रहेगी।

निकट लाइन में इसके विपरीत कार्य होगा। खुली लाइन कराने के बाद ही दाहिने सज कराना चाहिये एवं परेड का निरीक्षण भी इसी स्थिति में होता है।

थमना

आदेश :—स्क्वाड.....थम

तेज चाल में स्क्वाड को थमने के लिए जैसे ही दाहिने गाइड का बायाँ पर जमीन पर पड़ता है वैसे ही 'स्क्वाड' बोलना चाहिए और जैसे ही दाहिना पैर जमीन पर पड़ता है 'थम' बोलना चाहिए इससे बाद बाएँ पैर को आगे रख कर दाहिना पैर ऊपर उठाने टुंग बाएँ पैर से मिला देंगे, और सावधान की स्थिति में खड़े होंगे

स्वस्थान

आदेश :—स्वस.....थान

दो पीरयडों के मध्यावकाश को व्यतीत करने के लिए सैनिकों को स्वस्थान किया जाता है।

१. दाहिने फुर्ती में मुड़ना।
२. फुर्ती में सैल्यूट करना।
३. लाइन तोड़ देना।

विसर्जन

आदेश : वि.....सर्जन

परेड की समाप्ति पर विसर्जन होता है, शेष क्रिया स्वस्थान की भाँती होती है।

लाईन बन (फालइन)

१. प्रत्येक सैनिक दौड़कर आयेगा और दाहिने दर्शक की बाईं ओर लाइन बनायेगा।
२. प्रत्येक सैनिक नियमानुसार स्वयं फासला लेगा।
३. सावधान की स्थिति लेकर सामने देखना।

लाइन तोड़ (फालाउट)

आदेश :—लाईन...तोड़

जब सैनिक परेड ग्राउंड पर तीन तीन या तीन लाईनों में हो, उस समय यदि किसी सैनिक को बाहर बुलाना है तब लाईन तोड़ का आदेश दिया जाता है !

१. एक कदम आगे या पीछे लेना (यदि छात्र सैनिक आगे या पीछे की लाईन में हो)
२. मध्य लाईन में होने पर सुविधानुसार साइड में कदम लेना ।
३. सावधान स्थिति से सैल्यूट कर आगे जाना ।

सैल्यूट

आदेश :—सामने...सैल्यूट

दाहिना हाथ सीधा रखते हुए दाहिनी ओर कंधे के बराबर उठाया जायगा, हाथ तल स्थल के समानान्तर होगा, हाथ की अंगुलियाँ खुली हुई, आपस में अगूठे के साथ मिली हुई और हथेली सामने की तरफ होगी । हाथ को सीधा रखते हुए कोहनी से इस प्रकार मोड़ना चाहिए कि तर्जनी दाहिनी आंख की भौं के ऊपर आ जाय कोहनी से ऊपर का भाग, अंगुलियाँ बाजू और कलाई सीधी होनी चाहिए, हथेली उसी हालत में सामने को रहेगी, कोहनी के नीचे का भाग जमीन के समानान्तर होगा, बांया हाथ बदन के साथ सावधान की स्थिति में होगा । निश्चित समय के पश्चात फुर्ति से हाथ छोटे रास्ते में सावधान की स्थिति में आ जायगा ।

दाहिने या बाँए सैल्यूट

आदेश - दाहिने...सैल्यूट

बाएँ...सैल्यूट

तेज चाल में बांया पैर जमीन पर पड़ता है आदेश मिलता है दाहिने, और जैसे ही बांया पैर जमीन पर पड़ता है आदेश मिलता है 'सैल्यूट, उसके पश्चात दाहिना पैर जमीन पर, बांया पैर जमीन पर लगने के साथ ही दाहिना हाथ दाहिनी आंख की भौं के ऊपर, और गर्दन को दाहिनी ओर ले जाकर अधिकारी की आंखों में देखेंगे ! छः तक गिनती उच्चारण नम्बर वाले कदमों पर करेंगे, दाहिने पैर से कदम पूरा करेंगे जैसे ही जमीन पर एड़ी लगती है गर्दन को झटके के साथ सामने और हाथ छोटे रास्ते से नीचे तथा बांये पैर के साथ हाथों को भी गति में ले आयेगें ।

बाएँ सैल्यूट में क्रिया दाहिने सैल्यूट जैसी ही होगी केवल गर्दन बांयी ओर जायेगी अर्थात् बाएँ देखा जायगा !

दाहिने-बाँए देख

आदेश—दाहिने...देख

बाएँ...देख

उममें केवल दाहिने हाथ की क्रिया को छोड़कर शेष क्रिया दाहिने और बाएँ सैल्यूट की भांति होती है। दाहिना/बाया दर्शक अपनी गर्दन को नहीं घुमाएंगे !

चिट्ठी के साथ सामने सैल्यूट

क्रिया सामने सैल्यूट जैसी ही होगी, किन्तु इसमें सैनिक सैल्यूट के पश्चात् एक कदम और आगे लेकर बाएँ हाथ से चिट्ठी दाहिने हाथ में लेगा और अधिकारी को चिट्ठी देगा चिट्ठी देने के पश्चात् एक कदम पीछे लेगा और सैल्यूट करने के बाद पीछे मुड़कर तेज चाल में वापिस चला जायेगा !

दाहिने या बाँए घूम

आदेश —दाहिने...घूम

बाएँ...घूम

घूम शब्द पर बाया/दाहिना दर्शक चार कदम आगे जाकर २१" का कदम लेते हुए ९०° अपनी बाईं/दाहिनी और घूमेगा, उसके दाहिनी/बाईं और का सैनिक गाइड से सिधार्इ रखते हुए २० इन्च के कदम के साथ बाईं/दाहिनी और घूमेगा। अगली फाईल का दाहिना/बाया गाईड भी दोनों बायें और मध्य गाइड से सीध रखते हुए ३३ इन्च के कदम के साथ बाईं/दाहिनी और घूमेगी !

तेज चाल में बाँए मुड़ना

स्क्वाड—बाएँ...मुड़

जैसे ही गाइड की बाएँ पैर की एडी जमीन पर लगती है, वैसे ही "काशनरी-वर्ड,, बोला जायेगा "बाएँ,, और दोबारा जैमे ही फिर बाएँ पैर की एडी जमीन पर लगती है "एक्जीक्यूटिव वर्ड,, "मुड़,, बोला जायेगा। मुड़ के साथ ही मुड़ वाले बाएँ पैर को जमीन पर टिका कर चैक की स्थिति में होगा। दाहिने मुड़ने के लिए कमाण्ड दाहिने पैर पर दिया जायेगा !

मार्चिंग में कदम की रफतार एवं लम्बाई

कदम की रफतार

१. तेज चाल में एक मिनट में १३० कदम से १३५ कदम तक।
२. धीरे चाल में एक मिनट में ७० से ७५ कदम तक।
३. दौड़ चाल में एक मिनट में १८० कदम तक।

कदम की लम्बाई

१. तेज चाल में ३० इन्च
२. धीरे चाल में ३० इंच का कदम १५-१५ इंच के दो भागों में ।
३. दौड़ चाल में ४० इंच ।
४. दाहिने या बाएँ कदम लेते समय १२ इंच ।
५. छोटा कदम २१ इंच ।
६. घूम की आज्ञा पर अन्दर की लाइन का कदम २७ इंच मध्य लाइन का कदम ३० इंच एवं बाहर की लाइन का कदम ३३ इंच ।

आदेश

ड्रिल में प्रत्येक आदेश को दो भागों में बाटा जाता है जिसमें पहले को "काशनरी वर्ड" एवं दूसरे भाग को जिस पर कार्य होता है, "एक्जीक्यूटिव वर्ड" कहते हैं, जैसे—साव...धान

विश...राम

इस प्रकार 'धान, एव 'राम, (एक्जीक्यूटिव) शब्द है, जिन पर कार्य होता है ।

ड्रिल शिक्षण शब्दावली

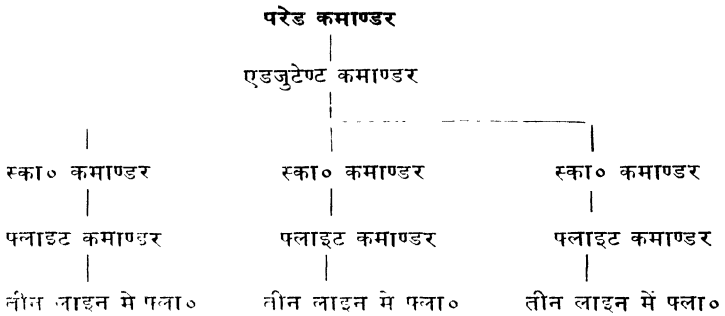
न०	हिन्दी	रोमन हिन्दी	इंग्लिश
१.	सावधान	Savdhan	Attention
२.	विश्राम	Vishram	Stand-at-ease
३.	आराम-से	Aram-se	Stand-easy
४.	सावधान-चल	Savdham-chal	March-to-attention
५.	सज-जा	Saj-ja	Dress-up
६.	विश्राम-चल	Vishram-chal	March-at-ease
७.	दाहिने-सज	Dahine-saj	Right-dress
८.	बाएँ-सज	Baen-saj	Left-dress
९.	मध्य-सज	Madhya-saj	Centre-dress
१०.	सामने-देख	Samne-dekh	Eyes-front
११.	दाँये-देख	Dahine-dekh	Eyes-right
१२.	बाँये-देख	Baen-dekh	Eyes-left
१३.	गिनती-कर	Ginti-kar	Namber
१४.	दाहिने-मुड़	Dahine-mur	Right-turn
१५.	बाँये मुड़	Baen-mur	Left-turu
१६.	पीछे-मुड़	Pichhe-mur	About-turn
१७.	दाहिना-दर्शक	Dahina-darshak	Right-marker
१८.	परेड-पर	Parade-Par	On-parade
१९.	लाईन-बना	Line-bana	Fall-in
२०.	लाईन-तोड़	Line-tor	Fall-out
२१.	स्वस्थान	Sawasthan	Break-off
२२.	आधा-दाँयेमुड़	Adha-Dahinemur	Right-incline
२३.	आधा-बाँएमुड़	Adha-baen-mur	Left-incline
२४.	विसर्जन	Visarjan	Dis-miss
२५.	जैसे-थे	Jaise-the	As-you-were
२६.	थम	Tham	Halt
२७.	खुली-लाईन-चल	Khuli-line-chal	Open-order-march

नं०	हलन्दी	रोमन हलन्दी	इंगललश
२८.	नलकट-लईन-चल	Niket-line-chal	Open order-march
२९.	तीन-लईन-बन	Tin-line-ban	Formthree ranks
३०.	सामने की लईन हलल मत	Samne ki-line hilmat	Front rank steady
३१.	बीच की लईन हलल मत	Bieh ki line hilmat	Centre rank steady
३२.	दाहलना घुटना भुकाअर्रों	Dahina ghutna Jhukao	Bend.right-knee
३३.	कदम तोल कर बांये मुडु	Kadamtolkar baen mur	Bend--right-knee
३ॡ.	धीरे चल	Dhire-chal	Slow-march
३ॡ.	दौडके चल	Daur-ke-chal	Doouble-march
३६.	तेज चल	Tej-chal	Quick-march
३७.	कदम ताल	Kadam-Tal	Mark-time
३८.	वलषम १ क० आगे सम पीछे	Visham 1 kad. age same pichey-	Odd noI step for- ward even 1 back
३९.	...कदय बाँए चल	...Kadam-baen-chal	...Pace left close march
ॡ०.	दाहलने घूम	Dhahine-ghoom	Right Wheel
ॡ१.	बांये घूम	Baen-ghoom	Left wheel
ॡ२.	दलशा बदल	Disha-badal	Change-direction
ॡ३.	आगे बढ़	Age-barh	Forward
ॡॡ.	कदम-बदल	Kadam-badal	Change-step
ॡॡ.	आगे बढ़ेगा	Age-barehga	...Will advance
ॡ६.	पीछे लौटेगा	Pichhe-lautega	...Will retire
ॡ७.	तीनों तीन-दाँये चल	Teno-teen dahi nechal	Move right in three
ॡ८.	दाहलने-से	Dahiae-se	By the right
ॡ९.	बांये-से	Baen-se	Bythe left

नं०	हिन्दी	रोमन हिन्दी	इंग्लिश
५०.	सैल्यूट	Siloote	Salute
५१.	जनरल सैल्यूट	General-siloote	Genenal salute
५२.	राष्ट्रीय सैल्यूट	Rashtriya-siloote	National salute
५३.	गिनती से सैल्यूट	Ginti-se-siloote	Salute-by number
५४.	सामने को सलामी	Samne-ko-salami	Saluteto-front
५५.	बांये को सलामी	Baen-ko-salami	Salute-to-flaik
५६.	दाएं दिशा बदल थम	Daen-disha-badal- tham	Change direction right halt
५७.	दाएं दिशा बदल	Daen-disha-badal	Rear rank forward
५८.	बाएं घूम-तेज चल	Baen ghoom tejchal	Left wheel-by the left march
५९.	दाएं से तीन लाईन में पीछे लौटेगा	Dahine se teno teen line men piche lautega	Wil return in columr of three for right
६०.	लम्बा दाये छोटा बाएं एक लाईन में	Lambadaen chota baen ek line men	Toll on right left or short single rank
६१.	तीन लाईन बना कर चल	Teen line benakarchal	Formup in three raits move
६२.	लम्बा कदम	Lamba-kadam	Step out
६३.	छोटा कदम	Chota-kadam	Step short
६४.	कम्पनी	Company	Company
६५.	बटालियन	Battalion	Battalion
६६.	गारद	Guard	Guard
६७.	परेड	Parade	Parade
६८.	निरीक्षण को मध्य से तेज चल	Nirikshan. ko. madhya se-tej-chal	Advance in review order by centre Quick march.
६९.	आगे पीछे हो	Age-picche-ho	Cover up
७०.	एक-दो-गिन	Ak-do-gin	In two number
७१.	पर दर्शक	Pardarshak	Guide dis tance
७२.	फासला	Fasla	Distance
७३.	फाईल	File	File

न०	हिन्दी	रोमन हिन्दी	इंग्लिश
७४.	खाली फाईल	Khali-file	Blank-file
७५.	लाईन	Line	Line
७६.	दर्शक	Darshak	Marker
७७.	श्रीमान अन्तर सेना गारड निरी- क्षण के लिए हारिज है	Shriman anter sena gard niriskhan ke liye hajir he	Inter service guard ready of inspetion sir
७८.	श्रीमान गारड निरीक्षण के लिए हजिर है	Shriman (unit) guard niriskhan ke liye Hajir he	Guard of honour (unit) ready of inspection sir

मार्च पास्ट की रचना



१. फ्लाइट में फ्लाइट कमाण्डर की दूरी - २ कदम
 २. फ्लाइट से स्का० कमाण्डर की दूरी - ६ कदम
 ३. स्का० कमाण्डर से एडजुटेण्ट कमाण्डर की दूरी - ४ कदम
 ४. फ्लाइट से परेड कमाण्डर की दूरी - १४ कदम
- परेड कमाण्डर ही सारा काम, निरीक्षण इत्यादि खुली लाइन में करेगा ।

खण्ड ५

सैनिक मानचित्र का अध्ययन

ज्ञान के विकास के साथ साथ उसका क्षेत्र भी अत्याधिक बढ़ गया है। वैज्ञानिक उन्नति से विश्व सीमित हो गया है। आधुनिक युग में युद्ध एक स्थान पर न होकर विस्तृत भूखण्ड पर होते हैं जिनमें जल, थल एवं वायु सेनाएं भाग लेती हैं। इन युद्धों में सैनिकों ही को नहीं अपितु साधारण नागरिकों को भी कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करना पड़ता है। इस प्रकार यह आवश्यक है कि न केवल सैनिकों अपितु साधारण नागरिकों के निमित्त भी मानचित्र अध्ययन ज्ञान आवश्यक है।

युद्ध काल में सैनिक प्रायः अपने मार्ग से भटक जाते हैं यदि उनके पास मानचित्र एवं अध्ययन की योग्यता है तो मार्ग ढूँढने एवं भटके प्रदेश के धरातल का सुगमता से पता लगाने में सफल हो जाते हैं। युद्ध समय में शत्रु से मानचित्र हस्तगत किए जाते हैं या गुप्त सूत्रों में प्राप्त किए जाते हैं। इन मानचित्रों के अध्ययन से शत्रु की भौगोलिक स्थिति एवं अन्य बातों का पता लगाया जाता है। मानचित्र पर प्रत्येक वस्तु सांकेतिक चिन्हों द्वारा दर्शायी जाती है जिसका समझना अति आवश्यक है। इसी निमित्त राष्ट्रीय छात्र सैनिकों को मानचित्र अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

आधुनिक युद्धों में प्रत्येक पक्ष भौगोलिक स्थिति का अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करता है। इसलिए सैनिकों को दूसरे देश की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान कराना आवश्यक है जिससे सैनिक अपने कार्य को भलि प्रकार कर सके।

सैनिक मानचित्र का अध्ययन —सैनिक मानचित्र अध्ययन का अर्थ है कि मानचित्र द्वारा, उम धरातल का विवरण, जिसका वह चित्र है, ठीक-ठीक तथा स्पष्ट रूप में जानना। इसका मुख्य ध्येय यही है कि सैनिक मानचित्र को देखकर उसके धरातल को भलि प्रकार समझ हृदयगम करले।

मानचित्र क्या है— मानचित्र पृथ्वी का हवाई चित्र है। आकाश में उड़ते वायुयान चालक को पृथ्वी का जैसा चित्र दृष्टि गोचर होता है उसी चित्र को हम पृथ्वी मानचित्र कहते हैं। मानचित्र की निम्न परिभाषा कर सकते हैं।

“मानचित्र किसी देश का एक कागज या कपड़े पर बना वह चित्र जो किसी पैमाने के आधार पर बनाया हो,,

महत्त्व— राष्ट्रीय छात्र सैनिक प्रशिक्षण में मानचित्र का विशेष महत्त्व है।

युद्ध काल में सैनिकों को अपरिचित स्थानों पर जाना पड़ता है मानचित्र के कारण ही सैनिक अपरिचित से परिचित हो जाता है। अधिकारी मानचित्र की सहायता से अपनी यूनिटों को लाभ की स्थिति में नियुक्त करने में समर्थ होता है। लड़ाकू या बमबर्षक विमान चालक मानचित्र की सहायता से निर्दिष्ट स्थान को नष्ट करने में सफल होता है। अतएव मानचित्र ज्ञान जल-थल एवं नभ सेना के सैनिकों के लिए परमावश्यक है।

सर्वेक्षणचित्र (सर्वे मैप) सर्वेक्षणचित्र को प्रायः सैन्य मानचित्र भी कहते हैं। यह कागज या कपड़े पर किसी क्षेत्र का छोटा चित्र होता है। जिस प्रकार फोटो के द्वारा हम व्यक्ति को पहचान लेते हैं। इसी प्रकार सैनिक अपनी योग्यता एवं अनुभव के आधार पर सर्वेक्षण चित्र को देखते ही वहाँ की स्थिति से अवगत हो जाता है।

उपयोगिता—सैनिक के लिये मानचित्र अति उपयोगी है क्योंकि मानचित्र द्वारा उसे निम्न बातों का ज्ञान होता है।

१. इच्छानुसार स्थान पर जा सकता है भले ही वह स्थान देखा हो या न देखा हो।
२. स्थान की मुख्य-मुख्य जानकारी प्राप्त कर सकता है।
३. भूमि की बनावट के विषय में, कहा पहाड़, मैदान, उजाड़ है उसकी जानकारी प्राप्त कर सकता है।

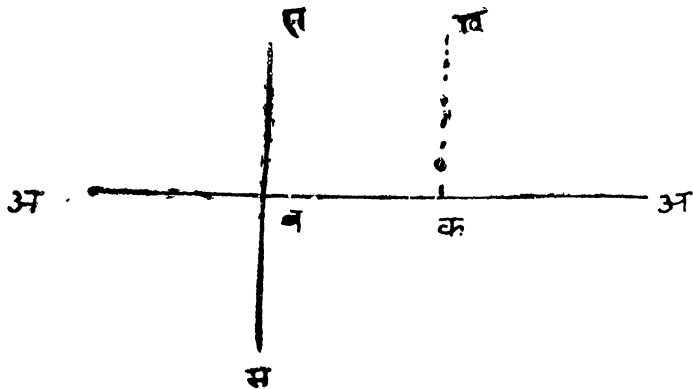
युद्ध काल में अपरिचित स्थानों पर लड़ने के लिए मानचित्र पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। रेगिस्तान एवं ब्रीहड़ जगलों में सैनिक को मानचित्र ही मार्ग दर्शाने में सहायक होता है। सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सैनिक किसी क्षेत्र की प्राकृतिक दशा-दिशा तथा वनस्पति के विषय में मानचित्र से ज्ञान प्राप्त करता है।

ग्रिड प्रणाली

सैन्य चित्रों पर उत्तर से दक्षिण तथा पश्चिम से पूर्व को खींची हुई रेखाएँ जाल की तरह मिलाई हुई मालूम देनी दे इन्हीं रेखाओं को “ग्रिड लाइन्स” कहते हैं। इन खानों के द्वारा सम्बन्धित स्थानों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है। मानचित्र के पैमाने से वास्तविक दूरी आदि निकालने में आसानी रहती है।

मानचित्र निर्देशन—मानचित्र को देखने की कई विधियाँ हैं किन्तु ध्येय सबका एक ही है। मानचित्र में जब किसी स्थान को बताना होता है। तब मानचित्र को बांयी ओर नीचे दक्षिण-पश्चिम के कोने को मूल बिन्दु मानकर दिए हुए स्थान की वर्ग स्थिति ज्ञात करते हैं। पहले आधार बिन्दु से पूर्व की ओर चलते हैं एवं ग्रिड की उस उत्तर-दक्षिण रेखा तक पहुँचते हैं जो इच्छित वर्ग की पश्चिमी भुजा कहलाती है। इस रेखा को पूर्वी रेखा कहते हैं तथा इस रेखा के अंक उस वर्ग के पूर्वी कहलाते हैं।

इसके उपरान्त उस मूल बिन्दु वाले कोने से उत्तर की ओर बढ़ते हैं तथा उस वर्ग तक जाते हैं जो इच्छित वर्ग की दक्षिणी भुजा कहलाती है। इस रेखा को उत्तरी रेखा कहते हैं एवं इस रेखा के अंक उस वर्ग का उत्तरी कहलाता है निम्न चित्र में—



दो रेखाएँ "अ ब अ" और "स ब स" परस्पर समकोण बनाती हुई 'ब' बिन्दु पर काटती है। यदि हमारा आधार बिन्दु 'ब' है एवं 'ख' की स्थिति ज्ञात करनी है तो पहले 'ब क' को बतायेंगे और फिर 'क ख' को। 'अ ब अ' पूर्व-पश्चिम रेखा है। अतः 'ब क' को पूर्वी रेखा कहते हैं; 'स ब स' रेखा उत्तर-दक्षिण रेखा है इसलिए "क ख" को उत्तरी रेखा कहते हैं !

परिभाषाएँ

मानचित्र के अध्ययन से पूर्व चित्रों पर दिखाई जाने वाली पृथ्वी की आकृतियों के नाम एवं उनकी परिभाषाओं की जानकारी आवश्यक है।

१. **प्रवाह प्रदेश (बेसिन)** — (अ) समतल भूमि का वह क्षेत्र जो चारों ओर से या लगभग चारों ओर से पर्वतों से घिरा हुआ हो और

(ब) ऐसा क्षेत्र जिनमें नदी, नाले और उनकी शाखाएँ फैली हुई हों प्रवाह प्रदेश (बेसिन) कहलाता है।

२. **तंग घाटी (गार्ज)** — वह गहरी घाटियाँ होती हैं जिनके कगार तल से ऊँचे खड़े होते हैं एवं तल की चौड़ाई बहुत कम होती है। यदि घाटी की समोच्च रेखाएँ समीप हैं तो घाटी गहरी होगी। और घाटी का ढलान अधिक है तो समोच्च रेखाएँ V की आकृति के स्थान जैसी दृष्टिगोचर होगी।

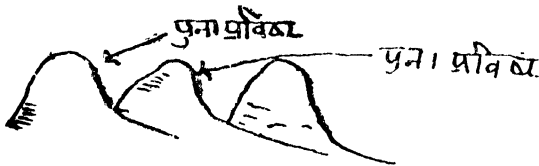
३. **आसन (सडल)** — दो पर्वतों को मिलाने वाला भाग जो ऊँचाई में मिलने वाले पर्वतों से कम और समीप के मैदान से अधिक हो।

४. **टिब्बा (दून)** — रेत की पहाड़ी को कहते हैं।

५. **संकरा मार्ग (डिफाइल)** — ऐसा प्राकृतिक या अप्राकृतिक स्थान जहाँ सेना की टुकड़ी को अपनी वास्तविक बनावट को छोटा करना पड़े संकरा मार्ग कहते हैं जैसे नदी का पुल, दल-दल, दर्रा आदि।

६. **टीला (नोल)** — एक बहुत नीची एवं पृथक पहाड़ी को कहते हैं। ये प्रायः गोल तथा कम ऊँचाई के होते हैं।

७. **पुनः प्रविष्ट (रिएन्टरेन्ट)** — पर्वत के अन्दर दबी हुई भूमि को या दो उपांगुष्ठों के मध्य की जगह को पुनः प्रविष्ट कहते हैं।



८. **दर्रा (पास)** — पर्वत के ऊपर घड़ी में घे गुजरने वाले मार्ग को दर्रा कहते हैं।

९. **पठार (प्लेटो)** — ऊँची भूमि के उस भाग को कहते हैं जिसका ऊपरी भाग कुछ समतल तथा कुछ ऊँचा नीचा होता है किन्तु उसके किनारे ढालू होते हैं।

१०. कटा पठार (डाइसेक्टडप्लेटो) — पठार नदियों की घाटियों द्वारा बहुत से स्थानों पर कटा हुआ हो उसे कटा हुआ पठार कहते हैं ।

११. तागड़ (ब्रू) — किसी पर्वत या पहाड़ी के नतो दर (कन्वेक्स) ढाल का ऊपरी किनारा, या ढाल का सबसे ऊँचा भाग तागड़ (ब्रू) कहलाता है । ऐसे भाग से नीचे की भूमि स्पष्ट दिखाई देती हैं ।

१२. शिखर (क्रैस्ट) — किसी पर्वत या पहाड़ की चोटी अथवा चारों ओर जो कुछ हल्का ढालू भाग होता है उसे शिखर कहते हैं । यह सबसे अधिक ऊँचाई की रेखा को बताती हैं ।

१३. प्रवर्त प्रक्षेप (स्पर) पहाड़ का वह भाग जो पर्वत श्रेणी से बाहर की ओर निकला हुआ, नीचे जमीन में मिल जाता है स्पर कहलाता है ।

१४. ढलवा चट्टान (क्लीफ) ऐसी ऊँची और ढालू चट्टान को कहते हैं जिसका ढलान अधिक हो ।

१५. शिखर रेखा — पर्वतों की चोटियों को मिलाने वाली रेखा शिखर रेखा कहलाती है ।

१६. काट (कटिंग) — जब किसी ऊँचे स्थान में से होकर सड़क, रेलमार्ग या अन्य कोई मार्ग निकालना होता है तो उस भूमि को उस मार्ग की चौड़ाई के अनुसार काट कर निकाला जाता है इस कटे स्थान को काट (कटिंग) कहते हैं ।

१७. बांध — किसी नदी, तालाब आदि के जल को रोकने के लिए एक बहुत चौड़ी और मोटी दीवार सी लगाई जाती है वह बांध कहलाती है ।

१८. स्लोप — ढलान को कहते हैं ।

१९. रिज — लम्बाकार पहाड़ी का उठा हुआ लम्बा और संकरा भाग होता है यह छोर पर नुकीला होता है । इसकी ऊँचाई भी अधिक होती है ।

२०. घाटी (वैली) — बड़े-बड़े ऊँचे पर्वतीय स्थानों में, जहाँ पर होकर नदियाँ बहती हैं, नदियाँ अपने प्रवाह से ऊँची भूमि को काट कर नीचा तल बना देती है । ऐसे नीचे स्थानों को घाटी कहते हैं ।

२१. उभार (रिलीफ) — पृथ्वी की ऊँची नीची आकृतियों को उभार कहते हैं ।

२२. ग्लेशियर — बर्फ की धीरे-धीरे सरकने वाली चट्टान को ग्लेशियर कहते हैं ।

२३. एस्चुरी — नदी का वह भाग जो ज्वार भाटे से प्रवाहित हो जाता है एस्चुरी कहलाता है ।

२४. **ढालांश** (डिग्री आफ स्लोप) — ढाल की सतह क्षैतिज सतह के साथ जितने अंश का कोण बनाती है।

२५. **प्रवणता** (ग्रेडियन्ट) — यह ढाल को प्रदर्शित करने की एक विधि है। जिसमें ढलान के उतार चढ़ाव को अंशों में प्रकट करते हैं।

२६. **उर्ध्वाधर अन्तर** (वर्टिकल इन्टरवल) — पास-पास की दो कन्टूर रेखाओं के मध्य तल के अन्तर को उर्ध्वाधर अन्तर कहते हैं। यह सदैव फीट में दिखाया जाता है।

२७. **धरातलीय दूरी** (होरीजन्टल इक्विवेलेन्ट) — पास की परिधि रेखाओं पर स्थित दो बिन्दुओं के मध्य की दूरी को समतल अनुरूप (होरी जन्टल इक्विवेलेन्ट) कहते हैं। यह सदैव गजों में लिखा जाता है।

२८. **खड़ा कटाव** (ऐसकारपमेन्ट) — यदि किसी पहाड़ी भाग का ढाल अधिक होता है तो इस अधिक ढाल को खड़ा कटाव (ऐस्कार्पमेन्ट) कहते हैं।

२९. **जल विभाजक** (वाटर शीड) — ऊँची भूमि जो दो बड़े-बड़े जल प्रवाहों को भिन्न-भिन्न दिशाओं में विभाजित कर देती है उसे जल विभाजक कहते हैं।

३०. **समोच्च रेखाएँ** (कन्टोरस) — पृथ्वी के धरातल पर खींची गई वे कल्पित रेखाएँ जो समुद्र तल में एक ही ऊँचाई वाले स्थान को मिलाती हैं समोच्च रेखाएँ कहलाती हैं।

३१. **अग्रतट** (फोरशोर) — समुद्र तट पर ज्वार भाटे की मध्य की भूमि को अग्रतट कहते हैं।

३२. **डेल्टा** — जहाँ पर नदी समुद्र में गिरती है अपने साथ बहाकर लायी मिट्टी को वहाँ पर छोड़ देती है, इस उपजाऊ भूमि को डेल्टा कहते हैं।

३३. **जल पथ** (वाटर कोर्स) — घाटी का सबसे निचला भाग जिसमें होकर नदी बहती है, जल पथ कहलाता है।

३४. **आनुपातिक भिन्न** — यह वह विधि है जिसमें नक्शे और जमीन दोनों के लिए प्रयोग की जाने वाली इकाइयाँ एक ही प्रकार की होती हैं। इसमें अंश एक रखा जाता है और हर (डिनोमीनेटर) नक्शे की इकाई के बराबर मानी गई असली जमीन की इकाइयों का रखा जाता है।

३५. **बियरिंग** — उत्तर-दक्षिण रेखा तथा किन्हीं दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा से बने कोण को बियरिंग कहते हैं। यह सदैव घड़ी के सुख के अनुसार नापे जाते हैं।

३६. **चुम्बकीय अन्तर** (मैग्नेटिक वरेशन) — वास्तविक तथा चुम्बकीय उत्तर के बीच के अन्तर को कहते हैं। यह हर समय एकसा नहीं रहता। इसका स्थान समयानुसार बदलता रहता है।

३७. **असमभूमि** (अनडुलेटिंग ग्राउंड) — फील्ड क्राफ्ट के अन्दर ऊबड़ खाबड़ जमीन को असमभूमि (अनुडुलेटिंग ग्राउंड) कहते हैं इसमें सेना को सुरक्षित आवरण मिल जाते हैं ।

३८. **स्थानीय चुम्बकीय खिचाव** (लोकल मेगनेटिक अट्रैक्शन) — जब कम्पास की सुई निकट में रखे किसी लोहे के टुकड़े के कारण अपनी सही दिशा न बताकर पास रखे हुए लोहे की ओर आकर्षित हो जाती है और उसी की ओर संकेत करने लगती है तो कम्पास की सुई के इस खिचाव को स्थानीय चुम्बकीय खिचाव कहते हैं ।

३९. **छेदन बिन्दु विधि** (इन्टर सेक्शन) — यह वह विधि है जिस के अन्तर्गत किन्हीं दो निश्चित वस्तुओं का चुम्बकीय कोण नाप कर या उनसे रेखाएँ खींच कर मान चित्र पर अपना स्थान ज्ञात किया जाता है ।

४०. **मध्यान्ह रेखा** (मेरीडियेन) — उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को जाने वाली काल्पनिक रेखा को मध्यान्ह रेखा कहते हैं ।

४१. **स्तरीय मध्यान्ह रेखा** (स्टेन्डर्ड मेरीडियेन) — ग्रीनविच के ऊपर से जाने वाली काल्पनिक मध्यान्ह रेखा को स्तरीय मध्यान्ह रेखा कहते हैं ।

४२. **जाल** (ग्रीड) — रेखाओं से बने हुए समचतुर्भुज वर्गाकार के एक जाल को (ग्रीड) कहते हैं ।

४३. **उत्तरीय जाल** (नोर्थ ग्रीड) — वह उत्तर जिसे जाल रेखा प्रदर्शित करती है !

४४. **ब्यौरा** (डिटेल्) — पृथ्वी की प्राकृतिक या बनावटी छोटी छोटी आकृतियों को ब्यौरा कहते हैं ।

४५. **किरण** (रे) — अपने स्थान से दूसरे चिन्ह को प्रकट करने वाली रेखा को किरण कहते हैं ।

४६. **स्थिर बिन्दु** (फिक्सड पोइंट) — पृथ्वी के निशान को कागज पर उचित स्थान पर दिखाए गए बिन्दु को स्थिर बिन्दु कहते हैं ।

४७. **अग्र बियरिंग** — अपने स्थान से दूसरे स्थान के बियरिंग को अग्रबियरिंग कहते हैं ।

४८. **पृष्ठ बियरिंग** — दूसरे स्थान से अपने स्थान के बियरिंग को पृष्ठ बियरिंग कहते हैं ।

४९. **आलेखन** (प्लोटिंग) — पृथ्वी के निशान को कागज पर लगाने को आलेखन कहते हैं ।

साँकेतिक चिन्ह

पृथ्वी के चिन्हों को मानचित्र पर प्रदर्शित करने के लिए साँकेतिक चिन्हों (कनवेनशनल साइन) का प्रयोग किया जाता है क्योंकि इस प्रकार मानचित्र पर अधिक चिह्नों को प्रदर्शित किया जा सकता है। साँकेतिक चिह्नों को इस प्रकार बताया गया है।

१. सर्वे आफ गंडिया के मानचित्रों पर बने हुए साँकेतिक चिह्न।
२. सैनिक सम्बन्धी सूचना देने वाले साँकेतिक चिह्न।
३. युद्ध काल में चित्रों में प्रयोग होने वाले पृथ्वी निशान के साँकेतिक चिह्न।

नीचे केवल वही साँकेतिक चिह्न दिए हुए हैं, जो सर्वे आफ इंडिया के मानचित्रों में प्रदर्शित किए गए हैं। प्रत्येक साँकेतिक चिह्न आकार और रूप में उसी वस्तु की तरह होता है, जिसका वह चिह्न है, ये चिह्न पैमाने के अनुसार भी नहीं बनाए जा सकते, इन्हें केवल लम्बाई और चौड़ाई में प्रकट कर सकते हैं। इसके दो रूप होते हैं।

१. हवाई नजर।
२. जमीनी नजर।

१. **हवाई नजर**—इससे यह तात्पर्य है कि आकाश में उड़ते समय वायुयान में बैठने वालों को चीज किस प्रकार दृष्टिगोचर हो रही है।

२. **जमीनी नजर**—इससे यह तात्पर्य है कि चीजें जमीन पर किस प्रकार पड़ी हुई हैं अथवा नजर आ रही हैं या कैसी आकृति की बनी हुई है। जमीनी नजर केवल उन्हीं चीजों को दी जाती है जो आकाश से स्पष्ट नजर नहीं आती।

गाँव मकान आदि

क्रम सं०	साँकेतिक चिन्ह	ग्रिड हवाला	रंग
१.	गाँव और उसका नाम	०३०२१३	लाल
२.	गाँव दीवार से घिरा हुआ	०२०२८२	दीवार काला
३.	बारबड गाँव	६६३३१६	लाल
४.	ऊजड़ा हुआ गाँव	६८१२६६	"
५.	अकेला मकान	६५२३१५	"
६.	स्मारक	६८७२७८	"

क्रम सं०	साकेतिक चिह्न	ग्रिड हवाला	रंग
७.	सती	०२३२७७	लाल
८.	कारखाने की चिमनी	००२२६४	"
९.	गिर्जाघर	९४८२५६	"
१०.	मन्दिर	०१६२८४	"
११.	समाधि स्थान	९६९३१३	"
१२.	पगोडा	९७९२८४	"
१३.	मस्जिद	९९६२६५	"
१४.	ईदगाह	००३२६१	"
१५.	दुर्ग	९८५२८२	"
१६.	घंटाघर	९५०३०३	"
१७.	छतरी (मन्दिर आदि की)	९५१२७३	"
१८.	ज्ञान का मुँह	९७९२९१	काला
१९.	कन्न	९४८२६१	"
२०.	तेल का कुँआ	९७३३०१	"
२१.	चान्द मारी (राइफल रेज)	९३९२६६	"
२२.	वायुयान की चान्दमारी	९४४२९२	"
२३.	एरोडरोम	९६९२२६	लाल
२४.	वायरलैस स्टेशन	९७९२२७	"
२५.	गुफा	९९६२२७	लाल काला
२६.	युद्ध स्थल क्षेत्र	९७८२७७	काला
२७.	चीकी	०३६२९५	लाल

सड़कें और पुल

१.	चुंगी की चीकी	९५८२४५	लाल काला
२.	पक्की सड़क दोनों ओर वृक्ष	९५६२९०	"
३.	कच्ची सड़क	०१०२५४	लाल
४.	सड़क पर मील का पत्थर	९५२२८६	"
५.	बेल गिरी का मार्ग	९८३३१५	"
६.	अन्त का मार्ग	०००३११	"
७.	घाटी का मार्ग	०३४२८९	"
८.	पगडंडी	०१०२१५	"
९.	सड़का का पुल	००८२८१	"

क्रम संख्या	सांकेतिक चिन्ह	ग्रिड हवाला	रंग
१०.	ऊंची सड़क	६८८२५७	लाल
११.	सड़क पर मोटर के घूमने का स्थान	०२६२२३	”
१२.	पानी में चल कर पार होने का घाट	०२६३२०	”
१३.	नाव द्वारा होने का घाट	६७६२३५	”
१४.	नाव का पुल	०३२२४४	”
१५.	नदी तल में मार्ग	०१२३१३	काला लाल

रेलवे और टेलीग्राफ लाइन

१.	बरोड गेज डबल लाइन	६७०२५६	काला
२.	बरोड गेज सिंगल लाइन	६६५२५०	”
३.	मीटर गेज डबल लाइन	१६०२८६	”
४.	मीटर गेज सिंगल लाइन	६६२३२०	”
५.	लेविल क्रोसिंग	६६५२६२	लाल काला
६.	रेलवे के ऊपर सड़क	६६६२६८	लाल काला
७.	सड़क के ऊपर रेलवे	६५४२६६	लाल काला
८.	सड़क और रेलवे, नदी के ऊपर	६६४२३६	”
९.	रेलवे के ऊपर नाला	०१३२६८	काला
१०.	रेलवे सुरंग	६६३२२४	काला
११.	टेलीग्राफ लाइन	६६०२३५	”
१२.	टेलीफोन लाइन	६५३२६०	”
१३.	विद्युत लाइन	०००२८२	”
१४.	रेलवे स्टेशन	०१०२६३	लाल काला
१५.	रेलवे मील का पत्थर	६७३२६१	काला

भराई और कटाई

पत्थर निकालने का स्थान	६६४२७५	काला
सड़क के साथ कटाई	६५३२७७	”
रलवे के साथ भराई	०३०३१०	”
सुरक्षा बांध	६४०२८४	”

पानी की आकृतियाँ और नदी का तट

पक्का कुँआ	०१४२८३	नीला
कच्चा कुँआ	६६८२६८	”

क्रम संख्या	सांकेतिक चिह्न	प्रिड हवाला	रंग
३.	चश्मा (सोता)	०१८२२४	नीला
४.	पृथ्वी के नीचे पानी का नल	६६०२७३	"
५.	तालाब (पूरे वर्ष पानी)	६६२३१५	"
६.	तालाब (पूरे वर्ष पानी नहीं)	०३३२२२	काला
७.	दलदल	०२३२४१	नीला
८.	दलदल और बबूल वृक्ष	६६०२१२	नीला काला
९.	नाला (पानी वाला)	०४०३१२	नीला
१०.	नाला (शुष्क)	०१६२६१	काला
११.	टूटी फूटी भूमि	००५३२५	"
१२.	नदी का खड़ा तट	००४२४५	"
१३.	नदी का टूटा फूटा तट	०१५२४४	"
१४.	नहर	६५०३१४	नीला
१५.	नहर के मील का पत्थर	६४३३१३	"
१६.	नहर का फाटक	६६६३१७	"

समुद्र तट

१.	ज्वार भाटे के पानी की सीमा	६८७२५२	नीला
२.	जहाज को मार्ग दिखाने वाला	६४२२४२	काला लाल
३.	जहाज को खतरे से बचाने वाला निशान	६५१२३४	"
४.	प्रकाश गृह		लाल
५.	ऊंची पानी की लाइन	६५०२३१	नीला
६.	नीची पानी की लाइन		"
७.	रैट		काला
८.	खड़ी चट्टान		"
९.	फैदम लाइन		नीला
१०.	स्टीमरसर्विस		"
११.	घाट (जेटी)	६४७२४१	"
१२.	गोल पत्थर	६५७२३२	"
१३.	नुकीली चट्टान	६६५२२०	"
१४.	चद्दर वाले पत्थरों की चट्टान	६६१२२५	"

सीमाएँ

क्रम सं०	सांकेतिक चिन्ह	ग्रिड हवाला	रंग
१.	प्रान्त की सीमा	६७०२६४	काला
२.	जिले की सीमा	६७७३२०	"
३.	भारत की बाह्य अंकित सीमा		काला
४.	भारत की बाह्य अनांकित सीमा		"
५.	तहसील की सीमा		"
६.	जंगल सीमा		"
७.	सीमा का पत्थर		काला
८.	खेती की हदबन्दी		"
९.	जंगल		हरा
१०.	नमक की क्यारियाँ		काला

उद्यान

१.	चाय का बगीचा		हरा
२.	शब्जी का बगीचा		"
३.	फल का बगीचा		"

वृक्ष

१.	चीड़ का वृक्ष		हरा
२.	ताड़ का वृक्ष		"
३.	नारियल का वृक्ष	६६५२३	"
४.	बांस का वृक्ष	६४७३२२	"
५.	सुपारी का वृक्ष	६८७२१६	"
६.	थोर का पौदा	००२३२१	"
७.	केले का वृक्ष	६७४३११	"
८.	फैली हुई झाड़ी	०३१३०२	"
९.	छोटी झाड़ी	६४१३२१	"

क्रम सं०	सांकेतिक चिह्न	प्रिड हवाला	रंग
१०.	वैत	६६१३२५	हरा
११.	ऊँचा घास	६४८३०८	"







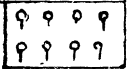

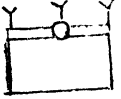

ऊँचाईयाँ

१.	त्रिकोणमिति स्टेशन	०३५२६६	काला
२.	त्रिकोणमितीय बिन्दु (स्पोट हाइट)	००८२३१	"
३.	बैच मार्क (बी० एम०)	६८८२६२	"
४.	स्थानीय ऊँचाई	००४२४५	"

पहाड़ों की स्थिति

१.	रेत की पहाड़ी	०२३३१३	भूरा
२.	डेविल कालडून	००६२५६	काला भूरा
३.	चट्टानी भूमि	०१६२२८	भूरा
४-	टीला	६७४२३३	"
५.	सब फीचर	०२०२१५	"
६.	कन्दरा	०२५२६८	"
७.	चट्टान	०३०२५६	"

मुख्य सांकेतिक चिन्ह

क्रम संख्या	नाम	चिन्ह
१.	मकान	
२.	गाँव	
३.	किला	
४.	उजाड़ गाँव	X
५.	रेत का टीला	
६.	पेड़ सायादार	
७.	बे सायादार वृक्ष	↑
८.	बाग	
९.	जंगल	
१०.	ईदगाह	
११.	मस्जिद	
१२.	मकबरा	

सांकेतिक चिह्न
क्रम संख्या

नाम

१०७

चिह्न

१३.

मन्दिर



१४.

बौद्ध मन्दिर



१५.

घटाघर



१६.

प्रकाश स्तम्भ



१७.

रण क्षेत्र



१८.

पवन चक्की



१९.

बेतार का स्टेशन



!

२०.

वायु से चालित पानी का पम्प



२१.

हवाई अड्डा



२२.

चौपहलू बुर्जी वाला गिर्जा



१०८

क्रम संख्या

नाम

राष्ट्रीय छात्र सेना शिक्षा

चिन्ह

२३.

दो बुर्जी वाला गिर्जा



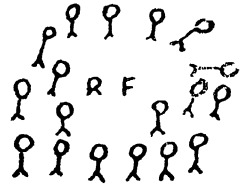
२४.

मखरती शकल का बुर्जी वाला गिर्जा



२५.

सुरक्षित वन



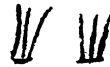
२६.

घास



२७.

बाँस



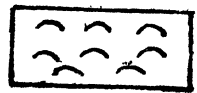
२८.

मील का पत्थर



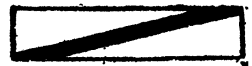
२९.

कब्रिस्तान

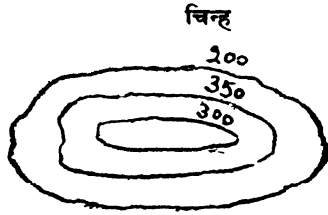


३०.

नहर



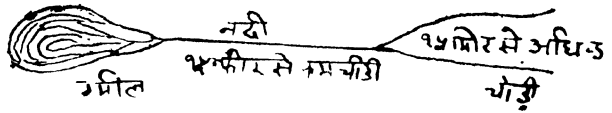
३१ कन्दूर



३२. ट्रिगोमैट्रिकल
ज्वाइण्ट



३३. नदी व भील



३४ सुरंग



३५ विंध



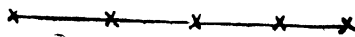
३६. काट



३७. निर्धारित अन्त-
राष्ट्रीय सीमा

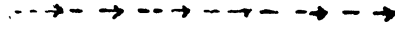


३८. असीमांकित
अन्त राष्ट्रीय
सीमा

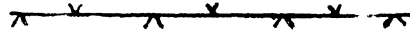


क्रम संख्या

नाम

३६. पानी के पाइप
का सिलसिला

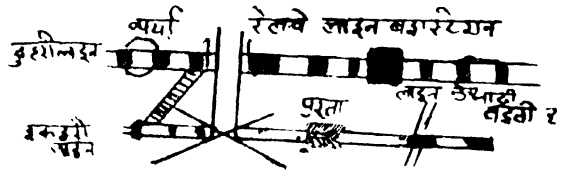
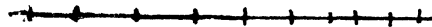
४०. बिजली के तार



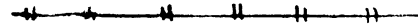
४१. टेलीग्राफ लाइन

४२. त्रिकोनी पत्ती
और पतभण्ड के
वृक्ष

४३. बड़ी रेल लाइन

४४. छोटी रेल लाइन
इकहरी लाइन

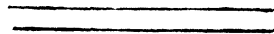
दोहरी लाइन



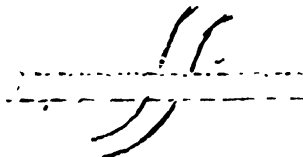
४५. ट्राम मार्ग



४६. पक्की सड़क



४७. कच्ची सड़क



४८. पगडंडी



सांकेतिक चिह्न
क्रम संख्या

नाम

चिह्न

४९. बैलगाड़ी का रास्ता



५०. ऊंटी मार्ग



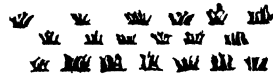
५१. खाई मोर्चा



५२. काँटेदार तार



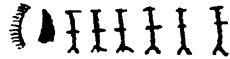
५३. दलदल



५४. सडक में रुकावट



५४. चाँदमारी



५६. स्पार्ट हाइट

• १४०)



या



५७. पठार की कान या धांग



५८. कृषि क्षेत्र



५९. रक्षा केन्द्र

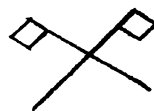
११२
क्रम सं०

नाम

राष्ट्रीय छात्र सेना शिक्षा
चिन्ह

६०.

संकेत स्टेशन



६१.

भिन्न प्रकार के हेड क्वाटर्स



६२.

पैदल फौज रुकी हुई या रूट कालम



६३.

मशीनगन प्लैटून या ट्रप



६४.

मशीनगन पोजीशन (१)
(केब्रेलरी के लिए भी) (२)



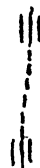
६५.

तोपखाना पोजीशन में



६६.

तोपखाना रूट कालम में चलता हुआ



६७.

केब्रेलरी



क्रम संख्या

नाम

चिह्न

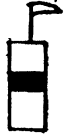
६८.

टैंक



६९.

ग्रामर्डकोर



७०.

गैम लगा हथ्था इलाका



७१.

गोले गिरने का इलाका



७२.

प्रवलोकन चौकी



७३.

एन्टी टैंक गन



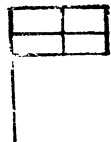
७४.

एम० एम० जी०



७५.

बटालियन हैड क्वार्टर



११४

राष्ट्रीय छात्र सेना शिक्षा

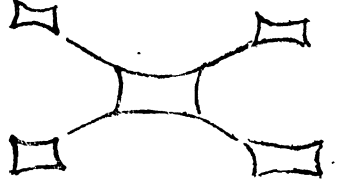
क्रम संख्या

नाम

चिन्ह

७६.

माइन फील्डस



धरातल के आकारों का मानचित्र पर प्रदर्शन

मानचित्र के अध्ययन में धरातल का विचार भी एक विशेष महत्व रखता है मानचित्र को देखने से किसी स्थान की ऊँचाई, नीचाई, ढाल, घाटी, भील आदि का सुगमता से पता चल जाता है। मानचित्र के सपाट तथा चपटा होने के कारण धरातल की सभी प्रकार की आकृतियों को दिखाना बहुत कठिन होता है। धरातल की आकृतियों को मानचित्र पर अनेक रीतियों द्वारा प्रकट किया जाता है।

१. समोच्च रेखाओं द्वारा (कन्टूर लाइन)
२. हैश्योर रेखाओं द्वारा
३. खण्ड रेखाओं द्वारा
४. पर्वतीय छाया चित्रण द्वारा
५. रंग द्वारा
६. स्थानीय ऊँचाई द्वारा

१. **समोच्च रेखाएँ**—धरातल की उपरोक्त विधियों में सेना समोच्च रेखा विधि को अधिक प्रयोग में लाती है। ये रेखायें मानचित्र पर लाल या नारंगी रंग की उन स्थानों से जो समुद्र तल से समान ऊँचाई पर हो, होकर जाती है। कन्टूर का शाब्दिक अर्थ आकृति है। कन्टूर की आकृति देखकर पृथ्वी तल का ज्ञान हो जाता है। इन रेखाओं के सामने उसी रंग में, जिसमें रेखा होती है, उस रेखा की समुद्र तल से ऊँचाई लिखी होती है। यदि कन्टूर रेखाएँ परस्पर खींची गई हो तो उसमें पहाड़ी इत्यादि अधिक ढलवाँ होती है। यदि रेखाएँ दूरी पर हों तो हल्के ढलान का ज्ञान होता है।

ढलाव—पृथ्वी तल पर ढाल कई प्रकार का होता है जिनका ज्ञान होना अति आवश्यक है।

१. **समान ढाल**—इन ढालों में समोच्च रेखाएँ लगभग समान दूरी पर होती है।
२. **विषम ढाल**—इस ढाल की आकार रेखा कहीं तो समीप तथा कहीं परस्पर दूर-दूर होती है।
३. **उभरा ढाल**—यह ऊपर से शनैः-शनैः प्रारम्भ होता है किन्तु जैसे-जैसे नीचे तल पर पहुँचता है वैसे अधिक ढालू होता जाता है। ये समोच्च रेखाएँ प्रारम्भ में समीप और पश्चात् दूर-दूर होती जाती हैं। या यों कहे कि यह ढाल बाहर की ओर निकला रहता है।

४. **नतोवर ढाल**—यह ढाल पर्वत की चोटी से तो एक दिशा में नीचे से आरम्भ

होता है किन्तु जसे-जसे नीचे की ओर आते हैं, यह धीमा पड़ता जाता है। तथा ढाल का कुछ भाग अन्दर की ओर धनुषकार होता है। इसमें समोच्च रेखाएं प्रारम्भ में दूर-दूर तथा बाद में पास-पास होती जाती है।

५. **चट्टानी ढाल**—मानचित्र में आकार रेखाएं एक ओर पास-पास भुकी होती है। जिससे प्रतीत होता है कि उस ओर ढाल अधिक है दूसरी ओर आकार रेखाएँ दूर-दूर खिंची होती है।

६. **सीढ़ीदार ढाल**—इस ढाल में जब समोच्च रेखाएं जोड़ों के मध्य में प्रदर्शित की जाएँ और एक जोड़ से दूसरे जोड़ के मध्य में अधिक दूरी प्रदर्शित हो, यह देखने में सीढ़ी सी प्रतीत होती है।

७. **हैश्वोरिंग**—यह पर्वतों को शेड करके प्रदर्शित करने का एक नियम है। जिसमें छोटी-छोटी पतली रेखाएं ढाल दिखाने के लिए खींची जाती है जिस ओर भ्रान्तल पर पानी बहेगा। तेज ढाल को दिखाने के निमित्त यह रेखाएं गहरी और अधिक पास-पास खींची जाती हैं। धीमें ढालों के लिए हैश्वोर रेखाएँ पतली और दूर दूर खींची जाती हैं।

८. **खंडित रेखाएं**—यह समोच्च रेखाओं से मिलती जुलती प्रणाली है। असम्भव सर्वे कार्य में खंड रेखाओं का प्रयोग किया जाता है। ये रेखाएँ केवल तल की ऊंचाई बताती है भूमि के अन्तर को प्रकट नहीं करती, केवल इनके द्वारा भूमि का उभार विभिन्न प्रकार की आकृतियों द्वारा अनुमान लगाया जाता है।

९. **पर्वतीय छाया चित्रण**—इस विधि में मानचित्र पर भूभागों की काले तथा सफेद रंग आभा में भिन्न-भिन्न ऊंचाई दिखाई जाती है। पर्वतीय भागों को सघन आभा द्वारा एवं समतल भूमि, घाटी, तलहटी पठार तथा पठारी शिखर को हल्की आभा द्वारा प्रदर्शित करते हैं। आभाएँ छोटे बिन्दुओं द्वारा प्रकट की जाती हैं। डमकी सहायता से पर्वतों की स्थिति का भली प्रकार अध्ययन हो जाता है।

१०. **रंगों द्वारा**—समोच्च रेखाओं के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार के काले सफेद रंगों के शेडिंग द्वारा ऊंचाई एवं निचाई प्रदर्शित की जाती है। रंगों में नीला रंग समुद्र, हरा मैदान, भूरा ऊंची भूमि और पर्वत तथा सफेद रंग बर्फ से ढके पर्वतों को प्रकट करता है इनके सहयोग से ऊंचाई तथा बनावट का ठीक ठीक पता नहीं चल सकता।

११. **स्थानीय ऊंचाई**—मानचित्र पर साधारण तथा पहाड़ की चोटी या किसी सड़क के सबसे ऊंचे भाग पर काले बिन्दु लगे होते हैं इनके समीप ही अंक लिखे होते हैं इन्हीं को स्थानीय ऊंचाई कहते हैं। बिन्दु के समीप लिखे अंकों से समुद्र तल से वास्तविक ऊंचाई का पता चलता है।

दिशाओं का ज्ञान

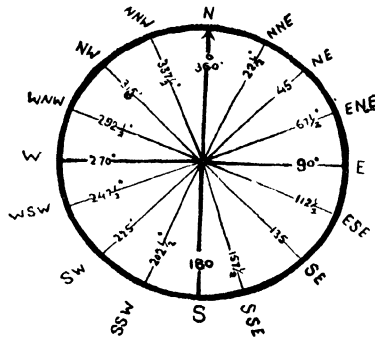
पृथ्वी पर भौगोलिक उत्तर वह बिन्दु है जो उत्तरी ध्रुव क्षेत्र में ध्रुव तारे के ठीक नीचे स्थित है। यह बिन्दु पृथ्वी की धुरी का अन्तिम बिन्दु है इसके विपरीत दूसरा बिन्दु दक्षिण तथा इससे समकोण बनाती हुई दिशाएँ पूर्व तथा पश्चिम है।

मुख्य दिशाएँ चार हैं—

१. उत्तर = 0° या 360°
२. दक्षिण = 180°
३. पूर्व = 90°
४. पश्चिम = 270°

इनमें सबसे बड़ी दिशा उत्तर को माना जाता है। छोटी दिशाएँ बहुत हैं लेकिन चार आवश्यक हैं।

१. उत्तर एवं पूर्व के मध्य = उत्तर पूर्व = 45°
२. उत्तर एवं पश्चिम के मध्य = उत्तर पश्चिम = 315°
३. दक्षिण और पूर्व के मध्य = दक्षिण पूर्व = 135°
४. दक्षिण और पश्चिम के मध्य = दक्षिण पश्चिम = 225°



दिशा ज्ञान के साधन

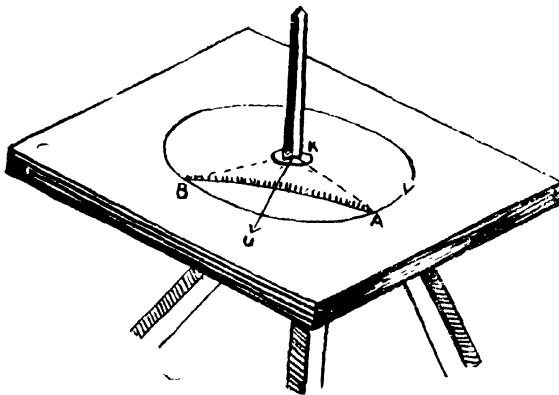
१. सूर्य से—सूर्य सदैव पूर्व से निकलता है और पश्चिम में अस्त होता है।
२. मस्जिद से—भारत में मुसलमानों की मस्जिद का महराब पश्चिम की ओर होता है।

३. कब्रिस्तान से—अक्सर मुस्लिमान लोग उत्तर की ओर कब्र पर बड़ा पत्थर लगाते हैं ।

उपरोक्त साधनों के अतिरिक्त दिशा ज्ञात करने के अन्य साधन भी हैं जिनसे वास्तविक दिशा ज्ञात करने में सुगमता रहती है ।

१. कम्पास से—कम्पास की सुई सदैव उत्तर की ओर रहती है यदि मैग्नेटिक बेरियेशन निकाल दें तो ठीक उत्तर दिशा ज्ञात हो जायगी ।

२. घड़ी और सूर्य के सहयोग से—घड़ी को पृथ्वी पर इस प्रकार रखो कि घंटे की सुई सूर्य की ओर हो । अगर आप उत्तरी गोलार्द्ध में हैं । तो घंटे की सुई और १२ के अंक की दिशा दक्षिण दिशा होगी । और अगर दक्षिण गोलार्द्ध में हैं तो १२ के अंक को सूर्य की ओर करें अब घंटे वाली सुई और १२ के अंक के मध्य की दिशा ठीक उत्तर को प्रकट करती है यह विधि भूमध्य रेखा से दूर ठीक होगी ।



३. सूर्य के सहयोग से—एक पैसे पर थोड़ा मोम या लाख लगाकर एक पेन्सिल को उसके ऊपर सीधा खड़ा करो । एक तख्ते पर कागज लगाओ और इस नुकीली चीज को उस पर रखो । इस पैसे की ग्रिड रेखा खींचो और इस वृत्त का केन्द्र लगादो । चित्र में "R" पेन्सिल का केन्द्र है । मान लिया प्रातः ०९.०० बजे पेन्सिल का छाया "A" पर था । "AR" को मिला दिया और "RA" अर्ध व्यास मानकर "R" केन्द्र से "U" वृत्त खींच दिया । ज्यों-ज्यों समय अधिक होता जायगा साया फिर ऊपर चढ़ना प्रारम्भ हो जायगा । कोई १५.०० बजे देखा तो साया "B" चिह्न पर इस वृत्त को फिर छुटा हुआ मिला । "BR" को मिला दिया । "ARB" कोण को "RU" रेखा से दो भागों में बाँट दिया ।

यदि आप उत्तरी गोलाद्ध में है तो “RU” रेखा ठीक उत्तर को प्रकट करेगी और अगर दक्षिणी गोलाद्ध में है तो ठीक दक्षिण दिशा को प्रकट करेगी। यह विधि भूमध्य रेखा के समीप अच्छी रहेगी। इसको धूप घड़ी कहते हैं।

४. तारों की सहायता से—ध्रुव तारा उत्तरी ध्रुव के ऊपर रहता है और बहुत ही (२° के अन्दर) घूमता रहता है। ध्रुव तारा सदैव आकाश में एक तारो के समूह से सम्बन्धित होता है। तारों के इस समूह को सप्तऋषि मंडल भी कहते हैं। सप्तऋषि मंडल के सिरे पर हमें दो तारे दिखाई देते हैं जिन्हें सकेत कहते हैं ये ध्रुव तारे की सीध में होते हैं। इन दो तारों को मिलाती रेखा बढ़ाने से ध्रुव तारे को छूती है।

ध्रुव तारे के विरुद्ध आकाश में एक और तारा समूह होता है इसे कैसियोपिया कहते हैं। इसका सीधा सम्बन्ध ध्रुव तारे से होता है। सौर परिवार में और अनेकों विधियों से उत्तर दिशा का ज्ञान किया जा सकता है।

५. मार्ग शीर्षा द्वारा—उस समय जबकि ध्रुव तारा दिखाई नहीं देता तब दिशा का ज्ञान मार्ग शीर्षा नामक तारा मण्डल से करते हैं इस तारा मण्डल के दो भाग होते हैं।

१. पेटी के आकार का

२. तलवार के आकार का

यह दोनों भाग तलवार और पेटी की तरह दिखाई देते हैं। तलवार वाला भाग दक्षिण दिशा बतलाता है।

६. मान चित्र द्वारा—यदि किसी भूभाग का सही मान चित्र हमारे पास हो तथा क्षेत्र का उचित उत्तर ज्ञात करना चाहे तो उस मान चित्र पर किन्हीं दो या तीन चिह्नों को चुन लेते हैं जो पृथ्वी पर भी हो तथा फिर मान चित्र को इस प्रकार से रक्खें कि मान चित्र के वही चिह्न पृथ्वी के चिह्नों की सीध में आ जाय। यह विधि नक्शा दिशानुकूल करना भी कहलाती है अब मान चित्र की उत्तर दक्षिण बताने वाली रेखा उत्तर दिशा की स्थिति में होगी।

उत्तर दिशा—उत्तर तीन प्रकार की है।

१. वास्तविक उत्तर

२. प्रिड उत्तर

३. चुम्बकीय उत्तर

वास्तविक उत्तर—वह दिशा जो उत्तरी ध्रुव को प्रकट करती है मान चित्र के किनारे पर नीचे से ऊपर खींची हुई रेखा ठीक उत्तर या वास्तविक उत्तर को बतलाती है।

ग्रिड उत्तर—चित्र के उत्तर यानी चित्र पर समचतुर्भुज बनाने वाली वह रेखाएं जो नीचे से ऊपर की ओर खींची गई है ग्रिड उत्तर को प्रगट करती है। ग्रिड उत्तर और वास्तविक उत्तर में अन्तर होता है क्योंकि वास्तविक उत्तर की रेखाएं दोनों ध्रुवों के पास मिल जाती है लेकिन ग्रिड उत्तर की रेखाएं समानान्तर होती है।

चुम्बकीय उत्तर—चुम्बकीय उत्तर भिन्न होता है। यदि किसी चुम्बकीय सुई को धागो में लटका दिया जाय तो कुछ समय घूमने के बाद वह स्थिर हो जायगी। इस स्थिर अवस्था में सुई की नोक वास्तविक उत्तर की ओर जिस दिशा में होगी उसे चुम्बकीय उत्तर कहते हैं। कम्पास को प्रयोग करते समय यह आवश्यक है कि उसके पास कोई ऐसी वस्तु न हो जो उसकी सुई को अपनी ओर खींच ले और उसे असली रुख की तरफ न आने दें।

चुम्बकीय उत्तर का स्थान शनैः शनैः बदला करता है यही कारण है कि वास्तविक उत्तर और चुम्बकीय उत्तर का अन्तर प्रत्येक स्थान पर भिन्न होता है। इसमें भी चुम्बकीय ध्रुव के अनुसार अधिकता तथा न्यूनता हुआ करती है।

दिक्मान (बियरिंग)—उत्तर-दक्षिण रेखा तथा किन्हीं दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा से बने कोण को बियरिंग कहते हैं। अथवा जो कोण किसी नियत स्थान से दूसरे नियत स्थान तक घड़ी की सुइयों की चाल के रुख नापी जाय।

दिक्मान दो होते हैं—

१. सामने का दिक्मान (फारवर्ड बियरिंग)
२. पीछे का दिक्मान (बैक बियरिंग)

सामने का दिक्मान—एक स्थान से दूसरे स्थान के सामने की ओर ली हुई बियरिंग, फारवर्ड बियरिंग कहलाती है।

इसके विपरीत दूर वाली जगह से अपनी जगह के बियरिंग को बैक बियरिंग कहते हैं। वास्तविक उत्तर से लिये हुए बियरिंग को वास्तविक बियरिंग कहेंगे और इसी प्रकार मेगनेटिक उत्तर से लिए हुए बियरिंग को चुम्बकीय बियरिंग तथा ग्रिड उत्तर से लिए हुए बियरिंग को ग्रिड बियरिंग कहा जाता है। एक अत्र में ६० मिनट होते हैं और एक मिनट में ६० सैकण्ड होते हैं। बियरिंग मान चित्र पर सविस प्रोट्रेक्टर से और भूमि पर पेरिसमैटिक कम्पास से पढ़े जाते हैं।

सैनिक प्रोट्रेक्टर—मान चित्र पर बियरिंग नापने या निश्चित कोण खींचने के लिए प्रोट्रेक्टर की आवश्यकता होती है। प्रोट्रेक्टर एक प्रकार का यन्त्र होता है जो कोण नापने के काम आता है यह तीन प्रकार का होता है।

१. वृत्ताकार प्रोट्रेक्टर
२. अर्ध वृत्ताकार प्रोट्रेक्टर
३. आयताकार या सर्बिस प्रोट्रेक्टर

त्रिपाश्वीय दिक् सूचक (पैरिसमैटिक कम्पास)—यह घड़ी की भांति का एक यन्त्र होता है। पैरिसमैटिक कम्पास निशानों के बियरिंग पढ़ने और मान चित्र ठीक करने के काम आता है। कम्पास की सहायता से रात्री मार्च भी किए जाते हैं यह पाँच प्रकार के होते हैं।

१. त्रिपाश्वीय दिक् सूचक (पैरिस मैटिक कम्पास)
 २. आयल दिक् सूचक (आयल कम्पास)
 ३. आयल त्रिपाश्वीय दिक् सूचक (आयल पैरिस मैटिक कम्पास)
 ४. बुडन दिक् सूचक (बुडन कम्पास)
 ५. वाच दिक् सूचक (वाच कम्पास)
- बुडन एवं वाच दिक् सूचक आजकल काम में नहीं आते हैं।

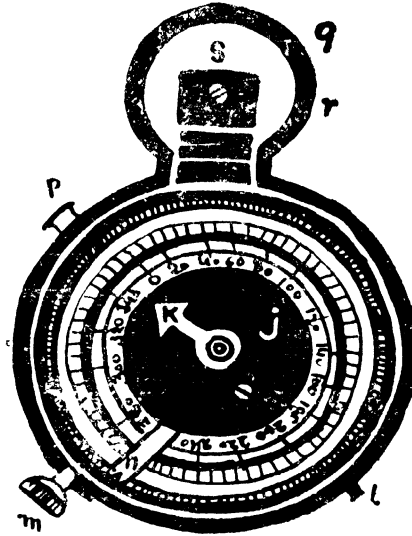
त्रिपाश्वीय दिक् सूचक—(रेरी मैसटिक कम्पास) इस यन्त्र के तीन प्रमुख भाग होते हैं।

१. डक्कन (लिड)
२. डांचा (बोडी)
३. प्रिज्म बॉक्स

कम्पास के प्रमुख पुर्जे

१. तोच
२. क्लैम्पिङ्ग स्क्रियु
३. प्रिज्म
४. चैकिंग स्क्रियु
५. रिंग
६. नेल क्लिप
७. कैपक्लिप
८. डक्कन (लिड)
९. विन्डो
१०. हेयर लाइन
११. डायल या कार्ड
१२. बॉक्स
१३. एरो हेड

१४. डायरेक्शन मार्क
१५. स्टाप
१६. प्रिज्म ढक्कन



कम्पास

मान चित्र दिशानुकूल करना—मान चित्र की सहायता से भू भाग का ज्ञान सुगमता से हो जाता है। भूमि पर खड़े हुए निरीक्षक के निमित्त यह आवश्यक है कि जहाँ वह खड़ा है उस स्थल के मान चित्र पर अपनी स्थिति निर्धारित कर सके। अतः इसी उद्देश्य से मान चित्र को दिशानुकूल किया जाता है।

मान चित्र स्थिति वह दशा होती है जिसमें मान चित्र का उत्तर भूमि धरातल के ऊपर की ओर ठीक संकेत करे। ऐसी स्थिति में पृथ्वी पर शेष तीन दिशाएँ भी मान चित्र की दिशाओं की ओर होती हैं। प्रयोग में आने वाली निम्न प्रमुख विधियाँ हैं।

१. दिक् सूचक की सहायता से (कम्पास से)
२. सूर्य की सहायता से
३. पृथ्वी के मुख्य चिह्नों से।

मान चित्र पर अपनी स्थिति ज्ञात करना—मान चित्र पर पृथ्वी के बड़े चिह्नों को पहचान कर और परस्पर तुलना करके अपनी स्थिति जानी जा सकती है। बड़े

चिह्न जैसे—पर्वत, नदी, सड़क, गांव, शहर आदि और छोटे चिन्ह जैसे—मकान, कच्चे रास्ते, नदियों के मोड़ आदि को देखकर अपनी स्थिति का ठीक पता लगा सकते हैं। साधारणतया निम्नविधियों को प्रयोग में लाते हैं।

१. सम पार्श्वीय दिक् सूचक उपलब्ध हो (कम्पास से)
२. सम पार्श्वीय दिक् सूचक उपलब्ध न हो (कम्पास के बिना)

कम्पास से—ऐसे तीन चिन्हों का वियरिंग पढ़ो जो मान चित्र पर भी हो। बियरिंग को ग्रिड बियरिंग में परिवर्तित कर दो और फिर पीछे का बियरिंग ज्ञात करो। अब मान चित्र पर सर्विस प्रोट्रेक्टर से यह तीन ग्रिड बैक बियरिंग अपने चिन्ह से प्लोट करो और अन्दर की ओर रेखा खींचो जहाँ पर यह तीनों रेखाएँ एक स्थान पर मिलेंगी वह आपकी स्थिति होगी। स्थिति का ज्ञान दो चिन्हों से भी किया जा सकता है लेकिन गलती होने का सन्देह रहता है यदि तीन चिन्हों से अन्दर की ओर खींची गई रेखाएँ एक बिन्दु पर काटती हैं तो स्थिति बिल्कुल ठीक होगी।

कम्पास के बिना—कम्पास के उपलब्ध न होने पर कुछ पिनो का उपयोग किया जाता है। मानचित्र को खोलकर सामने रख लेंगे इसके पश्चात् पृथ्वी पर दो वस्तुएँ चुन लेंगे और उन्हें मानचित्र पर भी ज्ञात कर लेंगे। एक पिन लेकर मानचित्र पर इस प्रकार लगायेंगे कि पहली वस्तु (पृथ्वी पर) वही वस्तु (मानचित्र पर) और यह पिन तीनों ही एक सीधी रेखा में आ जायें वही क्रिया दूसरी वस्तु के साथ भी करेंगे। इन वस्तुओं को मिलाने वाली रेखाएँ खिंचेंगे जिस बिन्दु पर यह दोनों रेखाएँ एक दूसरे को काटेगी, वही बिन्दु मानचित्र पर अपनी स्थिति होगी !

: ६ :

हवाई हमले से रक्षा

किसी भी देश की शक्ति सेना, बम या अन्य भयकर हथियार नहीं अपितु देश की जनता का संगठन है। लड़ाई के मोर्चों के अतिरिक्त अन्य मोर्चों (जन सुरक्षा) आदि पर विजय प्राप्त कर संगठित जनता सैनिकों को शक्ति प्रदान करती है। पूर्व वर्षों में यह तथ्य उभर कर सामने आया है। १९६२ में चीन के आक्रमण एवं १९६५ में पाकिस्तान के आक्रमण पर देश का बच्चा-बच्चा आक्रमणकारियों से लड़ने के लिए उठ खड़ा हुआ था। इसी जनशक्ति के परिणाम स्वरूप पहले चीन एवं बाद में पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी।

जन-सुरक्षा प्रमुख रूप से नागरिकों का अपना कार्य है। इसके अन्तर्गत ऐसे उपाय किए जाते हैं जिनसे शत्रु द्वारा की जा सकने वाली जान और माल की हानि को रोका और कम से कम किया जा सके। यह प्रयास किया जाता है कि शत्रु के आक्रमण के बाद आवश्यक सेवाएँ, उत्पादन इकाइयों तथा जनजीवन के अन्य कार्य सामान्य स्थिति में आ जायें और प्रत्येक कार्य बिना किसी प्रकार की बाधा के चालू हो सके।

इसी प्रसंग में नागरिकों को हवाई हमले से बचाव का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। आजकल के युद्धों का क्षेत्र सीमित नहीं है और किसी भी क्षण शत्रु के विमान राडार की आँखों से बचकर अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयास कर सकते हैं। अतः हवाई हमले से रक्षा के लिए प्रत्येक नागरिक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

१ :—परिवार के प्रत्येक सदस्य को “खतरे और खतरा समाप्त हो जाने के” संकेतों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। स्मरण रखिये कि दो मिनट तक उतार-चढ़ाव की ध्वनि करने वाला भौंपू खतरे का सूचक है तथा एक ही स्वर में दो मिनट तक आने वाली भौंपू की आवाज़ खतरा समाप्ति का सूचक है !

२ :—हवाई हमले से बचाव के लिए ऐसी खाईया खोद लेनी चाहिए जो ८ से ६ फीट लम्बी २ फीट चौड़ी एवं ४ फीट गहरी हों ! खाई खोदते समय यह ध्यान रखें कि खाई मकान की ऊँचाई से लगभग आधे भाग से दूर हो !

३ :—दरवाजों एवं खिड़कियों की रक्षा के लिए या तो ईंटों की पक्की दिवारें खड़ी कर लें या बोरियो में रेत भरकर उन्हें खिड़कियों एवं दरवाजों के

सामने लगा दें। यह प्रबन्ध नीचे की मंजिल में आवश्यक है। भरी जाने वाली मिट्टी अथवा रेत सूखी होनी चाहिए। बोरियो को तीन चौथाई भरकर उनका मुँह बन्द कर दिया जाए अथवा केवल आधी बोरी भरकर शेष आधा भाग बोरी के नीचे दबा दिया जाना चाहिए।

हमले की चेतावनी पर

हवाई हमले की चेतावनी सुनते ही खुले में होकर निम्नलिखित कार्य करने चाहिए :—

१. जमीन पर या पास में जहाँ नीची जगह हो, वहाँ मुँह नीचे करके सीने के बल लेट जाना चाहिए !
२. लेटते समय सीना कुहनियों पर टिका होना चाहिए और जमीन से थोड़ा ऊँचा होना चाहिए।
३. कानों में रूई या कपड़ा दूंस लेना चाहिए।
४. दाँतों के बीच में लपेटा हुआ कपड़ा दबा लेना चाहिए।
५. यदि समय नहीं है तो आश्रय के लिए भागना नहीं चाहिए।
६. जब तक खतरा दूर होने का संकेत न मिले, ऊपर बिल्कुल नहीं देखना चाहिए।

यदि किसी इमारत के पास हों तो

१. समय हो तो दौड़कर पास की इमारत में घुस जाना चाहिए अन्यथा वैसे ही करना चाहिए जैसा कि खुले में होने पर किया जाता है।
 २. सड़क से परे हो जाना चाहिए।
 ३. कभी भी दीवार के सहारे झुकना नहीं चाहिए।
 ४. बाहरी दीवार के पास न रहें। किसी भीतरी दीवार के साथ लगकर खड़े हो जाना चाहिए। सम्भव हो तो दो दीवारों के कोने में खड़े हो जाना चाहिए।
 ५. दरवाज़े या खिड़की की सीध में नहीं रहना चाहिए।
 ६. दरवाज़ों और खिड़कियों के शीशे आदि खुले बिल्कुल नहीं होने चाहिए। उनको कागज आदि से ढक लेना चाहिए।
- बस या कार से उतर कर वैसे ही करना चाहिए जैसा कि खुले में होने पर करते हैं। सिनेमा घर में होने पर अपनी सीटों पर बैठा रहना चाहिए। भागने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

हवाई हमले में बचाव कार्य

हवाई हमला होने पर बचाव कार्यों को बड़ी सतर्कता एवं सावधानी से करना

चाहिए। तनिक-सी असावधानी से लाभ के स्थान पर हानि अधिक हो सकती है। अतः निम्न बातों का ध्यान रखना परमावश्यक है—

१. बिल्कुल शान्त रहें।
२. बचाव कार्य प्रारम्भ करने से पहले ऊपर-नीचे तथा आगे पीछे अच्छी प्रकार देखभाल कर लें।
३. यदि आप क्षतिग्रस्त गीदियों पर हैं तो जितना हो सके दीवार के साथ-साथ रहिए।
४. घायल व्यक्ति के आस-पास से मलवा हटाते समय बहुत सावधानी रखें।
५. आहत को, गिरने वाले मलवे या धूल से बचाने के लिए लोहे की चद्दरों, तिरपाल आदि का प्रयोग करें।
६. ऐसे व्यक्ति के मुँह और नाक में से धूल, रेत आदि निकाल दीजिए।
७. घायल व्यक्ति को धैर्य बंधाइये यदि चोट गंभीर नहीं है तो घर ले जाकर लिटा दीजिए।
८. घायल व्यक्ति के कपड़े ढीले कर दीजिए। उसे लेटा रहने दीजिए और गर्म रखिए।
९. आवश्यक हो तो घायल व्यक्ति को कृत्रिम ढंग से सांस दिलवाइये। खून बह रहा हो तो उसे रोकने का प्रबन्ध करें।
१०. आहत के लिए उचित डाक्टरी सहायता प्राप्त करने के वास्ते फौरन पास की प्राथमिक चिकित्सा चौकी से सम्पर्क स्थापित करें।

निम्नलिखित कार्य न करें

१. किसी भी परिस्थिति में घबरायें नहीं।
२. ढेर या मलवे में से लकड़ी आदि एकदम या अन्धाधुन्ध न निकालें, अन्यथा और नुकसान हो सकता है।
३. बिजली के खुले तार को न छुएँ।
४. मलवे पर या क्षतिग्रस्त ढाँचे के किसी भाग पर रेंग कर न चले जब तक कि परिस्थितिबश अति आवश्यक न हो।

हवाई हमले से शत्रु भयानक जैसे एटमबम तथा आग लगाने वाले “नैपाम” बम आदि का प्रयोग करने में भी नहीं चूकता है। पिछले भारत-पाक संघर्ष में पाकिस्तान ने “नैपाम” बमों का खुलकर प्रयोग किया है। अतः आग पर काबू पा की विधियों से जानकार होना परमावश्यक है।

आग लगने पर क्या किया जाए

१. आग को स्वयं बुझाने का प्रयत्न करें। लेकिन यदि आप उसमें सफ

